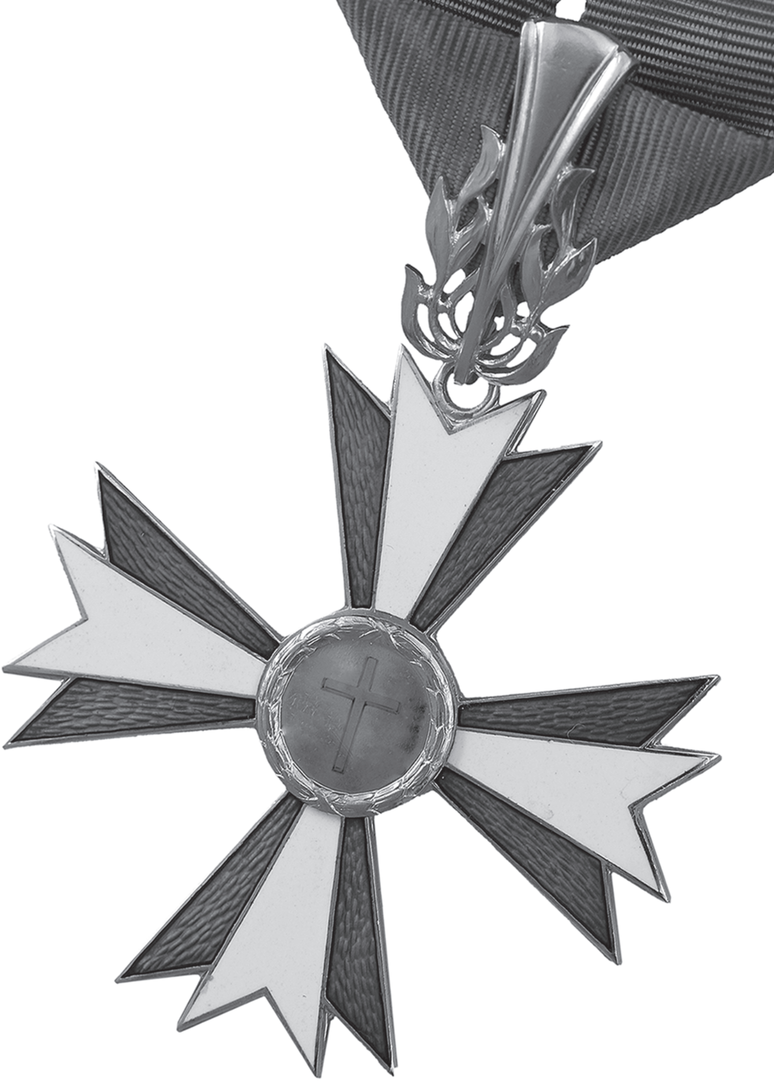

आदर संहिता

मसीही सेवकाई में कार्यरत स्त्री और पुरुषों के लिए आचारनीति, व्यक्तिगत मानदण्ड और व्यवहारिक ज्ञान

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा जबतक इंगित न किया हो धर्म शास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल के पुनःसंपादित पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित है।

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन
उपदेशः apcwo.org/sermons | **पुस्तकें:** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेजः apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्शः chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिपः pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - Code of Honor)

आदर संहिता

मसीही सेवकाई में कार्यरत स्त्री और पुरुषों के लिए आचारनीति,
व्यक्तिगत मानदण्ड और व्यवहारिक ज्ञान

आभार

मैंने तेरह वर्ष की उम्र से प्रचार करना आरंभ किया। जब मैं बड़ा हो रहा था, तब केवल परमेश्वर के साथ चलते हुए मुझे मसीही जीवन और सेवकाई के विषय में कई बातें सीखनी पड़ी। इसके अलावा, मैंने छोटी उम्र में अच्छे मसीही पुस्तकों को पढ़ने की आदत लगा ली थी। परमेश्वर के कई सेवकों के प्रचार और शिक्षा को सुनने और लोग, कलीसियाओं, सेवकाइयों का अवलोकन करने के साथ साथ, ये पुस्तकें भी सेवकाई के लिए एक विस्तृत प्रशिक्षण केंद्र बन गईं। उस छोटी शुरूवात के बाद, तीस वर्ष हो चुके हैं और मैं आज भी सीख रहा हूं। मैं जानता हूं कि मैं परमेश्वर के सेवकों का कर्ज़दार हूं जिनके द्वारा मेरी परवरिश हुई, भले ही अप्रत्यक्ष रूप से–उनकी पुस्तकों को पढ़कर, उनके उपदेशों को सुनकर, और दूर से उनके जीवनों का अवलोकन कर। भले ही स्वर्ग के इस पार मैं शायद व्यक्तिगत् तौर पर उनसे कभी न मिल पाऊं, फिर भी मेरा हृदय हमेशा उनके प्रति धन्यवाद से भरा रहेगा। जो कुछ भी इस पुस्तक में बताया गया है, वह परमेश्वर के साथ मेरी व्यक्तिगत् यात्रा और परमेश्वर के कई सेवकों के द्वारा जो कुछ मैंने सीखा है, उसका संचित परिणाम है।

समर्पण

आज परमेश्वर समस्त संसार में जो कुछ कर रहा है, उसे देखना अत्यंत अद्‌भुत बात है। वह पवित्र आत्मा की सामर्थ से अभिषेक प्राप्त, उसके वचन के प्रकाशन ज्ञान से परिपूर्ण कई जवान स्त्री और पुरुषों को खड़ा कर रहा है और उन्हें समाज, शहरों, और राष्ट्रों को प्रभावित करने हेतु भेज रहा है। सर्वत्र एक अत्यावश्यकता का बोध, आत्मा का गतिमान कार्य जारी होते हुए दिखाई दे रहा है। पिछली पीढ़ी को जिन बातों को सीखने में, समझने और अनुभव करने में बहुत समय लगा, उन बातों में आज मसीही जवान लोग तुरंत और आसानी से कदम रख रहे हैं। परंतु इसी के साथ साथ ईश्वरीय बुद्धि और व्यवहारिक सलाह को दूसरों तक पहुंचाने की ज़रूरत उत्पन्न हुई है, ताकि जो खड़े हो रहे हैं, उन गलतियों को न दोहराएं जो पिछली पीढ़ियों ने की। यह पुस्तक मसीही सेवकाई में कार्यरत्‌ आने वाली और नई पीढ़ी के पुरुष और स्त्रियों को समर्पित की जाती है। आपके जीवन और सेवकाइयां उन दुखों, लज्जा, विलम्बों और घुमावदार मार्गों के बिना जिन्हें पिछली पीढ़ियों ने अनुभव किया, सफल हों और उसके राज्य के लिए बहुत फल लाएं।

ए.पी.सी. टीम का धन्यवाद!

मैं मेरी टीम के सदस्यों, ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर में और हमारी आऊट रीय कलीसियाओं में सेवारत् पासबानों, सेवा अगुवों, स्वयंसेवकों की टीमों की विशेष सराहना करना चाहूंगा। आप सभों के साथ मिलकर परमेश्वर के राज्य में काम करना और परिश्रम करना विशेष सौभाग्य की बात है। ऐसे लोगों के मध्य रहना आनन्द की बात है जो परमेश्वर से निरंतर कुछ पाने के लिए भूखे हैं, जो कुछ भी उनके पास है उसके साथ वे परमेश्वर की बातों में और आगे बढ़ रहे हैं, वे परमेश्वर के राज्य के लिए सौ प्रतिशत देते हैं, जो उत्तमता, खराई, और शुद्धता का अनुसरण करते हैं। आप एक अद्भुत टीम हैं! आपकी टीम पर होने के इस अद्भुत अवसर के लिए आपका धन्यवाद!

विषयसूचि

परिचय

1. व्यक्तिगत् जीवन 1

2. परिवार 29

3. लोग 55

4. आचरण 97

5. प्रचार 113

6. अभिषेक 133

7. फल 143

8. संगति 153

9. पैसा 167

10. स्त्रियां 183

11. ख्याति 199

परिचय

प्रभु यीशु मसीह के सेवक होना रोमांचक, पुरस्कारदायक, फिर भी अत्यंत जोखिम भरी बात है। जीवन और सेवकाई में हमारे आचरण का मानक बहुत ऊंचा होना चाहिए। जिन मानकों में हम चलते हैं, वे आसान नहीं हैं। कुछ मामलों में परिणाम और उल्लंघन की प्रतिक्रिया न केवल हमारे लिए अत्यंत कठोर हो सकती है, बल्कि मसीह की देह के लिए भी—हज़ारों, और शायद लाखों लोगों के लिए जो हमारे जीवन और सेवकाई से प्रभावित हुए हैं। याकूब कहता है कि प्रभु भी चाहता है कि हम ऊंचे आदर्श रखें। *"हे मेरे भाइयो, तुममें से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे"* (याकूब 3:1)।

मैं जानता हूं कि अब तक की मेरी यात्रा में मैं सिद्ध नहीं रहा। मैं असफल हुआ, मैंने गलतियां की, मैं गिर गया, और मुझे खरोचें आईं। केवल परमेश्वर की दया और परमेश्वर के लोगों के सहारे से मैं आगे बढ़ता रहा हूं। समस्त विश्व की मसीह की मण्डली में क्या हो रहा है, यह जब मैं देखता हूं, तो परमेश्वर के स्त्री या पुरुष की असफलता, या गलती के विषय में सुनकर मेरा हृदय दुखी होता है। कुछ गलतियां मैंने की, और जिन्हें मैं दूसरों को करते हुए देखता हूं, उनके विषय में यदि हमें पहले से चेतावनी दी गई होती कि उन्हें कैसे रोका जाना चाहिए, तो उनसे बचा जा सकता था—यदि किसी ने कुछ ईश्वरीय सलाह दी होती, कुछ बुद्धिमानीपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया होता, तो हम परेशानी से बच सकते थे। वस्तुतः, पवित्र शास्त्र में परमेश्वर के सेवक के लिए कई ईश्वरीय निर्देश हैं जिन पर हमें ध्यान देने की ज़रूरत है। और यदि हम ऐसा करते हैं तो हम खुद को और उन हज़ारों लोगों को बचाएंगे जिन्हें हमने अपने जीवनों से स्पर्श किया है। इसी उद्देश्य से यह पुस्तक लिखी गई है—मेरी सहायता के लिए और परमेश्वर के सेवकों के रूप में हम सभों के लिए।

मैं जानता हूं कि आज परमेश्वर की कलीसिया में जबकि कई लोग परमेश्वर की सामर्थ के प्रगटन, अभिषेक, चिन्ह और चमत्कार और चंगाइयां, भविष्यात्मक और अलौकिक की खोज में हैं—ऐसे समय में जीवन और आचरण के ईश्वरीय मानकों के लिए बुलाहट अत्यंत प्रिय नहीं हो सकती। प्रचारकों और पासबानों को एक घण्टे में पुलपिट के पीछे जिन बातों को वे प्रगट कर सकते हैं, उनके लिए खोजा जाता है, न कि पुलपिट से अलग होकर जो जीवन वे बिताते हैं उनके लिए। यद्यपि पौलुस ने प्रचार किया और बड़े बड़े आश्चर्यकर्म किए—जिनका हम सभों को अनुसरण करना चाहिए, फिर भी उसने ऐसे वाक्यों से अपने लोगों को चुनौती दी, *"तुम मेरी सी चाल चलो, जैसा मैं मसीह की चाल चलता हूं"* (1 कुरिन्थियों 11:1)। उसने हमारा ध्यान न केवल उस बुद्धि और अभिषेक की ओर आकर्षित किया, बल्कि यह कहने का भी साहस किया कि: *"हे भाइयो, तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो, और उन्हें पहिचान रखो जो इस रीति पर चलते हैं जिसका उदाहरण तुम हम में पाते हो"* (फिलिप्पियों 3:17)। मसीह के सेवकों के रूप में हमारे लिए समय आ गया है कि *"भक्ति, और भय सहित परमेश्वर की ऐसी आराधना करें जिससे वह प्रसन्न होता है"* (इब्रानियों 12:28)। सेवा के आदर्शों को फिर स्थापित करें।

2 यूहन्ना 1:8
अपने विषय में चौकस रहो, कि जो परिश्रम हमने किया है, उसको गवाँ न दो; वरन् उसका पूरा प्रतिफल पाओ।

आशीष!
आशीष रायचुर

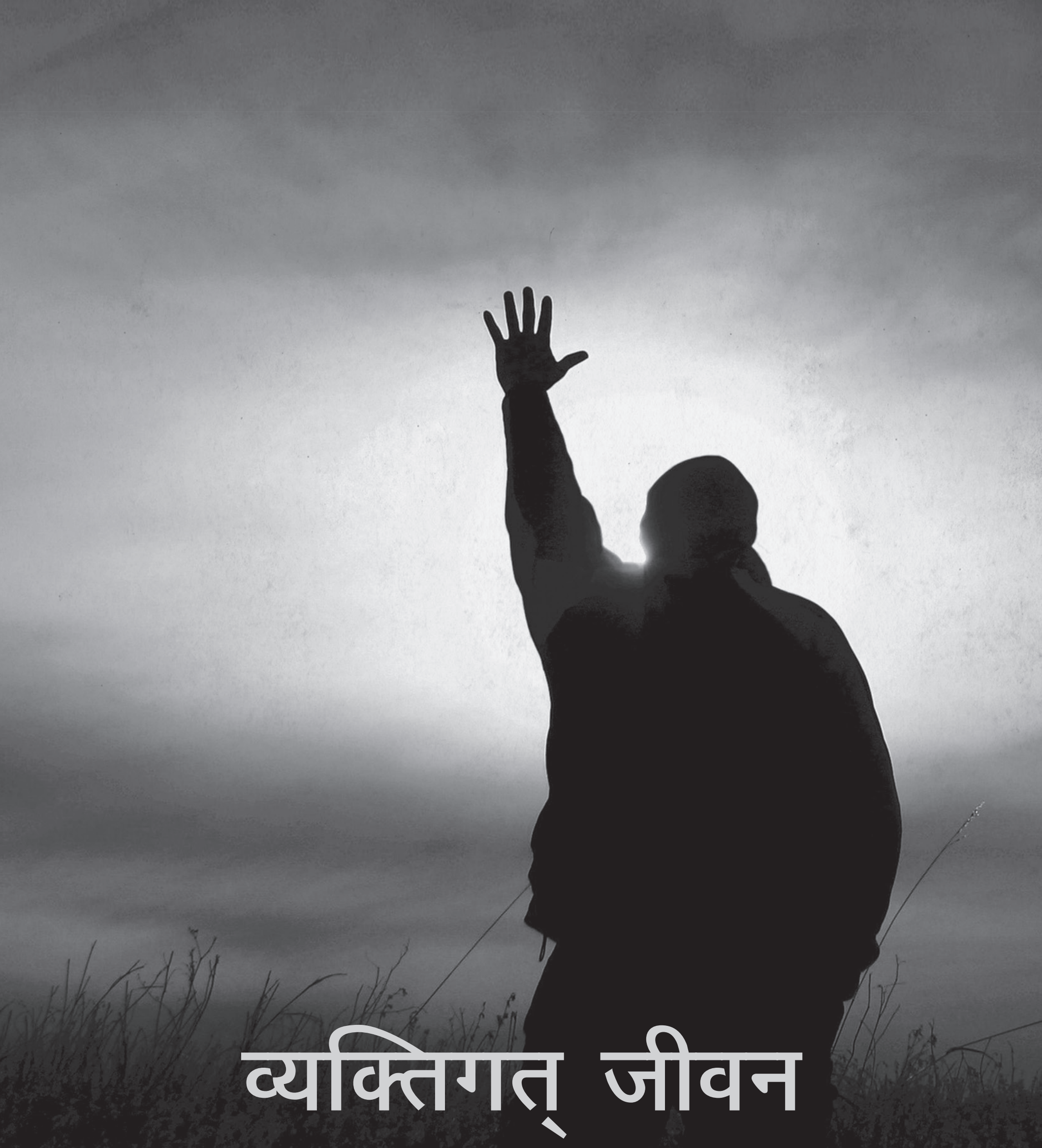

व्यक्तिगत् जीवन

क्योंकि अध्यक्ष (या बिशप) को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए; न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी, परंतु पहुनाई करनेवाला, भलाई का चाहनेवाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो।

(तीतुस 1:7,8)

अध्याय 1

1
व्यक्तिगत् जीवन

मसीही सेवकाई दिखावा नहीं है जो हम रविवार की आराधना में, प्रार्थना सभाओं में, सप्ताह अंत के सेमिनारों में, या क्रूसेड और बड़ी सभाओं में करते हैं। यह किसी उत्तम व्याख्या या प्रेरणादायक भाषण से बढ़कर है, जो हम लोगों को प्रेरित करने और प्रभावित करने हेतु प्रस्तुत करते हैं ताकि वे वापस हमारी बातों को सुनने के लिए आते रहें। सेवकाई वास्तव में इस बात का छलकाव है कि परमेश्वर व्यक्तिगत् तौर पर हम में क्या कर रहा है। यदि जो कुछ हम सेवकाई में कर रहे हैं, हमारे परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत् जीवन का बहाव नहीं है, तब यह मात्र दूसरा अभियान, खुद की सहायता करने वाला एक सस्ता प्रेरणादायक भाषण या दूसरी घटना प्रबंधन गतिविधि है—जो उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति भी कर सकता है।

हम में से अधिकतर सेवक प्रारम्भ के दिनों में अत्यंत तत्पर दिखाई देते हैं, जब हमारी सेवकाई छोटी होती है और हमारा बड़ा नाम नहीं होता। हम तत्परता के साथ वचन को पढ़ते हैं, लम्बी प्रार्थनाएं करते हैं, अपनी सेवकाई को आरम्भ करने हेतु जो कुछ हमें करना चाहिए हम करते हैं। परंतु एक बार सुस्थापित होने के बाद, अपना बड़ा नाम और कीर्ती प्राप्त कर लेने के बाद, जब भीड़ हमारी आराधना सभाओं में आने लगती हैं, तब हम सुस्त हो जाते हैं—विशेषकर जहां यह अत्यंत महत्वपूर्ण होता है वहां—हमारे अपने व्यक्तिगत् जीवनों में।

सदाचार का सम्बंध नैतिक नियम, मूल्य और सिद्धांतों से है। आचरण के नियम की चर्चा की जा सकती है, उसके दस्तावेज तैयार किए जा सकते हैं, परंतु सदाचार के मानक अपने आपमें उनके पालन की सामर्थ प्रदान नहीं करते। नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों का पालन करने की सामर्थ प्रत्येक व्यक्ति के अंदर से आती है। नैतिक रूप से सीधे चलने की हमारी सामर्थ

स्वयं प्रभु पर हमारी निर्भरता से और उस अनुग्रह से जो वह प्रदान करता है, आती है। कोई भी आचरण का नियम, कोई सदाचार की शिक्षा, कोई बुद्धिमानीपूर्ण सलाह या निर्देश मसीह के सेवक की सहायता नहीं कर सकते जो परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत जीवन को गंभीर नहीं समझता। यह अंदर से आना चाहिए। परमेश्वर का अनुसरण करने की गहरी इच्छा और खुद को निजी जीवन में उत्तरदायी समझना व्यक्ति पर बाहर से लादा नहीं जा सकता—यह अंदर की गहराई से, ऐसे हृदय से निकलने वाली सहज प्रतिक्रिया है, जिसे परमेश्वर ने थाम लिया है। यहां पर हम जिन मानकों की चर्चा करते हैं, उनके विषय में हमें स्वयं को उत्तरदायी मानना है और हमारे व्यक्तिगत जीवन में उनमें बने रहने का चुनाव करना है।

गुप्त स्थान में प्रतिदिन नियत समय

मत्ती 6:6

परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर। तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रगट रूप में प्रतिफल देगा।

सच्ची सेवकाई का जन्म गुप्त स्थान में होता है, जहां हम प्रार्थना, आराधना, वचन के पढ़ने और उस पर मनन करने के द्वारा परमेश्वर के साथ आनन्द में सहभागिता रखते हैं। गुप्त स्थान में, केवल आप और परमेश्वर हैं। वहां पर हम पर प्रभाव डालने वाला, हम पर ध्यान देने वाला, हमारा ध्यानाकर्षण करने वाला और कोई नहीं है। गुप्त स्थान में परमेश्वर हमारे साथ व्यवहार करता है, हमें सिखाता है और हमारे साथ अद्‌भुत कार्य करता है। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि जब हम गुप्त स्थान में उसे खोजेंगे, तब वह प्रगट रूप से हमें "प्रतिफल" देगा। सार्वजनिक सेवकाई में जो कुछ होता है, वह वास्तव में उस बात का परिणाम होने पाए जो गुप्त स्थान में निजी रूप से हुआ है। हम वास्तव में हमारे गुप्त स्थान को हमारे साथ—हमारे हृदय में—जहां कहीं हम जाते हैं, पूरे दिनभर ले चलते हैं। इस प्रकार हम परमेश्वर के साथ दिन में निरंतर वार्तालाप करते रहते हैं। जो कुछ हमारे प्रभु के साथ हमारे रिश्ते में हम पा रहे हैं और अनुभव कर रहे हैं, उसे दूसरों को देना ही सेवकाई है।

परमेश्वर के साथ सहभागिता में गुप्त स्थान का लगातार जीवन बनाए रखने के लिए अनुशासन की ज़रूरत होती है। अनुशासन के कई स्वरूप हैं, परंतु सच्ची शिष्यता शुद्ध आनन्द का उत्पाद है। जब हम प्रभु में और उसकी संगति में आनन्दित होते हैं, तब एक गुप्त स्थान की सहभागिता का निरंतर जीवन "स्वाभाविक रूप से" पूरा होता है।

हमें हमेशा परमेश्वर से अधिक पाने, उसके वचन, उसके आत्मा और हमारे जीवनों में उसके कार्य की अधिकाई के लिए निरंतर लालायित रहना है। यह हमें व्यक्तिगत् रीति से प्रभु की खोज में रहने हेतु प्रेरित करेगा। परमेश्वर से और अधिक पाने के लिए लालायित रहें!

अपने चरित्र को निरंतर मज़बूत बनाएं

1कुरिन्थियों 10:12

इसलिए जो समझता है, मैं स्थिर हूँ, (खड़ा) हूं, वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।

हमारे जीवन में धार्मिकता के एक निश्चित स्तर पर पहुंचने के बाद, यह पूर्ण रूप से सम्भव है कि हम यह सोचने लगे कि हम खुद को क्रूझ मोड़ में डाल दें और उसी स्तर पर बने रहें। हम उन पापों को नहीं करते, जो औसत मसीही लोग करते हैं। इसके अलावा, परमेश्वर हमें उसके राज्य के कार्य के लिए उपयोग कर रहा है और हम फलों को देख रहे हैं। इसलिए हम धार्मिकता में चलना बंद कर देते हैं (1 तीमुथियुस 4:7)। जब हम अपने स्नायु का व्यायाम करना बंद कर देते हैं, तब क्या होता है? हमारे स्नायु धीरे धीरे कमज़ोर होते जाते हैं, अक्सर हमारे अनजाने में। यह हमारे आत्मिक जीवनों और चरित्र में भी सच है। हमें नियमित रूप से इस बात का ध्यान रखना है कि हम अपने चरित्र में कैसे आगे बढ़ रहे हैं। चरित्र हमारा नैतिक तन्तु (फाईबर) है। यह धार्मिकता का वह स्तर है जिसमें हम स्वयं, निजी रूप से चलते हैं, जब कोई हमें नहीं देखता। भलाई का चुनाव करने और बुराई का इन्कार करने की हमारी यह योग्यता है। परमेश्वर के वचन के सत्य में बने रहने की हमारी यह योग्यता है। जब हम परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, तब समय के साथ हमारे चरि का विकास होता है और

हम विभिन्न परिस्थितियों में पवित्र बने रहते हैं (रोमियों 5:3,4)। हमारा चरित्र परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता के स्तर से परे नहीं उठेगा। हम मसीही सेवकों के लिए यह चुनौती है कि अपने चरित्र का सर्तकता के साथ ध्यान रखें और खुद को मज़बूत बनाते रहें। यह मानकर चलने के बजाए कि एक निश्चित स्तर पर स्थिर बने रहेंगे, हमें परमेश्वर के वचन, उसके आत्मा और धर्मी लोगों के प्रभाव के माध्यम से परमेश्वर के कार्य को न्योता देने की ज़रूरत है—ताकि हम हमारे चरित्र में बल के नये स्तरों की ओर निरंतर बढ़ते रहें। हमें इस क्षेत्र में लगातार अपनी क्षमता को बढ़ाते रहना है।

केवल इसलिए कि हम मसीही सेवकाई में हैं, हम किसी भी रीति से परीक्षाओं और पाप के निमंत्रणों से नहीं बच सकते। वास्तविकता यह है कि हमेशा ऐसे नये नये क्षेत्र होंगे जहां पर हमें अपने बचाव को तैयार करना होगा और सुरक्षा बनाए रखना होगा। इसलिए हमें निरंतर सभी मोर्चों पर अपने चरित्र को निरंतर मज़बूत बनाए रखने की ज़रूरत है। प्रेरित पौलुस ने बड़े प्रकाशनों को पाने और प्रभु के लिए बहुत कुछ करने के बाद भी कहा, *"यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं; पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूं जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था"* (फिलिप्पियों 3:12)।

पहले करें, फिर सिखाएं

मत्ती 5:19

इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे से छोटा कहलायेगा; परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।

आत्म-अनुशासन का सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा जो हमें अपनी सेवकाइयों में बनाए रखना है, वह यह है कि जिन बातों को हमने अपने जीवन में अमल में नहीं लाया है, उन्हें हम नहीं सिखाएंगे। परमेश्वर के राज्य के सेवक होना केवल दूसरों को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए यह बताना नहीं है। यह हमारा पहले परमेश्वर के साथ चलने और हमारे जीवनों को

उसके वचन और उसके आत्मा की आवाज़ के अनुरूप ढालने के विषय है। उसके बाद, उस अनुभव से हम दूसरों के साथ यह बाटते हैं कि ऐसा किस प्रकार करें। यही हमें परमेश्वर के राज्य के सेवक बनाता है। हमारे संदेश की विश्वसनीयता तब मज़बूत होती है लोग देखते हैं कि हम उसमें जीवन बिता रहे हैं। मैं समझता हूं कि हमारे जीवन में ऐसे समय आएंगे जब हमें उन बातों के विषय में प्रचार करना होगा जो आगे होने वाली हैं, जिसमें परमेश्वर हमें आगे बुला रहा है और जहां पर हम में से कोई भी नहीं गया है। ये संदेश हम सभों को उन ऊंचे क्षेत्रों में आगे बढ़ने हेतु चुनौती देते हैं जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने हमसे की है। यह मैं भी समझता हूं कि कभी-कभी हम उस पक्ष को सिखाते हैं जो परमेश्वर के वचन में प्रस्तुत सत्य पर पूर्ण रूप से आधारित होते हैं—भले ही हमने उस क्षेत्र में व्यक्तिगत् अनुभव नहीं पाया होगा। उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर का जन जिसका विवाह नहीं हुआ है, विवाह के विषय में बाइबल क्या कहती है इस विषय में प्रचार कर सकता है और सिखा सकता है। और अर्थात् उसके बाद हम सभों के पास ऐसे अनुभव हैं जहां पर हम असफल रहे, हमने अपनी गलतियों से सिखा, फिर अपने पांव पर खड़े हो गए और उसके बाद वचन के सत्य को बांटते हैं—जबकि हम यह जानते हैं कि हमने पिछले दिनों में गलतियां कीं। यह सबकुछ पूर्ण रूप से ठीक है—क्योंकि हमें परमेश्वर के वचन की सत्य की घोषणा करने हेतु बुलाया गया है, अपने अनुभवों को घोषित करने नहीं। फिर भी, ऐसे क्षेत्रों में जहां पर हमें परमेश्वर की आज्ञा मानना है, यह महत्वपूर्ण है कि हम पहले वचन पर अमल करें, ऐसे जीवन बिताएं जो परमेश्वर के वचन से मेल खाते हैं और फिर प्रचार करें।

आवाज़ बनें, प्रतिध्वनि नहीं

मत्ती 10:27

जो मैं तुमसे अन्धियारे में कहता हूं, उसे उजियाले में कहो; और जो कानों-कान सुनते हो, उसे छतों पर से प्रचार करो।

मेरे मसीही जीवन की आरम्भिक अवस्थाओं में, मुझे याद है कि प्रभु मुझे सिखा रहा था कि मैं उस प्रकाशन को प्राप्त करूं जो वह विश्व भर में विभिन्न लोगों के द्वारा मसीह की देह को दे रहा था। कोई भी व्यक्ति

वह सबकुछ नहीं जानता या उसके पास वह सबकुछ नहीं है जो परमेश्वर कलीसिया से कह रहा है। इसलिए हमें समस्त संसार के विभिन्न स्त्री और पुरुषों के द्वारा परमेश्वर जिन बातों को कह रहा है, उसके विभिन्न हिस्सों को सुनने और ग्रहण करने की ज़रूरत है। और मैंने वर्षों से ऐसा करते रहने का प्रयास किया है। परमेश्वर के अन्य स्त्री और पुरुषों से सीखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। और फिर भी, हमें सावधान रहना है कि उसे पहले अपना व्यक्तिगत प्रकाशन बनाए बगैर उसे मात्र दोहराना नहीं चाहिए, जिसकी और कोई घोषणा कर रहा है। जो हम दूसरों से सुनते हैं, उसे हमें पहले अपना भाग बनने देना चाहिए—उसे अपने जीवनों में और परमेश्वर के साथ हमारे व्यक्तिगत चालचलन में आत्मसात करना चाहिए और फिर दूसरों को पहुंचाना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते, तो हम एक खोखला प्रतिध्वनि हैं—जिस बात का हम प्रचार करते और सिखाते हैं उसमें कोई जीवन और सामर्थ नहीं।

और महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर हम में से हर एक के साथ व्यक्तिगत तौर पर बात करना चाहता है और हमें सिखाना चाहता है। परमेश्वर "अंधकार में" और व्यक्तिगत रीति से हमारे "कान में"—शांत, निजी और गुप्त क्षणों में हमसे बातें करने की इच्छा रखता है। *"प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूं। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं। प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है, और मैंने विरोध न किया, न पीछे हटा"* (यशायाह 50:4,5)। जो कुछ परमेश्वर हमसे गुप्त रूप से बोलता है, उसे वह लोगों के सामने ऊंची आवाज़ में घोषित करना चाहता है। जो समझ और प्रकाशन हमने परमेश्वर की सुनने के द्वारा व्यक्तिगत रीति से पाए हैं, उन्हें जब हम प्रचार करते और सिखाते हैं—तब वे अत्यंत सामर्थी सिद्ध होते हैं। इस प्रकार हम आवाज़ बनते हैं, मात्र प्रतिध्वनि नहीं।

जीवनशैली—उसे सादगीपूर्ण बनाए रखें

2 कुरिन्थियों 1:12

क्योंकि हम अपने विवेक की इस गवाही पर घमण्ड करते हैं, कि जगत में और विशेष करके तुम्हारे बीच, हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो शारीरिक ज्ञान से नहीं परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था।

सादगी में सुंदरता है। प्रेरितों ने सादगीपूर्ण और भक्तिमानता की खराई में जीवन बिताया। हमें अपनी जीवनशैली को सादगीपूर्ण बनाए रखना सीखना है। हमारा जीवन दिखावा या प्रदर्शन नहीं है जिसे हम दूसरों के सामने दिखाएं। यह कोई दिखावा या स्वांग नहीं हैं हम जिस तरह से जीवन बिताते हैं उसमें भी झूठ नहीं होना चाहिए। जो आप देखते हैं वही आप पाते हैं।

सादगी में आज़ादी है। आप स्वयं रहने के लिए स्वतंत्र हैं—जैसा परमेश्वर ने आपको हर समय होने के लिए बुलाया है। आप जो नहीं हैं वैसा बनने का झूठा प्रयास करने हेतु आप बंधन में नहीं हैं।

हमें इस संसार में रहना है, इसलिए लोगों को मसीह के लिए प्रभावित करने हेतु और उसके पास लाने हेतु संसार के साथ व्यवहार करें, परंतु साथ ही साथ हमें इस संसार की जटिलताओं में उलझना नहीं है। *"जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिए कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसाता"* (2 तीमुथियुस 2:4)। यदि हमारे आसपास के लोगों को दिखाना उद्देश्य है तो, बड़ी कार, बड़ा घर, बड़ी वस्तुओं, आधुनिक मशीनें, खर्चीले जीवन आदि का पीछा करने की ज़रूरत नहीं है। यदि आपका परिवार बढ़ रहा है, तो आपको बड़े घर की ज़रूरत होगी और उसमें कुछ भी गलत नहीं है। यदि ज्यादा लोगों की यातायात के लिए सुगम यात्रा के लिए या निर्भरता के लिए आपको बड़ी और बेहतर कार की ज़रूरत है, तो ऐसा करने में कुछ भी गलत नहीं है। यदि आधुनिक यंत्रों से आपको बेहतर कार्य करने में सहायता मिलती है, आपकी कार्यक्षमता बढ़ती है, आप किसी चीज को सुविधाजनक बना सकते हैं तो हर तरह से उसका उपयोग करें! परंतु, यदि आप दूसरों के साथ "प्रतिस्पर्धा" करते हैं और "लोगों को कुछ दिखाना चाहते हैं," तो हम उसी फंदे में फंस गए हैं जैसा वे लोग जो परमेश्वर को नहीं जानते।

सादगी पूर्ण जीवन बिताने का एक भाग है संसारिक सम्पत्ति में संतुष्ट रहना। जबकि हम आत्मिक बातों में पवित्र संतुष्टी के बोध के साथ निरंतर जीते हैं, इस संसार की वस्तुओं के साथ भी हमारा रिश्ता संतोषसहित भक्ति का होना चाहिए। *"पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। क्योंकि न हम*

जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए" (1 तीमुथियुस 6:6-8)। इस संसार में हम कुछ बातों को हासिल करने की कोशिश में लगे रहते हैं—सफलता, उन्नति, विभिन्न क्षेत्रों में तरक्की—उसका कारण परमेश्वर के राज्य को बढ़ाना है। इसे छोड़, इस संसार की बातें हमें प्रभावित नहीं करती। हम अपनी आंखों को स्वर्गीय बातों की ओर लगाते हैं, पृथ्वी की बातों पर नहीं (कुलुस्सियों 3:2)।

कभी-कभी मसीही सेवक होने के नाते हम ऐसा कुछ बनने का दबाव महसूस करते हैं, जो हम नहीं हैं। यदि हम बुद्धिमान नहीं हैं, तो ऐसा होने का बहाना न बनाएं। यदि आप धनवान नहीं हैं, तो धनी होने का बहाना न बनाएं। यदि आप रूढ़ीवादी हैं, तो आधुनिक होने का बहाना न बनाएं (यदि आप आधुनिक नहीं बनना चाहते हैं तो)। लोग आसानी से आपके इस स्वांग को समझ लेते हैं। इस समाज के सम्भांत लोगों के साथ "घुमने फिरने में," ऊंचे ओहदों वाले लोगों से सम्पर्क करना आदि बातों में घमण्ड महसूस न करें। हम ऊंचे पदों वाले लोगों तक पहुंचने और उन पर प्रभाव डालने का प्रयास करें—उनके साथ मनुष्य के रूप में बर्ताव करें—और यह सादगी के साथ करें। हम सब प्रकार के लोगों के साथ सम्पर्क रखने और सम्पर्क बनाने की योग्यता बनाए रखें—धनी और निर्धन, ऊंचे पद वाले लोगों के साथ और जो लोग निम्न स्तर पर है उनके साथ भी। *"आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो"* (रोमियों 12:16)।

अपने हृदय को शुद्ध बनाए रखें और अपने इरादों की रक्षा करें

नीतिवचन 4:23

सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।

मसीही जीवन में बड़ी चुनौतियों में से एक है, शुद्ध और साफ हृदय बनाए रखना। बाहरी बातों के साथ व्यवहार करना आसान होता है—हम शराब नहीं पीते, धुम्रपान नहीं करते, गाली नहीं देते, श्राप नहीं देते, क्रोधित नहीं होते आदि। परंतु, परमेश्वर न केवल हमारे आचरण की ओर देखता

है, परंतु हमारे भाव, इच्छाओं, हमारे हृदय के मकसद और इरादों को भी देखता है। प्रेरित पौलुस हमें बताता है, *"इसलिए जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करोः वही तो अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों की भावनाओं को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी"* (1 कुरिन्थियों 4:5)। मसीही सेवकों के नाते, इस मामले में हम सबसे बड़े "गुन्हगार" प्रतीत होते हैं, क्योंकि जबकि हम प्रचार करते और बड़ी बड़ी बातों की घोषणा करते-हमारे हृदय और मनों में हर प्रकार की बुराइयां छिपी हो सकती हैं।

यदि हमारा उद्देश्य जो सेवकाई हम कर रहे हैं उसके माध्यम से हमारे लिए महिमा, कीर्ती, और मान्यता खोजना है, तो हमारे हृदय गलत हैं। यीशु ने कहा, *"जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं"* (यूहन्ना 7:18)। जिस हद तक मैं अपने लिए महिमा पाना चाहता हूं, उस हद तक मुझमें अधर्म है।

अपने मन में वासनामय विचारों को रखना उस कार्य को करने के बराबर है (मत्ती 5:28)। हम वासनामय इच्छाओं के साथ अपने खेल को लोगों से छिपा सकते हैं और पवित्रता का दिखावा कर सकते हैं, परंतु परमेश्वर हमारे अंदरूनी भावों को जानता है और हमने उसकी दृष्टि में पाप किया है।

हम भीड़ के सामने "हालेलुय्याह!" चिल्लाते हों, परंतु क्या हम उस समय भी ऐसा कर सकते हैं जब हम अपने साथी पासबान को परमेश्वर द्वारा बड़े सामर्थ के साथ उपयोग करते हुए देखते हैं या बड़े अवसर से आशीषित होते हुए पाते हैं? या क्या हमारे हृदय अचानक ईर्ष्या और जलन से भर जाते हैं? क्या अभी हम अन्य सेवकों के साथ होड़ लगाने और उनकी बराबरी बनने की योजना बनाते हैं और युक्ति अपनाते हैं?

जब हम यह सुनते हैं कि दूसरी स्थानीय कलीसिया या पासबान हमसे या हमारी कलीसिया से अधिक उन्नति कर रही है, तो क्या हम अचानक असुरक्षित हो जाते हैं? जब हमारी मण्डली के लोग दूसरी कलीसिया में आराधना में जाने लगते हैं या किसी दूसरे पासबान या प्रचारक द्वारा

आयोजित की गई सभा में हिस्सा लेते हैं, तब क्या हम असुरक्षित महसूस करते हैं? तब क्या हम "हमारी भेड़ों की रखवाली करने" और "उनकी चरवाही करने के" नाम में हमारे लोगों को दूसरे सेवकों से प्राप्त करने से रोकने का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष माध्यम सोचना आरम्भ करते हैं? क्या हमें डर है कि हमारी अगुवाई में चलने वाला कोई पासबान हमसे आगे निकल जाएगा और हमसे बेहतर सेवा करने लगेगा? यह सबकुछ ऐसे हृदय के लक्षण हैं जो असुरक्षित है।

मैं सोचता हूं कि हम सभी मसीही पासबानों ने किसी क्षण उपर्युक्त में से कुछ क्षेत्रों में कभी न कभी संघर्ष किया होगा। मैं जानता हूं कि मैंने किया है। पिछले कुछ वर्षों में, मैंने हर समय शुद्ध और साफ हृदय बनाए रखने का प्रयास किया है। यह मुख्य भाग–केंद्रिय बिन्दु है जहां से परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता और सेवकाई आरम्भ होती है। परमेश्वर सत्य और हृदय की शुद्धता को खोजता है (भजन संहिता 51:6) और *"यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता"* (भजन संहिता 66:18)। व्यक्तिगत् तौर पर, यहां बताया गया है मैं किस तरह शुद्ध हृदय बनाए रखने का प्रयास करता हूं। आवश्यकता से अधिक आत्म-परीक्षण न करते हुए और खुद को दोष न देते हुए, मैं खुद को जांचता हूं। मेरे अंदरूनी विचारों, भावनाओं, इरादों और हृदय और मन की इच्छाओं का मूल्यांकन करते समय मुझे खुद के साथ और परमेश्वर के साथ भी सच्चा बने रहने की ज़रूरत है। मेरे अंदर जो चल रहा है उसके विषय में मैं खुद से या परमेश्वर से झूठ नहीं बोलना चाहता। पौलुस ने मुझे सिखाया है कि *"यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते"* (1 कुरिन्थियों 11:31)। मैं प्रभु को न्योता देता हूं कि मेरे हृदय के इरादों को और विचारों को पहचानने की प्रक्रिया में प्रभु मेरी सहायता करे। भजन के लेखक के समान, मैं अक्सर प्रार्थना करता हूं, *"हे परमेश्वर, मुझे जांचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर"* (भजन संहिता 139:23,24)। जब मैं उन विचारों, भावनाओं, इरादों, इच्छाओं को जान लेता हूं जो परमेश्वर के हृदय से मेल नहीं खातीं, तब मैं प्रभु से बिनती करता हूं कि वह इन बातों से मुझे शुद्ध करे। मैं परमेश्वर के वचन और उसके आत्मा के द्वारा परमेश्वर

की शुद्ध करने वाली और परिष्कृत करने वाली आग को निमंत्रित करता हूं कि इन भावनाओं को मेरे हृदय और मन से मुक्त करे। कभी-कभी, छुटकारा तुरंत और आसानी से होता है। कभी-कभी, मुझे कुछ बातों के लिए कुछ दिनों तक संघर्ष करना पड़ता है, परंतु मैं प्रार्थना करते रहता हूं और परमेश्वर के अनुग्रह को न्योता देता हूं कि वह इस क्षेत्र में मुझे सामर्थ दे। दूसरी बात जो मैं उपयोगी समझता हूं, वह है, उस विशिष्ट क्षेत्र के सम्बंध में जहां पर मैं शुद्ध बने रहने की ज़रूरत महसूस करता हूं, परमेश्वर के वचन में मनन करना है। मैं सम्बंधित वचनों को पढ़ने में और उन पर मनन करने में समय बिताता हूं और इससे मुझे शुद्धता प्राप्त होती है और मैं शुद्ध और पवित्र हृदय बनाए रखता हूं। मैं व्यक्तिगत तौर पर विश्वास करता हूं, कि यदि हम अपने हृदयों को शुद्ध रखते हैं, अपने इरादों, हमारे हृदय के विचारों और इच्छाओं की रक्षा करते हैं, तो हमने आधी लड़ाई लड़ ली।

अपने विवेक को न मारें

प्रेरितों के काम 23:1
पौलुस ने महासभा की ओर टकटकी लगाकर देखा और कहा, हे भाइयो, मैंने आज तक परमेश्वर के लिए बिल्कुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है।

प्रेरितों के काम 24:16
इससे मैं आप भी यत्न करता हूं कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।

हमारा विवेक परमेश्वर द्वारा दिया गया हमारे अंदर बना हुआ रेगुलेटर है जो हमारे अंदर रखा गया है (रोमियों 2:15)। वह हमें बताता है कि हम कहां सहीं हैं और हम कहां गलत हैं। हमारा विवेक हमारे आत्मा की गवाही के अनुसार हमारे हृदय की गवाही देता है, विशेष तौर पर पवित्र आत्मा जो हमसे बोलता है, उस गवाही को वह मज़बूत करता है (रोमियों 9:1)। मसीही सेवा में सेवा करने वालों के विषय में लिखते समय पौलुस कहता है, *"वैसे ही सेवकों को भी गम्भीर होना चाहिए, दोरंगी, पियक्कड़, और नीच कमाई के लोभी न हों। पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें"* (1 तीमुथियुस 3:8,9)। मसीही सेवकों के नाते, हमें अपने सेवकाई के साथ शुद्ध विवेक को जोड़ना है। शुद्ध और साफ विवेक हमारे

लिए आवश्यक है ताकि हम परमेश्वर के प्रति भययुक्त आदर के साथ चल सकें, अपनी जीभ पर नियंत्रण करें, और पैसों के प्रेम से मुक्त रहें। यदि हम अपने विवेक को दागना, दबाना आरम्भ करते हैं और अपने विवेक की आवाज को मार देते हैं तो जल्द ही हम *"यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा"* (1 तीमुथियुस 4:2) और हमें उस विषय में कोई पछतावा भी नहीं होगा। यह अत्यंत खतरनाक स्थान है।

ऐसा क्यों होता है कि कुछ मसीही सेवकों ने शुरूवात तो अच्छी की, परंतु अंत गंभीर अपराधों में हुआ—सेवकाई के पैसों में हेराफेरी की या गलत उपयोग किया, झूठ बोले, हत्या, अफवाह आदि? धीरे धीरे वे शुद्ध विवेक से दूर होते गए। धीरे धीरे उन्होंने अपने विवेक की आवाज को सुगठित विचारों से, तर्क, बहानों, और ईश्वरविज्ञान सम्बंधित समर्थनों के साथ दबा दिया—और फिर उनके विवेक की आवाज़ सुनाई देना बंद हो गई। पौलुस हमें चेतावनी देता है कि हमें अच्छे विवेक के साथ विश्वास भी होना चाहिए। यदि हम अच्छे विवेक का इन्कार करते हैं, तो हमारा विश्वासरूपी "जहाज डूब" जाएगा (1 तीमुथियुस 1:19)—मुख्य रूप से विश्वास की हमारी यात्रा में एक बड़ी दुर्घटना होगी। क्या परमेश्वर "विश्वास के जहाज" के टूट जाने से हमें फिर बच निकलने में सहायता करेगा? मुझे यकीन है कि वह कर सकता है। परंतु यदि हम इस बात का ध्यान रखते हैं कि हम पहले ही शुद्ध और अच्छा विवेक बनाए रखें तो हम हमारे विश्वास के जहाज के टूटने से बच सकते हैं।

अपने विवेक की सुनते रहें, उसे मत मारिए। यह छोटी बात है, परंतु यह एक बड़ा अंतर ला सकती है।

शुद्धता के लिए अपने मनोभावों को प्रज्वलित करें

2 तीमुथियस 2:19-22

19 तौभी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है: "प्रभु अपनों को पहचानता है," और "जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।"
20 बड़े घर में न केवल सोने-चान्दी ही के, परंतु काठ और मिट्टी के बर्तन भी होते हैं; कोई कोई आदर, और कोई कोई अनादर के लिए।

[21] यदि कोई अपने आपको इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बर्तन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिए तैयार होगा।
[22] जवानी की अभिलाषाओं से भाग, और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं उनके साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेल मिलाप का पीछा कर।

आज कलीसिया में व्यक्तिगत् शुद्धता पर बहुत अधिक ज़ोर नहीं दिया जाता। व्यक्तिगत् शुद्धता—हर प्रकार की अशुद्धता से खुद को शुद्ध करना आवश्यक है। यदि हम परमेश्वर के भवन में आदर के पात्र बनना चाहते हैं, तो हमें स्वामी के उपयोग के लिए अलग और तैयार रहना होगा। हम ऐसे संसार में रहते हैं जहां पर व्यक्तिगत् शुद्धता को निर्बलता माना जाता है, सद्‌गुण नहीं। संसार "अशुद्ध" होना सामान्य बात माना जाता है, यद्यपि "पाप" और "अशुद्धता" इन नामों से नहीं पुकारा जाता, परंतु उसे व्यक्तिगत् पसंदगी या व्यक्तिगत् जीवनशैली का चुनाव माना जाता है। दुख की बात यह है कि, ये विचार और पाप के प्रति समान लापरवाही कलीसिया में भी प्रवेश कर गई है। मसीही सेवक होने के नाते बढ़ती हुई मण्डलियों के साथ आत्म संतुष्ट होना, सेवकाइयों को बनाना, ऐसे संदेशों का प्रचार करना जो भीड़ को आकर्षित करती हैं, परंतु पाप के विषय में लापरवाह हो जाना आसान है। सेवकाई में हमारी व्यस्तता या कभी-कभी सफलता और जिस फल को हम देखते हैं, वह हम में व्यक्तिगत् शुद्धता की बात आने पर "सबकुछ चलता है" वाला रवैय्या अपनाने की ओर प्रवृत्त करता है। धीरे धीरे हम शुद्धता पर प्रचार करना बंद कर देते हैं क्योंकि सबकुछ ठीकठाक चलता हुआ दिखाई देता है। हम उन पापों के साथ जिन्हें हम एक समय सह नहीं सकते थे, समझौता, अनुकूलन करने लगते हैं। धीरे धीरे ये पाप जिन्हें हम सहते हैं, हमारे जीवनों को प्रभावित करना आरम्भ कर देते हैं। यदि यह बंद नहीं हुआ, तो हमारा अंत नीचे की ओर होगा जो अत्यंत विनाशकारी है। इसके विरोध में रक्षा करने का एकमात्र तरीका है, शुद्धता के लिए हमारे आवेश को हर समय प्रज्वलित करते रहना। निरंतर यह स्मरण करना है कि जीवन और सेवकाई के लिए परमेश्वर की मज़बूत बुनियाद यह चाहती है कि मसीह के नाम से पहचाना जाने वाला हर व्यक्ति पाप से दूर रहे। जो पाप को सहने वाली कोई भी बात अस्थिर बुनियाद है जिस पर निर्माण नहीं किया जा सकता।

व्यक्तिगत नैतिक सीमाओं को निर्धारित करें

भजन संहिता 101:2,3

[2] मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में चलूंगा। तू मेरे पास कब आएगा?

[3] मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊंगा। मैं कुमार्ग पर चलनेवालों के काम से घिन रखता हूं; ऐसे काम में मैं न लगूंगा।

हमें परमेश्वर के समक्ष सिद्ध रूप से चलने हेतु बुद्धिमानी एवं विवेक का उपयोग करने की ज़रूरत है। हमारे लिए जो सरल सीमाएं हम निर्धारित करेंगे, वे हमें अनावश्यक मुश्किलों में गिरने से बचाने में सहायता करेंगी। यहां पर कुछ सीमाएं दी गई हैं जिन्हें मैं उपयोगी पाता हूं, जिन्हें मैंने मेरे जीवन के प्रारम्भ में ही मेरे लिए निर्धारित किया था। बहुत कम समय आए जब मैंने इन सीमाओं का उल्लंघन किया, और केवल अच्छे कारण से।

किसी बंद स्थान में अकेले में किसी स्त्री से न मिलें। यदि कोई स्त्री आपसे बात करना चाहती है–तो ऐसे स्थान में मिलें जो खुला हो, जहां पर अन्य लोग भी हों। इसी कारण से हमारी कलीसिया का दफ्तर पूर्ण रूप से खुला है जहां पर सबकुछ कांच का बना है–सबकुछ देखा जा सकता है। मैंने कुछ पासबानों के दफ्तरों को देखा है जहां पर कमरे पूर्ण रूप से बंद रहते हैं (शीतानुकूलन के कारण)। यदि उसे किसी स्त्री से मिलना होगा, तो तुरंत मन में विचार आता है कि यह स्थान कितना "खतरनाक" हो सकता है। यह अनावश्यक तौर पर हमें जोखिम में डाल सकता है।

दूसरी सीमा जो मैंने बहुत पहले निर्धारित की वह यह है कि मैं मेरी पत्नी के अलावा दूसरी किसी भी स्त्री के साथ एक ही वाहन में अकेले यात्रा कभी नहीं करता। बहुत कम समय ऐसा हुआ होगा, परंतु अधिकतर समय मैंने अपनी सीमा को बनाए रखा है, और समय के साथ इस विषय में और दृढ़ हो गया हूं।

मैं सामान्य तौर पर किसी महिला को गले से नहीं लगाता। मैं केवल हाथ मिलाता हूं या मुस्कराता हूं। स्त्रियों को गले लगाना केवल परिवार की

स्त्रियों तक सीमित है—पत्नी, बेटी, चाची, मौसी आदि—या बुजुर्ग महिलाओं को जो विश्वास में मां के समान हैं।

हम ऐसी कई सरल, परंतु प्रभावी सीमाएं निर्धारित कर सकते हैं। इस पुस्तक में आगे भी हम अन्य कई सावधानियों के विषय में चर्चा करेंगे। ऐसा नहीं है कि हम कानून बना रहे हैं, या खुद को बंधन में डाल रहे हैं। बल्कि, मुश्किलों से बाहर रखने में हमारी सहायता करने हेतु ये हमारे सुरक्षा कवच हैं। ये रोकथाम के उपाय हैं जिनसे हम पाप को दूर रख सकते हैं। यह परिपूर्ण ह्रदय के साथ बुद्धिमानी से चलना है।

सारे निजी यौन पाप में शुद्ध बने रहना

1 कुरिन्थियों 6:12,13,19,20

12 सब वस्तुएं मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएं लाभ की नहीं; सब वस्तुएं मेरे लिए उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के आधीन न हूंगा।

13 भोजन पेट के लिए, और पेट भोजन के लिए है, परन्तु परमेश्वर इस को और उस को दोनों को नाष्ट करेगा, परन्तु देह व्यभिचार के लिए नहीं, वरन् प्रभु के लिए, और प्रभु देह के लिए है।

19 क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुममें बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है; और तुम अपने नहीं हो?

20 क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।"

1 कुरिन्थियों 9:27

परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूं, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं।

परमेश्वर ने हमारे यौन जीवन को बनाया है। परमेश्वर ने हमें जिस प्रकार बनाया है उसका वह हिस्सा है। उसने हमें स्पष्ट रूप से कुछ परिसीमाएं भी दी हैं जिनके अंतर्गत हमें अपने यौन व्यवहार को अभिव्यक्त करना और अनुभव करना है। परंतु, हम पुरुषों के लिए, अपनी यौन अभिलाषाओं पर काबू करना आसान नहीं होता। इसलिए कि हम मसीही सेवक हैं, हम स्वर्गदूत नहीं बन जाते। हमारी यौन अभिलाषाएं अदृश्य नहीं हो जाती। वे वहां पर

विद्यमान हैं। अतः परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा और अपने आत्मा के द्वारा हमें जो सामर्थ देने वाला अनुग्रह प्रदान किया है, उसकी सहायता से हमें अपनी यौन लालसाओं को नियंत्रण में रखने की ज़रूरत है।

हमारे यौन जीवन का क्षेत्र एक निजी मामला है। सामान्य तौर पर हम इस विषय में सार्वजनिक रूप से चर्चा नहीं करते। परंतु क्योंकि यह हमारे जीवन का निजी या गुप्त क्षेत्र है, इसलिए यह पूर्णतया सम्भव है कि कई मसीही सेवक इस क्षेत्र में सब प्रकार के बंधनों में पाप और समझौते में हो सकते हैं, और आपके श्रोतागण इस विषय में नहीं जानेंगे। थोड़ी सी अश्लीलता, थोड़े से वासनामय विचार, परस्त्री के साथ थोड़ा सी इश्कबाजी, समलैंगिक सम्बंध आदि बातें "ठीक लगती हैं" और उसे लोगों से छिपाया भी जा सकता है, परंतु बाइबल हमें बताती है कि पाप उस *"थोड़े से खमीर के समान है जो सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है"* (1 कुरिन्थियों 5:6; गलातियों 5:9)। अधिकतर मामलों में सेवकाई सामान्य रूप से चलती रहेगी और यदि मसीही सेवक शुद्ध जीवन नहीं बिताएगा तो परमेश्वर निश्चित रूप से किसी न किसी तरह से इसका सामना करेगा। इसलिए, मसीही सेवक होने के नाते यह महत्वपूर्ण है कि हम सारे निजी यौन पापों से शुद्ध बने रहें। मैंने इस क्षेत्र में भी संघर्ष किया है और मुझे अपनी यौन अभिलाषा पर काबू रखने के विषय में सूक्ष्मता के साथ ध्यान रखना जारी रखना है, और सारी यौन अभिलाषाओं को काबू में रखना है।

सारे निजी यौन पापों से शुद्ध बने रहने हेतु मैं इन बातों पर अमल करता हूं। परमेश्वर शायद भिन्न रूप से आपकी अगुवाई करे और आपको अन्य मार्ग दिखाए जिनके द्वारा आप अपने शरीर को नियंत्रण में रख सकते हैं। जो भी आपके लिए उचित हो उसे करें, परंतु अंत में हम सभों को इस बात का ध्यान रखना है कि उसके अनुग्रह के द्वारा हम इस क्षेत्र में भी पवित्र चाल चलें।

मसीही सेवक होने के नाते हम में से कुछ लोगों को अक्सर यात्रा करनी पड़ती है और हमें होटेल के कमरों में और निजी मकानों में रहना पड़ता है। सावधानी के तौर पर, यदि मैं होटेल के कमरे में अकेले रहता हूं

तो मैं सामान्य तौर पर टी.वी. चालू नहीं करता। ऐसा नहीं है कि मैं कभी टी.वी. नहीं देखता, केवल यह कि जब मैं अकेले रहता हूं तब नहीं देखता। मैं अनावश्यक तौर पर लम्पट और कामुक विज्ञापन आदि देखना नहीं चाहता। जब कोई मेरे साथ होता है, उदाहरण के तौर पर मेरी पत्नी या मेरा बेटा मेरे साथ यात्रा करता है, तब तुरंत वहां पर परस्पर उत्तरदायित्व होता है, और हम क्या देखते हैं इस विषय में हम सतर्क रहते हैं।

एक और क्षेत्र में हमें सावधान रहने की ज़रूरत है, वह है समाचार पत्रों और मासिक पत्रिकाओं को पढ़ना। इस पर क्या छापा जाता है इस पर हमारा नियंत्रण नहीं होता, परंतु जो कुछ हम पढ़ते हैं, देखते हैं और आत्मसात करते हैं, उस पर तो हमारा बस चलता है। जब आप पन्ना पलटते हैं और छपे हुए अश्लील चित्र को देखते हैं तो आपकी आंखों को पहली झलक मिल सकती है, परंतु यहीं पर हमें रुकना है। मैं दूसरी झलक देखने से इन्कार करता हूं। मैं अन्य कहीं पृष्ठ पर वह समाचार पढ़ता हूं, परंतु पलटकर उस अश्लील दृश्य की ओर अपनी आंखें लगाने से इन्कार करता हूं। हमें इंटरनेट के उपयोग में भी सावधान रहने की ज़रूरत है। मैं जानबूझकर उन साईट्स को नहीं देखता जिनमें अश्लील चित्र आदि होते हैं। परंतु, यदि अचानक कुछ सामने आ जाता है, तो मैं तुरंत अलग हट जाता हूं और उसे देखने से इन्कार करता हूं।

हस्तमैथून वह दूसरा क्षेत्र है जहां पर हम में से कई लोग संघर्ष करते हैं। बाइबल प्रत्यक्ष रूप से इस विषय में कुछ नहीं बोलती और इस सम्बंध में मसीही और मेडिकल समुदाय के भिन्न मत हैं, परंतु मेरी व्यक्तिगत् राय यह है कि हम इसका अभ्यास न करें। मेरा दृष्टिकोण यह है कि मैं नहीं चाहता कि मेरा शरीर किसी बात का गुलाम बने। *"सब वस्तुएं मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएं लाभ की नहीं सब वस्तुएं मेरे लिए उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के आधीन न हूंगा"* (1 कुरिन्थियों 6:12)। सवाल यह नहीं है कि यह ठीक या स्वीकारणीय है या नहीं। सवाल यह है कि यह सहायक है या नहीं और क्या यह किसी रीति से मुझ पर प्रभुता करता है। इस दृष्टिकोण से, आदतन हस्तमैथून और इस आदत के गुलाम बनना एक बंधन और पाप है। सबसे उत्तम बात है, ऐसा करना रोक दें।

मैंने यह घोषणा करना सीखा है कि मेरा शरीर पाप के लिए या यौन अनैतिकता के लिए नहीं है, परंतु प्रभु के लिए है। मैं यह घोषणा करने की सामर्थ को समझ गया हूं कि यीशु मेरी यौन अभिलाषाओं पर प्रभु है। मैं प्रार्थना करता हूं और मेरे अस्तित्व के यौन हिस्से को परमेश्वर को समर्पित करता हूं। मैं घोषणा करता हूं कि मेरी यौन इच्छाएं और यौन अभिलाषाएं परमेश्वर के लिए पवित्र और समर्पित हैं। *"क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनोः अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो। और तुममें से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने, और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान जो परमेश्वर को नहीं जानतीं"* (1 थिस्सलुनीकियों 4:3-5)।

परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी बनें—और हर क्षण

2 कुरिन्थियों 5:9,10

9 इस कारण हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे साथ रहें चाहे अलग रहें, पर हम उसे भाते रहें।

10 क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए।

"परमेश्वर को प्रसन्न करना" आपका अंतिम उद्देश्य बने। लोग हो सकता है कि आपको मान्यता देते हों और आपका अत्यंत आदर करते हों। परंतु यदि परमेश्वर पहले हमारे जीवनों को मान्य नहीं करता, तो स्वर्ग की दृष्टि में संसारिक मान्यता कोई मायने नहीं रखती।

हम मनुष्य के प्रति उत्तरदायित्व का सम्मान करते हैं और उसे प्रोत्साहन देते हैं—चाहे वह उत्तरदायित्व समूह के द्वारा, अगुवों, मेन्टर, देखरेख करने वाले आदि के द्वारा हो, अंततः हमें ऐसे स्थान पर आना है जहां हमारे जीवन परमेश्वर के प्रति व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के क्षण प्रति क्षण बोझ से स्थिर किए गए हैं। एक दिन हम इस पृथ्वी के हमारे जीवन का हिसाब देने के लिए विश्व के परमेश्वर के सामने खड़े होंगे यह सच्चाई हमें सीधे और संकरे मार्ग पर बनाए रखने हेतु महत्वपूर्ण होनी चाहिए। यदि परमेश्वर के प्रति उत्तरदायित्व का यह बोध हमें नहीं होता, तब और किसी

भी तरह का उत्तरदायित्व जिससे मैं खुद को घेर लेता हूं, मुझे कोई लाभ नहीं करेगा। मानव उत्तरदायित्व के सभी रूपों को आसानी से फंसाया या ठगा जा सकता है।

चाहे आप जो सेवकाई करते हो और चाहे जिस गतिविधि में व्यस्त हो, आप अपने अंदर ऐसे बोध को रखें कि ऊपर परमेश्वर आपको देख रहा है, आपका मूल्यांकन कर रहा है और आपका पीछा कर रहा है। लोग जो देखते हैं, उससे परे वह देखता है, और न केवल हमारे कामों की गुणवत्ता का परीक्षण करता है, बल्कि जिन इरादों से हम उन्हें करते हैं, उन्हें भी जांचता है। अच्छा काम करना ही मात्र पर्याप्त नहीं है। अच्छे काम को शुद्ध इरादों से किया जाना चाहिए। परमेश्वर के प्रति हर क्षण उत्तरदायी बने रहें।

पूर्णकालीन या अंशकालीन?

प्रेरितों के काम 20:33-35

33 मैंने किसी की चान्दी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया।

34 तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएं पूरी कीं।

35 मैंने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना और प्रभु यीशु की वचन स्मरण रखना अवश्य है, जो उसने आप ही कहा है: 'कि लेने से देना धन्य है'।"

हमें एक बात समझना है कि हम हर समय परमेश्वर के सेवक हैं। हम किसी कार्य को करते हैं, इसलिए हमें "संसारिक" (उदाहरण, नौकरी करना) माना जाता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उस क्षण परमेश्वर के सेवक नहीं होते। अंशकालीन विश्वासी कोई नहीं हैं और परमेश्वर के अंशकालीन सेवक कोई नहीं हैं। हम सभी पूर्णकालीन सेवक हैं। हम हर समय और हर स्थान में उसके राजदूत हैं।

परंतु, हम अक्सर देखते हैं कि जब कोई प्रचार के द्वारा, सिखाने के द्वारा या अन्य किसी तरह से मसीही सेवा करने की इच्छा महसूस करता है, तो सबसे पहले वे अपनी नौकरी छोड़कर पूर्णकालीन सेवकाई के लिए जाना चाहते हैं। मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर लोगों को बुलाता है कि वे बाज़ार के स्थान में नौकरी करने के अवसरों को हटाकर रखें ताकि वे अपना समय, ध्यान और शक्ति कुछ विशिष्ट सेवाओं के लिए लगा सकें

जिसके लिए उसने उन्हें बुलाया है। यह पूर्ण रूप से सच है। परंतु, मुझे ऐसा लगता है कि व्यक्ति को इस प्रकार करना चाहिए, जब वे सोचते हैं कि इस प्रकार का कदम बढ़ाने के विषय में उनके लिए परमेश्वर की यह इच्छा है या नहीं, और वे परमेश्वर के निर्देश और समय का इंतज़ार करते हैं ताकि इस स्थान में बढ़ सकें। व्यक्ति को जो भी नौकरी या व्यवसाय में वह कुशल है उसे बाज़ार के स्थान में करना जारी रखना चाहिए और उसी समय मसीही सेवकाई के उन क्षेत्रों में भी कार्य करते रहना है जिसके लिए उन्हें बुलाया गया है, दान दिए गए हैं और अभिषेक प्रदान किया गया है। दो व्यवसाय करने में बिल्कुल कोई गलती नहीं है। प्रेरित पौलुस ने कई स्थानों में ऐसा किया। उसने अपने हाथों से काम किया और खुद की और अपने टीम की और अन्य लोगों की देखभाल करने हेतु आमदनी कमाई, और साथ ही साथ कलीसियाओं का रोपण करना और विश्वासियों की देखभाल करना भी जारी रखा। अपनी कमाई करना पौलुस को जिस सेवकाई के लिए बुलाया गया था, उसका एक हिस्सा थी। इससे उसके जीवन को और जिस संदेश का वह प्रचार करता था, उसे विश्वसनीयता प्राप्त हुई। वह जो कुछ कर रहा था उसमें “अपवित्र” कुछ भी नहीं था। बल्कि जो कुछ भी वह था और उसकी सेवकाई के महत्व का वह अविभाज्य अंग था, इतना कि उसने पवित्र शास्त्र में उस विषय में कई स्थानों में लिखा है।

जब व्यक्ति अपनी नियमित नौकरी में उसी तरह मसीही सेवकाई करने में व्यस्त रहता है वह भी उसकी बुलाहट, वरदान, अभिषेक को साबित करने का उत्तम तरीका है। फल आने के बाद, और सेवकाई के कार्य का बोझ बढ़ने पर और जब लोग यह जान लेते हैं कि व्यक्ति को वरदान, बुलाहट, अभिषेक मिला है, तब प्रभु की अगुवाई के साथ अपनी नियमित नौकरी से परिवर्तन करते हुए मसीही सेवकाई के उस विशिष्ट क्षेत्र के लिए अपने सारे समय को लगाना बुद्धिमानीपूर्ण होगा।

अपने खानपान पर ध्यान रखें और नियमित व्यायाम करें

1 कुरिन्थियों 6:20

क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

हम सबने यह अनुभव किया है कि जब हमारे शरीर और मन तंदुरूस्त होते हैं, तब हमारे आत्मिक जीवनों में भी सहायता प्राप्त होती है। हम बिना किसी रुकावट के प्रार्थना कर सकते हैं, वचन पढ़ सकते हैं और अपनी सेवकाई कर सकते हैं। हमारे शरीर परमेश्वर द्वारा खरीदे गए हैं और परमेश्वर की जायदाद हैं, जिसके हम भण्डारी हैं। परमेश्वर हमारे शरीरों में महिमा पाने की इच्छा रखता है, उन्हें केवल पाप से शुद्ध और पवित्र बनाए रखने के लिए नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और चंगाई की दृष्टि से भी।

अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में हमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। सही भोजन खाना और स्वस्थ रहना, नियमित व्यायाम करना हमारी ज़िम्मेदारी है। हमें कुछ बुद्धिमानी के कार्य करना है, जिनमें आवश्यकता से अधिक खाना खाने, ज़रूरत से ज्यादा मीठा, नमक और तेल / चर्बीयुक्त भोजन खाने से बचना, समय पर भोजन करना आदि बातें शामिल हैं। डॉक्टर हमें अन्य बातों के विषय में सलाह देंगे जिन्हें करने की हमें अपने व्यक्तिगत् स्वास्थ्य के अनुसार ज़रूरत है।

जो सेवकाई में यात्रा करते हैं उन्हें क्या भोजन दिया जाता है और कब दिया जाता है इस पर नियंत्रण रखना सम्भव नहीं होता। सामान्य तौर पर, आराधना के बीच के समय या आराधना सभा के अंत में आपको खाने के लिए समय मिलता है, हो सकता है कि बहुत रात हो जाए। इसे हम टाल नहीं सकते। इसलिए, जब मैं यात्रा करता हूं, तब मैं हल्का भोजन लेने की कोशिश करता हूं और कम मात्रा में खाता हूं। जब हम यात्रा करते हैं तब ज़रूरत से अधिक खाने का मोह होता है क्योंकि हमारे मेज़बान चाहते हैं कि हम उनके शहर के उत्तम भोज को खाएं और सारे स्वादिष्ट वस्तुओं का स्वाद चखें। हमें शिष्टाचार का पालन करते हुए यह भी याद रखना है कि हमें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना है। अतः पूर्ण दयालुता के साथ और चतुराई से, हम इस बात का ध्यान रखें कि हम उनके भोजन का आनन्द भी लें और अपने शरीरों पर आवश्यकता से अधिक बोझ भी न डालें।

स्वास्थ्यकर खानपान की आदतों और नियमित कसरत पर अमल करने के द्वारा हमें परमेश्वर की और उसके लोगों की बेहतर रीति से और

लम्बे समय तक सेवा करने में सहायता मिलेगी। मैं व्यक्तिगत् तौर पर यह कल्पना करता हूं कि यदि प्रभु के आने में विलम्ब हुआ, तो मैं लम्बी उम्र जीऊं और सम्पूर्ण जीवन भर स्वस्थ रहूं। जब तक सम्भव हो सके मैं परमेश्वर की सेवा करना चाहता हूं और अंतिम समय तक स्वस्थ रहना चाहता हूं। स्वस्थ रहने से हमारे समय और पैसों की बचत होती है जो अन्यथा अस्पतालों में और चिकित्सीय देखभाल पर खर्च हो सकते हैं। हम अपने समय और पैसों का उपयोग अधिक लाभदायक बातों के लिए कर सकते हैं। और इसके लिए निरंतर स्वास्थ्यकर भोजन खाना और नियमित रूप से कसरत करना आवश्यक है।

इस मामले में मुझे मेरे पिता से प्रेरणा और प्रोत्साहन प्राप्त है। पिछले 40 वर्षों से, वे नियमित रूप से व्यायाम करते रहे हैं। उनकी उम्र अब 80 वर्ष की है, और फिर भी वे ताकतवर और उत्साही हैं। वे नियमित रूप से सैर करने और जिम जाते हैं। वह अभी तक जॉगिंग, स्ट्रेचिंग और वेट लिफ्टिंग करते हैं। नियमित व्यायाम का महत्व मैंने उन्हीं से सीखा और आशा करता हूं कि मेरे बाद के वर्षों में जब तक मैं स्वस्थ रहूं, तब तक मैं ऐसा ही करता रहूंगा। मैं अंत तक प्रचार करते रहना चाहता हूं और परमेश्वर के वचन की शिक्षा देना चाहता हूं, परमेश्वर के राज्य में स्त्रियों और पुरुषों को तैयार करना चाहता हूं।

व्यक्तिगत् प्रबंधन योजना तैयार करें

तीतुस 1:7,8

7 **क्योंकि अध्यक्ष** (आध्यात्मिक नेता) **को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए; न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी हो,**

8 **पर अतिथि सत्कार करनेवाला, भलाई का चाहनेवाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो**

2 तीमुथियुस 1:7

क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

"संयम की आत्मा" इस शब्द का निश्चित अर्थ है "अनुशासन" या "आत्म-संयम।" पवित्र आत्मा हम में साहस, सामर्थ, प्रेम, और अनुशासन या

आत्म-संयम भर देता है। पवित्र आत्मा हमें सामर्थ देता है ताकि हम खुद को–आत्मा, प्राण और शरीर को अनुशासन में बनाए रखें।

पवित्र आत्मा की सहायता से और जिन परिस्थितियों में आप रहते और कार्य करते हैं, उनमें आपको यह योजना बनाने की ज़रूरत है कि आप अपने जीवन में किस प्रकार चलेंगे, अपने समय और आपको दिए गए संसाधनों का उपयोग करेंगे। आपको यह निर्धारित करने की ज़रूरत है कि जो परमेश्वर ने आपको दिया है, उसका संयोजन आप कहां करेंगे। यदि आपके पास पूर्व निर्धारित व्यक्तिगत् प्रबंधन योजना है या पूर्व निर्धारित प्राथमिकताएं हैं, तो जो महत्वपूर्ण है उस पर अपना ध्यान केंद्रित करने में और परमेश्वर के उद्देश्यों के साथ आगे बढ़ने में आपको सहायता प्राप्त होगी। अन्यथा, अलग अलग प्रकार की कई बातों से ध्यानाकर्षण होना आसान है। ध्यानाकर्षण का परिणाम समय और बल की बर्बादी में होता है। ध्यानाकर्षण विलम्ब उत्पन्न करता है जो आपको आपके मूल उद्देश्य के अनुसरण में कमज़ोर कर देता है। नीतिवचन की पुस्तक हमें सिखाती है कि *"जिसमें आत्म-संयम नहीं होता, वह ऐसे घर के समान है जिसके खिड़की और दरवाज़े तोड़ दिए गए हों"* (नीतिवचन 25:28, द मैसेज बाइबिल)।

यहां पर कुछ बातें हैं जो मेरे व्यक्तिगत प्रबंधन योजना का हिस्सा हैंः

प्रतिदिन की कार्यसूचि

मैं अपने पास प्रतिदिन की कार्यसूची रखना पसंद करता हूं। इससे मुझे यह जानने में सहायता मिलती है कि मुझे कब क्या करना है। मेरी प्रतिदिन की कार्यसूची में मूख्य रूप से उन कामों के लिए निर्धारित समय दिया होता है, जिन्हें मुझे करने की ज़रूरत है, उदाहरण के तौर पर, सुबह प्रभु के साथ समय बिताना, जिम में कसरत करना, परिवार के साथ मिलकर नाश्ता करना, दफ्तर में समय आदि। जब मैं यात्रा करता हूं, तब मुझे इस कार्यसूची में बदलाव लाना पड़ता है, परंतु जैसे ही मैं घर लौटता हूं, मैं "वापस" अपने प्रतिदिन के कामों में जुट जाता हूं।

प्राथमिकताएं

कुछ बातों को मैं अन्य बातों से महत्वपूर्ण समझता हूं, जैसे परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय, परिवार के साथ समय और व्यायाम और विश्राम का समय। जिन बातों के लिए मुझे वरदान प्राप्त है और बुलाहट है, उन्हें करने पर मैं अपना ध्यान लगाता हूं, और मेरी सेवकाई के टीम के अन्य लोगों को उन कामों में लगा देता हूं जिनका वरदान उन्हें प्राप्त है और बुलाहट भी है। मैं उनके मार्ग में बाधा नहीं बनता ताकि जो उन्हें करना है, उसे करने की उन्हें पूरी आज़ादी हो, मैं केवल आवश्यकता पड़ने पर मार्गदर्शन करता हूं।

सेवकाई के निमंत्रण स्वीकारना

मनुष्य होने के नाते, मुझे सेवकाई के लिए आने वाले सभी निमंत्रणों को पूरा करना सम्भव नहीं होता। सेवकाई के निमंत्रणों का चुनाव करते समय मैं सावधान रहता हूं। मनमाने ढंग से निमंत्रणों को स्वीकार करने के बदले, मैं उन बातों में अपना समय देने का प्रयत्न करता हूं जहां पर मुझे लगता है कि परमेश्वर ने मुझे बुलाया है और जहां पर परमेश्वर के राज्य के लिए कुछ महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त होगा। मैं इस बात का मूल्यांकन करने का भी प्रयास करता हूं, कि क्या लोग जगह भरने के लिए वक्ता को खोज रहे हैं या सचमुच परमेश्वर के वरदान और अभिषेक को पाने के लिए उत्सुक हैं, जो परमेश्वर उन्हें देना चाहता है।

कलीसिया के लोगों से मिलना

मेरी सेवकाई के आरम्भ ही से मैंने अपनी कलीसिया में यह आदत बनाई है कि यदि लोग मुझसे मिलना चाहते हैं, तो वे मुझसे मेरे दफ्तर में आकर मिलें। इससे मैं निश्चित रूप से जान लेता हूं कि उनके पास सचमुच कहने के लिए है और इससे मेरा समय बच जाता है। केवल कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में मैं उनके घरों में जाकर उनसे मिलता हूं। उसी तरह, मैं लोगों के घरों में भोजन, जन्मदिन, और अन्य विशेष अवसरों के सभी निमंत्रण स्वीकार नहीं करता। हमारे जैसी बड़ी मण्डली में, यह व्यवहारिक तौर पर सम्भव नहीं है और हमारी मण्डली भी इस बात को समझती है।

समस्याओं को सुलझाना, ज़रूरतों को पूरा करना

हमारे आसपास हमेशा "ज़रूरतें" होगी। कई सच्ची सेवकाइयां होगी जो आपसे कहेंगी, कि आप आर्थिक रूप से उनकी सहायता करें। कुछ वास्तविक लोग होंगे जिन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सहायता की ज़रूरत होगी। हमारे मन में तरस उत्पन्न होता है और हम कुछ करने की इच्छा अवश्य रखते हैं, परंतु हमें खुद को इस बात का स्मरण दिलाना है कि हम परमेश्वर नहीं हैं और इस संसार के उद्धारकर्ता नहीं हैं। मुझे खुद को यह स्मरण दिलाने की ज़रूरत होती है कि मैं यहां पर हर समस्या सुलझाने के लिए और हर ज़रूरत को पूरा करने के लिए नहीं हूं। केवल परमेश्वर ही वह कर सकता है। मेरी ज़िम्मेदारी है जो कुछ परमेश्वर मुझे करने की प्रेरणा देता है, उसे करना और केवल उन्हीं परिस्थितियों में सहभागी होना जिनके लिए परमेश्वर ने मुझे ज़िम्मेदार ठहराया है या जहां पर प्रतिक्रिया देने परमेश्वर मुझे प्रेरित करता है। मुझे परमेश्वर का अनुसरण करना सीखना है और इसके लिए आत्मिक विवेक और संयम की ज़रूरत होती है।

जीवन योजना

सेवकाई में मैं एक और काम करता हूं, मैं परमेश्वर की सुनता हूं और प्रत्येक दस वर्ष के समय में परमेश्वर क्या चाहता है कि मैं कौन सी बातों पर ध्यान दूं, इसकी समझ मैं पाता हूं। इसलिए मैंने अपने जीवन को भिन्न दशकों या दस वर्षों के समय में विभाजित किया है। हर एक दशक का एक विशिष्ट उद्देश्य है—किसी बात पर ध्यान देना और उस दशक में उसी के अनुसार कार्य करना और अगले दशक के लिए आगे बढ़ते जाना। जब अगला दशक आता है, तब मैं अगले उद्देश्य की ओर बदलाव कर लेता हूं। ये हर एक दशक कैसे खुलते गए हैं यह देखना अत्यंत अद्भुत है। दूसरे दशक में, जिस बात का मैंने स्वप्न देखा (उम्र 12-उम्र 22), उसमें मैंने परमेश्वर को मुझे तीसरे दशक के लिए तैयार करते हुए देखा (उम्र 22-उम्र 32) और फिर मैंने इसे खुलते हुए देखा और चौथे दशक में उसे साकार रूप में देखा (उम्र 32-उम्र 42)। अब मैं आगे आने वाली बातों की ओर अग्रसर हो रहा हूं। मैं यह नहीं बताना चाहता हूं कि आपको भी इसी प्रकार प्रत्येक दशक

के अनुसार जीवन की योजना बनाना चाहिए। मैं यह बताना चाहूंगा कि आप भी परमेश्वर के आत्मा से आपके जीवन के लिए ईश्वरीय उद्देश्य की समझ प्राप्त करें, और फिर उसे पूरा होते हुए देखने हेतु एक योजना तैयार करें।

ईश्वरीय उद्देश्य के साथ जीवन बिताएं!

परिवार

यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है। यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य,अतिथि-सत्कार करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो। अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से आधीन रखता हो। जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा। फिर यह कि नया चेला न हो ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए।

(1 तीमुथियुस 3:1,2,4-6)

अध्याय 2

2
परिवार

हम में से कई लोग जो मसीही सेवकाई में हैं, हम परिवार में अपनी बुलाहट के साथ सेवकाई में हमारी बुलाहट का संतुलन बनाए रखने में सफल नहीं हुए हैं। हम में से अधिकतर मसीही सेवकों की, कुछ मुख्य लड़ाइयां बंद दरवाजों के पीछे लड़ी गई हैं, हमारे घरों के निजी स्थानों में, हमारे जीवनसाथी या बच्चों के साथ जो गुमराह हो गए हैं, जबकि हम संसार को बचाने में लगे हुए हैं। यह दुख की बात है, परंतु यह सच है। इससे अधिक उपरोधिक बात यह है कि हम में से कई मसीही सेवक दूसरों के वैवाहिक जीवनों में सलाह देते हैं और मार्गदर्शन करते हैं, परंतु हम अपने ही वैवाहिक जीवन, घर, और पारिवारिक जीवनों में संघर्ष कर रहे हैं।

मसीही सेवक की योग्यता स्पष्ट शब्दों में निवेदन की गई है। मसीही सेवक *"अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो। जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा?"* (1 तीमुथियुस 3:4,5)। हमारे वैवाहिक जीवन में मेरी पत्नी और मैंने मुश्किल समयों को गुज़ारा है। केवल परमेश्वर की दया और कुछ लोगों की सहायता से जो हमारे साथ खड़े रहे, हम आज इस स्थान में खड़े हैं। हमारा वैवाहिक जीवन सिद्ध नहीं है, हमारा एक परिपूर्ण परिवार नहीं है। हमने कुछ मुश्किल पाठ सीखे। इसलिए, नीचे दिए गए कुछ सबक हमारे व्यक्तिगत संघर्षों और असफलताओं में से आए हैं। नीचे सूचीबद्ध किए गए कई सबक मसीही सेवकाई में कार्यरत् एक पुरुष की दृष्टिकोण से आए हैं, फिर भी मसीही सेवकाई में कार्यरत् महिलाएं भी उन्हें आसानी से अपने अनुकूल बना सकती हैं।

तीन मुद्राएं, एक जीवन

लूका 14:26

यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाईयों और बहनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता;

1 कुरिन्थियों 7:29-35

29 हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि समय कम किया गया है, इसलिए चाहिए कि जिन के पत्नी हों, वे ऐसे हों मानो उनकी पत्नी नहीं;

30 और रोनेवाले ऐसे हों, मानो रोते नहीं; और आनन्द करनेवाले ऐसे हों, मानो आनन्द नहीं करते; और मोल लेनेवाले ऐसे हों, मानो उनके पास कुछ ही नहीं।

31 और इस संसार के साथ व्यवहार करनेवाले ऐसे हों, कि संसार ही के न हो लें; क्योंकि इस संसार की रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं।

32 अतः मैं यह चाहता हूं कि तुम्हें चिन्ता न हो। अविवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता में रहता है कि प्रभु को कैसे प्रसन्न रखे।

33 परन्तु विवाहित मनुष्य संसार की बातों की चिन्ता में रहता है कि अपनी पत्नी को किस रीति से प्रसन्न रखे।

34 विवाहिता और अविवाहिता में भी भेद है: अविवाहिता प्रभु की चिन्ता में रहती है कि वह देह और आत्मा दोनों में पवित्र हो, परन्तु विवाहित संसार की चिन्ता में रहती है कि अपने पति को प्रसन्न रखे।

35 मैं यह बात तुम्हारे ही लाभ के लिए कहता हूं, न कि तुम्हें फंसाने के लिए, वरन् इसलिए कि जैसा सोहता है वैसा ही किया जाए कि, तुम एक चित्त होकर प्रभु की सेवा में लगे रहो।

1 तीमुथियुस 3:2-5

2 इसलिए चाहिए कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो।

3 पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो; वरन् कोमल हो, और न झगड़ालू, और न लोभी हो।

4 अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लड़केबालों को सारी गम्भीरता से आधीन रखता हो।

5 (जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा?)

तीन ऊपरी तौर पर परस्पर विरोधी मुद्राएं हैं जिन्हें हमारे परिवार के सम्बंध में बनाए रखने के लिए बुलाए गए हैं। प्रभु यीशु ने कहा कि यदि हम अपनी पत्नी और बच्चों को “अप्रिय” नहीं जानते, तो हम उसके शिष्य नहीं बन सकते। कुरिन्थियों की पुस्तक में प्रभु पौलुस के द्वारा हमें यह आज्ञा देता है कि जो विवाहित वह ऐसा जीवन बिताए मानो वह विवाहित नहीं है, ताकि उसका ध्यान विचलित न हो। और उसके बाद फिर, तीमुथियुस की पत्री में प्रभु हमें पौलुस के द्वारा आज्ञा देता है कि आत्मिक अगुवे को अपनी पत्नी और बच्चों निगरानी करना चाहिए और अपने घर का उचित प्रबंध करना चाहिए। कभी-कभी, हम सोचते हैं कि हम इनमें से किसी एक मुद्रा को चुन सकते हैं और सबकुछ ठीक होगा। इसलिए हम में से कुछ लोग अपनी पत्नी और बच्चों को “अप्रिय” जानने का और उनका पूर्ण रूप से तिरस्कार करने का निर्णय लेते हैं, और खुद को “पूर्ण” रूप से प्रभु के प्रति समर्पित करते हैं। अन्य कुछ लोग इस मुद्रा का चयन करते हैं कि हम विवाहित होते हुए भी ऐसे जीवन बिताएं मानो हमारा विवाह नहीं हुआ है! और उसके बाद शायद हम में से कुछ लोग अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अपने सम्बंधों का विकास करने हेतु, अपने घर और पारिवारिक जीवन का पोषण करने हेतु निरंतर संघर्ष कर रहे हैं।

मैं मानता हूं कि ये तीन मुद्राएं ऐसी हैं, जिन्हें हम हर समय एक साथ पूरा करते हैं।

1) प्रभु के लिए हमारा प्रेम हमारी पत्नी और बच्चों या समस्त संसारिक रिश्तों से बढ़कर है। अतः, जब प्रभु हमें बुलाता है, तब हम कई प्रकार के त्याग करने के लिए इच्छुक रहते हैं और संसारिक रिश्तों का बहाना नहीं बनाते।

2) भले ही हमारा विवाह हो चुका हो, हम प्रभु यीशु मसीह पर लेसर के समान तीक्ष्ण लक्ष्य बनाए रखना सीखते हैं ताकि अपने परिवार की ज़िम्मेदारियों को सम्भालते समय, प्रभु के प्रति हमारी सेवकाई से और सारी बातों से अधिक उसे प्रसन्न करने से हमारा ध्यान न बट जाए।

3) आत्मिक अगुवे होने के नाते, हम अपने परिवार और घर की उन्नति और पोषण इस तरह करने हेतु अपनी भूमिका निभाते हैं जिससे प्रभु की महिमा होगी।

किसी निश्चित समय में हम, तीनों योग्यताएं पूरी करते हैं। इस प्रकार का जीवन बिताने हेतु परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता होती है और बहुत अधिक बुद्धि और समझ की।

अपने जीवनसाथी के साथ अपने जीवन का पोषण करें

इफिसियों 5:28,29

28 इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है,
29 वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा, वरन् उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है।

"उसने संसार को बचाया, परंतु वह अपने ही घर को नहीं बचा सका!" यह कितना शर्मनाक वचन है और फिर, भी मसीही सेवकाई में परमेश्वर के स्त्री और पुरुषों के रूप में कई लोगों की यही स्थिति है। इसका मूल कारण यह है कि हमारी मण्डलियों में या सेवकाई के अन्य क्षेत्रों में लोगों के साथ जब हम रिश्ता बनाने में व्यस्त रहते हैं, हम अपने ही जीवनसाथी को नज़रअंदाज करते हैं। हम यह मानकर चलते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवनसाथी का ध्यान रखेगा या हमारी जीवनसाथी स्वयं ही खुद की ज़रूरतों का ध्यान रखेगी और हम पर परिवार का अतिरिक्त बोझ नहीं रखेगी। ये दोनों धारणाएं गलत हैं। परमेश्वर ने हम पर हमारे जीवनसाथी की "परवरिश करने और उससे प्रेम करने" की ज़िम्मेदारी सौंपी है। हमारी जीवनसाथी उन सभी लोगों के समान एक इन्सान है जिनकी हम सेवा करते हैं, और जिनकी सेवा, निगरानी और स्नेह के लिए हम अपना समय देते हैं। अपने जीवनसाथी के साथ अपने रिश्ते का निर्वाहन करना एक आज्ञा है और यह आज्ञा बाइबल की अन्य सभी आज्ञाओं के समान महत्वपूर्ण है। हमें यह पहचानना है कि हमारे परिवार की सेवा करना संसार की सेवा करने के समान ही महत्वपूर्ण सेवकाई है। हमें दोनों के लिए बुलाया गया है।

अपने बच्चों के साथ अपने रिश्ते का निर्वहन करें

इफिसियों 6:4

हे बच्चेवालो, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ, परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करो।

माता-पिता होने के नाते, प्रभु के मार्गों में और हर प्रकार की शिक्षा देते हुए अपने बच्चों का लालन-पालन करना हमारी ज़िम्मेदारी है। हम कई बार ऐसा होते हुए देखते हैं कि यदि पुरुष सेवकाई में व्यस्त है तो बच्चों की परवरिश का भार पत्नी पर आता है। या जहां पर पति और पत्नी दोनों सेवकाई में व्यस्त होते हैं, वहां पर ऐसा लगता है मानो उनके बच्चों की आत्मिक परवरिश मण्डली पर छोड़ दी गई है। ये "सेवकाई करने वाले माता-पिता" आशा करते हैं कि किसी तरह उनके बच्चे प्रभु के मार्गों की शिक्षा प्राप्त करें। इनमें से कुछ भी सही नहीं है। माता-पिता होने के नाते हमें समझना है कि हमारे बच्चों के प्रति हमारी यह ज़िम्मेदारी है कि हम उन्हें प्रभु के मार्गों की शिक्षा प्रदान करें। उन्हें क्या करना चाहिए, केवल यह बताने से ऐसा नहीं होगा। हमें उनके साथ रिश्ता बनाना होगा, उस रिश्ते के माध्यम से हम आत्मिक बातों में उन्हें शिक्षा और परवरिश दे सकते हैं। यदि हम इतने व्यस्त हैं कि अपने बच्चों के साथ रिश्ता नहीं बना सकते, तो हम इस बात को भूल जाएं कि हम कभी उनके जीवनों में आत्मिक बातों का योगदान देंगे।

इसलिए अपने बच्चों के साथ एक निकट रिश्ता कायम करने हेतु समय दें। इसे नज़रअंदाज न करें। आपके उपदेशों को सुनने के लिए सारा संसार आपके पास आए, और आपके अपने बच्चे परमेश्वर के वचन के आपके प्रचार के प्रति लापरवाह रहें यह उचित नहीं है। अपने बच्चों के जीवनों में योगदान देने का केवल एक मौका आपके पास है, उसे न खोएं। और अपने बच्चों की परवरिश की ज़िम्मेदारी किसी और को न सौंपे। स्वयं उसे पूरा करें। अपने बच्चों को प्रभु के मार्गों में चलते हुए और उनके जीवनों के लिए उसकी सर्वोच्च एवं सर्वोत्तम योजनाओं को पूरा करते हुए देखने से बड़ा दूसरा कोई आनन्द नहीं है।

अपने परिवार की ज़रूरतों के लिए काम करें

1 तीमुथियुस 5:8

पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।

प्रेरित पौलुस द्वारा कहे गए ये अत्यंत कठोर शब्द हैं। अपने ही घराने की देखभाल न कर पाना परमेश्वर के सामने अस्वीकारणीय है। मैं इस बात को समझता हूं कि आपके जीवन में कठिन आर्थिक समय होंगे, विशेष तौर पर प्रारम्भ के दिनों में जब हम अपनी मसीही सेवकाई आरम्भ करते हैं, परंतु, यदि सेवकाई में ये बातें नहीं बदलती, तो यदि स्त्री या पुरुष जिन्होंने खुद को पूर्णकालीन सेवा के लिए खुद को दे दिया है, कुछ समय के लिए नौकरी करें, तो इसमें मुझे कुछ गलत नज़र नहीं आता। जब तक आपकी सेवकाई नहीं बढ़ती, तब तक उसके समानांतर आप सेवकाई करना जारी रखें, परंतु अपने परिवार की देखभाल के लिए नौकरी के द्वारा आपके पास पर्याप्त धन होगा।

दुख की बात यह है कि, कई परिवार—मुख्य रूप से घर में पत्नी और बच्चे, अनुचित दुख उठाते हैं कि पति कुछ समय के लिए बाहर जाकर नौकरी करना नहीं चाहता, ताकि परिवार की मूल ज़रूरतों को पूरा करें। पति अपनी पूर्णकालीन सेवकाई के विषय में हठी बना रहता है, जबकि स्पष्ट रूप से सेवकाई के द्वारा परिवार की ज़रूरतों के लिए घर में कम पैसा आता है। पति यह सोचकर नौकरी करने से इन्कार करता है कि यह अविश्वास का चिन्ह है या पीछे मुड़कर *"हल पर हाथ धरने के बाद" "पीछे मुड़कर देखना है"* (लूका 9:62)। पति यह भी कह सकता है कि कुछ समय के लिए नौकरी करने की अगुवाई उसे परमेश्वर से नहीं हुई है। व्यक्तिगत् तौर पर, मैं सोचता हूं कि परमेश्वर ने अपने वचन में पहले ही यह घोषित किया है कि वह चाहता है कि परिवार का पुरुष अपने घर के लिए क्या करे—अपने परिवार की ज़रूरतों को पूरा करें। मुझे लगता है कि मुश्किल समयों में अपने परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने हेतु नौकरी करना परमेश्वर के लिखित वचन के प्रति आज्ञाकारिता की बात है। यह परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणीय है।

व्यक्ति के रूप में परमेश्वर के उद्देश्य का अनुसरण करें

मत्ती 10:37,38

[37] जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।
[38] और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।

अब तक पिछले कुछ भागों में हम परिवार और घर को जो महत्व दे रहे थे, उससे यह मुद्दा अचानक एक भिन्न बात कहता है। परंतु मैं यहां पर यह बताना चाहता हूं कि अपने परिवार और घर को उचित महत्व देते हुए भी हम हमारे परमेश्वर के प्रति प्रेम और उसकी बुलाहट के प्रति आज्ञाकारिता के विषय में कोई समझौता नहीं कर सकते। परमेश्वर की बुलाहट को आगे बढ़ाने के लिए मैं अपने परिवार को बहाने के रूप में उपयोग नहीं कर सकता। हमें यह करने के लिए बुलाया गया है, अपने जीवनसाथी के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप स्त्री या पुरुष बनें, अपने बच्चों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप माता-पिता बनें, और ऐसा करते समय, मसीही सेवकाई में परमेश्वर के पास हमारे लिए जो योजनाएं और उद्देश्य हैं, उनमें आगे बढ़ते रहना जारी रखें। ये सारी बातें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और वास्तव में एक दूसरे को बढ़ावा देती हैं। पति के रूप में, पिता के रूप में परमेश्वर के सेवक के रूप में मेरी बुलाहट, सभी आपस में जुड़े हुए हैं। हर एक भूमिका दूसरी भूमिका को सशक्त बनाती है। इसलिए आपके जीवन में परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण करना जारी रखें, और घर में पति और पिता के रूप में भी अपनी बुलाहट को पूरा करें।

अपने जीवनसाथी को परमेश्वर के उद्देश्य का अनुसरण करने हेतु प्रोत्साहित करें

भजन संहिता 128:3

तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी; तेरी मेज के चारों ओर तेरे बालक जलपाई के पौधे से होंगे।

"फलवंत दाखलता" कई बातों का प्रतीक है, जिनमें से एक है, दाखरस के फल में—जो "आनन्द और सुख" का प्रतीक है। परमेश्वर ने आपकी पत्नी

को घर के लिए आनन्द और सुख का मूल ठहराया है। परंतु, यह अपने आप नहीं होगा। अपने पत्नी की देखभाल करने के साथ ही साथ, आपको उसे प्रोत्साहन देने की ज़रूरत है कि वह जीवन में पूर्णता और संतुष्टि को खोजे। यदि आपकी पत्नी जीवन में असंतुष्ट है, और अपरिपूर्ण महसूस करती है—तो यह, अलंकारिक तौर पर कहा जाए तो, "खट्टे अंगूरों" में प्रगट होगा, और घर में आनन्द या सुख नहीं होगा। हम मसीही सेवकों के साथ होता यह है कि हम अपनी बुलाहट का अनुसरण करने में, उन बड़े और सामर्थी कामों को करने में जिन्हें करने के लिए हमें लगता है कि परमेश्वर ने हमें बुलाया है, हम इतने व्यस्त हो जाते हैं कि, हम यह भूल जाते हैं कि परमेश्वर के पास हमारी पत्नी के लिए भी बुलाहट, योजना और उद्देश्य है! हम सोचते हैं कि उसकी एकमात्र भूमिका हमें सहारा देना है, जबकि हम बाहर जाकर बड़े बड़े काम करें। यह गलत है।

कुछ मामलों में, पति और पत्नी को एक ही प्रकार की सेवकाई के लिए बुलाया गया है, और इसलिए वे साथ साथ मिलकर एक साथ काम कर सकते हैं। ऐसा होते हुए देखना सचमुच महान और निश्चित तौर पर अद्‌भुत है। परंतु सभी विवाहित दम्पत्ति इस तरह नहीं बनाए गए हैं। ऐसी परिस्थितियां होती हैं जहां पर पति और पत्नी को ऐसे काम करने के लिए बुलाया जा सकता है, जो उन्हें भिन्न स्थानों और क्षेत्रों में ले जाते हैं। ऐसा करना निश्चित रूप से आसान नहीं है और इस बात का ध्यान रखने के लिए काफी बुद्धि लगती है कि दोनों पति और पत्नियों को उनकी अपनी बुलाहट में आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहन दिया जाए।

मैंने इस प्रकार करने का प्रयास किया है—कि मैं अपनी पत्नी को उस बात को पूरा करने में सहायता करूं जिसे करने के लिए उसे परमेश्वर ने बुलाया है, और परमेश्वर ने मुझे जो करने के लिए बुलाया है, उसके लिए मैं उससे उतनी ही सहायता पाता हूं। इसका अर्थ यह है कि मैं अपनी कार्यसूची को बदलता हूं, अपनी योजनाओं में बदलाव लाता हूं ताकि मेरी पत्नी को उस कार्य को करने हेतु आवश्यक समय और अवकाश मिल सके, जिसके लिए उसे लगता है कि परमेश्वर ने उसे अनुग्रह दिया है और बुलाया है। पति और पिता होने के अलावा, दो मुख्य क्षेत्र हैं, जो मेरे घर से बाहर हैं। मैं

बैंगलोर में ऑल पीपल्स चर्च का पासबान हूं, और मेरे पास अपनी सॉफ्टवेयर डेव्हलपमेंट कम्पनी है जिसका मैं मालिक हूं और मैं चलाता हूं, यह कम्पनी स्वास्थ्य सेवा सॉफ्टवेयर और सेवाएं प्रदान करती हैं। सन 2001 के आरम्भ से 2014 तक मेरे पास ये दोनों भूमिकाएं हैं। उसी तरह, घर से बाहर, मेरी पत्नी बैंगलोर के एक मिशन अस्पताल में फुल टाईम डॉक्टर है, और एक कलीसिया में आराधना टीम का हिस्सा है। मैंने अपनी पत्नी पर किसी प्रकार का दबाव नहीं रखा है कि वह "एक खास पासबान की पत्नी" बने—बच्चों के सण्डे स्कूल का ध्यान रखे, महिलाओं की सेवकाई का संचालन करे आदि। मेरा उद्देश्य यह है कि मैं उसे उस कार्य को करने की आज़ादी दूं जो उसे लगता है कि उसके जीवन के लिए परमेश्वर की बुलाहट है, और न कि लोगों की अपेक्षाओं के अनुसार जीवन बिताए।

अपने बच्चों को परमेश्वर के उद्देश्य का अनुसरण करने हेतु प्रोत्साहित करें

भजन संहिता 139:16

तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा; और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।

परमेश्वर ने हर एक को अद्वितीय रूप से बनाया है और एक उद्देश्य के लिए बनाया है जो उसके मन में उनके लिए है। यह आपके बच्चों के विषय में भी सच है। माता-पिता होने के नाते यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि परमेश्वर द्वारा दिए गए वरदानों और गुणों को पहचानने में उनकी सहायता करें और उस दिशा में उनका मार्गदर्शन करें जहां पर वे परमेश्वर के राज्य के लिए और परमेश्वर की महिमा के लिए परमेश्वर ने उन्हें जो बनाया है, उसका ज्यादा से ज्यादा विकास कर सकें। बच्चे अपने माता-पिता की "झेरॉक्स कॉपी" नहीं हैं। बच्चों में उनके अपने अनोखे वरदान होते हैं।

हमें अपने बच्चों को इस विचार में ढालने की कल्पना त्याग दें जो हम उन्हें बनाना चाहते हैं, और इसके बजाए जो परमेश्वर उन्हें बनाना चाहता है उसके लिए उन्हें प्रोत्साहन दें—चाहे वह जो भी हो। जी हां, जब बच्चे अपने माता-पिता के नक्शकदमों पर चलते हैं, तो यह अवश्य ही अद्‌भुत

होता है, जब बेटा पिता के समान प्रचारक बनता है, तो यह अद्भुत है। परंतु याद रखें कि परमेश्वर सृजनशील है और उसे प्रतियों की आवश्यकता नहीं है। हमें बच्चों पर हमारे समान बनने के लिए और सेवकाई में हम जो कर रहे हैं, उसे करने के लिए दबाव नहीं डालना चाहिए। यह खुद को पराजित करने का प्रयास है। इसके बजाए, परमेश्वर ने उनमें क्या रखा है, इसे पहचानें और उसे बढ़ावा दें। यदि वे जीवन और सेवकाई में हमारे पदचिन्हों पर चलने के लिए बनाए गए हैं, और बुलाए गए हैं, तो यह अद्भुत बात है। यदि परमेश्वर ने उन्हें भिन्न रूप से बनाया है और बुलाया है, तो यह भी अद्भुत है, उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य का अनुसरण करने हेतु हमें उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिए।

अपने घर में भक्तिमानता का उदाहरण प्रस्तुत करें

1 तीमुथियुस 3:5
जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा।

नीतिवचन 17:6
बूढ़ो की शोभा उनके नाती पोते हैं; और बाल-बच्चों की शोभा उनके माता-पिता हैं।

यशायाह 38:19
जीवित, हां जीवित ही तेरा धन्यवाद करता है, जैसा मैं आज कर रहा हूं; पिता तेरी सच्चाई का समाचार पुत्रों को देता है।

हमारा जीवन हर समय बोलता है, जब हम पुलपिट के पीछे से प्रचार नहीं करते तब भी। हमारे घर में परिवार के कुछ ही सदस्य—हमारा जीवनसाथी और बच्चे—हम पर ध्यान देंगे, परंतु यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया, तब उसका एक कारण यह था—*“क्योंकि मैं जानता हूं कि वह अपने पुत्रों और परिवार को, जो उनके पीछे रह जाएंगे, आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय करते रहें, ताकि जो कुछ यहोवा ने अब्राहम के विषय में कहा है, उसे पूरा करे”* (उत्पत्ति 18:19)। परमेश्वर चाहता था कि जिस व्यक्ति को उसने चुना

है, वह अपने घराने की अगुवाई करे—जो उदाहरण उनके समक्ष रखता है उसमें, ताकि वे उसके पदचिन्हों पर चलें, प्रभु के मार्गों में चलें। परमेश्वर की बुलाहट और उसका भविष्य इस भूमिका से जुड़ा हुआ था उसे पूरी करना था।

कल्पना करें कि, भले ही हज़ारों लोग हैं जो हमारी सार्वजनिक सेवा की सराहना और प्रशंसा करते हैं, परंतु यदि हम घर में अच्छा उदाहरण प्रस्तुत नहीं करते और इसलिए अपने बच्चों को प्रभु से दूर कर देते हैं तो क्या परमेश्वर के पुरुष और स्त्री के रूप में हमने वास्तव में सफलता पाई है?

मेरी इच्छा यह है कि जो जीवन मैं अपने घर की चारदिवारी में बिताता हूं, वह मेरे परिवार के लिए एक प्रेरणा हो और परमेश्वर के साथ चलने हेतु उन्हें विवश करे। मैं चाहता हूं कि मेरे बच्चे परमेश्वर के पीछे चलें, इसलिए नहीं कि मैं अपने शब्दों से उन पर ज़ोर डालता हूं, परंतु इसलिए कि जो जीवन मैंने उनकी आंखों के सामने बिताया, वह उनके लिए दूसरा कोई विकल्प नहीं रख छोड़ता। यदि मैं ऐसा जीवन बिताता हूं जिससे मेरे बच्चे मेरे विषय में गर्व महसूस करते हैं, तो उनके लिए यह अत्यंत स्वाभाविक बात होगी कि वे मेरे नक्शकदमों पर चलते हुए ऐसा जीवन बिताएं जिससे परमेश्वर को महिमा मिलती है।

अपने जीवनसाथी को उपदेश न दें

1 पतरस 3:7

वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं।

परमेश्वर के वचन, गवाहियों, और हमारे द्वारा प्राप्त प्रकाशनों को अपने जीवनसाथी के साथ बांटना और चर्चा करना अच्छी बात है, फिर भी प्रतिदिन के जीवन की नियमित बातों के विषय में सुनना और बातें करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। हम अपने हर एक वार्तालाप को उपदेश या प्रवचन बनाने की भूल न करें। उपदेश सुनना कोई पसंद नहीं करता।

आपकी पत्नी (जीवनसाथी) को ज़रूरत है कि आप उसके साथ सामान्य, स्वाभाविक तौर पर वार्तालाप करें। एक साथ आनन्द मनाएं। मजाक करें। हंसें। खेलें। आपको सप्ताह के सातों दिन और चौबीसों घण्टे प्रचारक बनने की ज़रूरत नहीं है। आपके जीवनसाथी ने एक व्यक्ति के रूप में आपसे विवाह किया है, प्रचारक से नहीं। यदि घर में कुछ हो जाता है, तो उसमें सुधार लाने हेतु प्रवचन न दें। तर्क करें, विचारों को बांटें, चर्चा करें, और सरल अर्थपूर्ण तरीके से उसके विषय में बातचीत करें। हर समय अध्याय और वचन बोलना आवश्यक नहीं है। अध्याय और वचन बोलने का सबसे बुरा समय वादविवाद के मध्य होता है। इससे आप जो कुछ बोल रहे हैं, उसकी ओर नज़रअंदाज किया जाएगा। ऐसा करने से बचें।

सेवकाई से पहले व्यक्तिगत और पारिवारिक विषयों के विषय में बोलें

नीतिवचन 25:11 (द मैसेज बाइबिल)
सही समय पर कहा गया सही शब्द एक उत्तम गहने के समान होता है।

मैं चर्च या सेवकाई से संबंधित विषयों को अपने घर ले जाने से बचने का प्रयास करता हूं। मैं पहले उन बातों को जानना चाहता हूं जो व्यक्तिगत तौर पर हर एक से संबंध रखती हैं—बच्चों ने स्कूल में कैसे पढ़ाई की, उस दिन उनके साथ क्या हुआ, आदि। मैं उन बातों के विषय में बातें करता हूं जिनमें बच्चों को रूचि है और चर्च और सेवकाई से संबंधित केवल उन बातों के विषय में बोलता हूं जो समयोचित और आवश्यक हैं। ये बातें होती हैं आने वाले विशेष कार्यक्रम, यदि मुझे यात्रा पर जाना पड़ता है तो उसकी समयसारणी, ऐसी बातें जो अंतदृष्टि प्रदान करें। घर में मैं किसी व्यक्ति के साथ हुई मुलाकातों की, उस दिन हुए परामर्श सत्र या शिक्षा सभाओं के विषय में चर्चा नहीं करता। इन सारी बातों का द्वारा मैं इस बात का ध्यान रखता हूं कि घर परिवार के स्थान है। इस स्थान में मैं एक कलीसिया के पासबान होने की भूमिका को हटाकर रखता हूं और परिवार में केवल पति और पिता बनकर रहता हूं। यह इस संदेश को भी निवेदन करता है कि मेरे परिवार के सदस्यों की सारी ज़रूरतें महत्वपूर्ण हैं और मैं यहां घर में उन ज़रूरतों को सुनने और सम्बोधित करने के लिए हूं।

अपने बच्चों के साथ समय बिताएं

नीतिवचन 22:6

लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।

जैसे जैसे सेवकाई बढ़ती और विस्तार होते जाती है, हमारे समय की मांगें बढ़ती जाती हैं, और हम जिस क्षेत्र में अपना समय चुराते हैं, वह है बच्चों के साथ बिताया जाने वाला समय। बच्चों के साथ खेलना, कहानी की किताबें पढ़कर सुनाना, "बच्चों की बातें करना," ये बातें परमेश्वर के लिए कैसे महत्वपूर्ण हो सकती हैं? अपने बच्चों के साथ हंसने और खेलने में समय बिताने का क्या उपयोग, जबकि लाखों लोगों को सुसमाचार सुनने की ज़रूरत है? मैं समझता हूं कि कई बार, अपने बच्चों के साथ समय बिताने हेतु आप यही दलील देते हैं, और अपने समय का उपयोग सेवकाई के काम के लिए करते हैं। परंतु, परमेश्वर ने हमें यह ज़िम्मेदारी दी है कि हम विश्वास में अपने बच्चों को शिक्षा दें और उनकी परवरिश करें। इस प्रकार का प्रशिक्षण और परवरिश उनके प्रेम, भरोसे और आदर को पाने हेतु उनके साथ समय बिताए बगैर कैसे होगी? केवल इस प्रकार के रिश्ते के द्वारा हम वास्तव में उनके जीवनों में योगदान दे सकते हैं और प्रभाव डाल सकते हैं।

अपने बच्चों के साथ समय बिताने हेतु, हमें उनके आसपास, उनके साथ रहना होगा और जो बातें उन्हें महत्वपूर्ण लगती हैं, उनमें रूचि प्रगट करना होगा। ऐसा नहीं है कि हर क्षण हम जब उनके साथ समय बिताते हैं, तब हम उनके साथ "आत्मिक बातें" करें। अक्सर केवल वे और हम साथ साथ रहें, देखें और उन बातों को सुनें जो उनके लिए अत्याधिक महत्व रखती है।

जो उनके लिए महत्वपूर्ण है, आपके लिए महत्वपूर्ण होना चाहिए

2 कुरिन्थियों 12:14

देखो, मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आने को तैयार हूं, और मैं तुम पर कोई भार न रखूंगा, क्योंकि मैं तुम्हारी सम्पत्ति नहीं वरन् तुम ही को चाहता हूं। क्योंकि बच्चों को माता-पिता के लिए धन बटोरना न चाहिए, परंतु माता-पिता को बच्चों के लिए।

माता-पिता होने के नाते हमारी दिलचस्पी इस बात में नहीं है कि हमारे बच्चे हमें क्या दे सकते हैं, या हमारे लिए क्या कर सकते हैं। परंतु इसके बजाए हम यहां पर उनके लिए हैं—उनके जीवन में योगदान देने हेतु, उनकी देखभाल करने हेतु, उनमें अपना संयोजन करने हेतु और उनके भविष्य का निर्माण करने हेतु। इसका अर्थ यह है कि हमें उनके साथ व्यस्त रहना होगा और उनके जीवनों में दिलचस्पी लेना होगा। उनके लिए जो महत्वपूर्ण है, वह हमारे लिए महत्वपूर्ण हो। हमें उनके स्तर पर उनकी भाषा में उनसे बातें करना चाहिए ताकि वे समझ सकें और हमसे व्यवहार कर सकें।

मेरे दोनों बच्चों के जीवनों में, मैं उन बातों में व्यस्त रहने का और उन बातों के विषय में बोलने का प्रयास करता हूं जिनमें उन्हें दिलचस्पी है। दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं और दोनों की अभिरूचियां भिन्न हैं। मेरी बेटी जो कि 13 वर्ष की है, अपने मित्रों के साथ समय बिताना, हस्तकार्य करना, रसोई में छोटी छोटी चीजें पकाना, टेनिस खेलना, कहानी की किताबें पढ़ना आदि बातों में दिलचस्पी रखती है। हमारे लिए ये बातें छोटी हो सकती हैं, परंतु इन बातों में हमें सहभागी होना है, ताकि हम उसके हृदय से जुड़ सकें। मेरा बेटा, जो कि 16 वर्ष का है, कम्प्युटर चलाना, उद्यमियों की जीवनियां पढ़ना, गिटार बजाना और फुटबॉल खेलना, आदि बातें पसंद करता है। इसलिए मुझे इन बातों में व्यस्त होने की ज़रूरत है ताकि मैं उसके हृदय से जुड़ सकूं। जो बातें उसके लिए महत्वपूर्ण हैं, मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं। जब हमारे बच्चे देखते हैं कि हम उन बातों में सच्ची दिलचस्पी रखते हैं, जिन बातों में उन्हें दिलचस्पी है, तब वे ध्यान देने लगते हैं, और उन बातों में दिलचस्पी रखने लगते हैं, जिनमें हमें रूचि है। अब हमें उनके जीवनों में बोलने का और उनके हृदयों पर लिखने का अधिकार मिल गया है।

एक बात में मुझे बहुत आनन्द आता है, वह है रात में अपने बच्चों को सुलाना। प्रार्थना करने से पहले, मुझे दोनों के साथ अकेले में बैठकर कुछ समय उनके साथ बिताने के लिए, उन्हें गले से लगाने और गुडनाईट कहकर उन्हें चुम्बन लेने के लिए समय मिल जाता है। परंतु ये अनमोल क्षण हैं। इन क्षणों में हम “दिल से दिल” मिलाकर बातें कर सकते हैं। उनके मन में क्या है, मैं सुन सकता हूं, और इन क्षणों में मैं उनके जीवनों में बोल

सकता हूं—छोटे वाक्य, साधारण बातें, परंतु ऐसी बातें जो उनके अस्तित्व के मुख्य भाग में स्थिर हो जाएंगी।

शिक्षा के क्षणों को सहजता से उपयोग करें। जब आप कुछ होते हुए देखते हैं और आपको लगता है कि उस घटना / परिस्थिति से सम्बंधित सरल सत्य आप बांट सकते हैं, तो आप उसका उपयोग कर उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाएं। इसे सरल बनाएं और छोटे वाक्यों में बोलें। लम्बे चौड़े उपदेश न दें। वे बोरियत महसूस करेंगे। केवल चार या पांच वाक्य बोलें और खत्म करें। अपने बच्चों को सहजता के साथ सिखाएं और फिर भी उद्देश्यपूर्ण ढंग से। दिन के किसी भी समय और जहां कहीं आप हैं, वह क्षण सनातन सत्य बांटने का उत्तम क्षण है। परमेश्वर ने हमें ऐसा करना सिखाया है: *"और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझको सुनाता हूं उन्हें अपने हृदयों पर लिख लें। उन्हें अपने अंदर ग्रहण कर लेवें और फिर अपने बच्चों के मनों में डालें। जहां कहीं आप हैं, उस विषय में बोलें, घर में बैठे, या मार्ग पर चलते; जब सुबह आप उठते हैं उस समय से लेकर जब आप रात को सोते हैं, तब तक उनके विषय में बोलें"* (व्यवस्थाविवरण 6:6,7, द मैसेज बाइबिल)।

ऐसा समय आता है जब मैं अपने बच्चों के साथ होता हूं और मैं कुछ आत्मिक सत्य बांटने का अवसर पाता हूं। कई बार ये वास्तविक भविष्यात्मक क्षण होते हैं जब परमेश्वर मुझसे कहता है कि मैं उनके जीवन में बोलूं। अर्थात्, मैं यह नहीं कहता, "प्रभु इस प्रकार कहता है!" बल्कि मैं सरल शब्दों में, उन बातों को निवेदन करता हूं जो परमेश्वर ने मेरे हृदय में डाली हैं, और वे उन्हें समझ जाते हैं।

हर साल एक या दो बार परिवार के साथ छुट्टी पर जाने का समय निर्धारित करना याद रखें। मुझे याद है कि आर्थिक परेशानियों या अन्य कामों के कारण ऐसा हमेशा सम्भव नहीं होता। परंतु जब कभी सम्भव हो, हर साल परिवार को नियमित रूप से छुट्टियों पर ले जाने की योजना बनाएं। पारिवारिक छुट्टियों का हमारा लक्ष्य मुख्य रूप से विश्राम करना है और अपनी व्यस्त समय-सारणी से अलग होना है, परंतु कुछ बातों को

यादगार बनाना भी है। हम अपने बच्चों के साथ एक सबसे बड़ा वरदान छोड़ सकते हैं, वह है घर में बड़े होने के वर्षों में कुछ सुखद यादें। ये अनमोल हैं और जब वे घर छोड़कर जाएंगे, तब लम्बे समय तक उन्हें याद रखेंगे। प्रतिदिन उनके लिए इन यादों को तैयार करने के अवसर हमारे पास होते हैं। और, ये विशेष क्षण हैं, जैसे पारिवारिक अवकाश, जन्मदिन आदि जो स्थायी यादें छोड़ जाते हैं।

व्यस्त मसीही सेवकों के लिए एक टिप्पणी। अपनी कार्यसूची से विश्राम लेने के लिए छुट्टी लेना, सेवकाई से कुछ समय अलग होना, और पारिवारिक अवकाश पर जाना "पाप" या संसारिक बात नहीं है। वस्तुतः, ऐसा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यीशु की ओर देखें। इस बात के विषय में वह विचारशील था और अपनी व्यस्त कार्यसूची के बीच वह विश्राम के क्षण निकालता था। *"प्रेरितों ने यीशु के पास इकट्ठे होकर, जो कुछ उन्होंने किया और सिखाया था, सब उसको बताया। यीशु ने उनसे कहा, "तुम आप" अलग किसी एकान्त स्थान में चलकर थोड़ा विश्राम करो। "क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे और उन्हें खाने का अवसर भी नहीं मिलता था। इसलिए वे नाव पर चढ़कर, "सुनसान जगह में अलग चले गए"* (मरकुस 6:30-32)।

अपनी पारिवारिक वेदी बनाएं

भजन संहिता 78:1-7

1 हे मेरे लोगो, मेरी शिक्षा सुनो; मेरे वचनों की ओर कान लगाओ!
2 मैं अपना मुंह नीतिवचन कहने के लिये खोलूंगा; मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूंगा,
3 जिन बातों को हम ने सुना, और जान लिया, और हमारे बाप दादों ने हम से वर्णन किया है।
4 उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगे, परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से, यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य और आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगे।
5 उसने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई, और इस्राएल में एक व्यवस्था चलाई, जिसके विषय उसने हमारे पितरों को आज्ञा दी, कि तुम इन्हें अपने अपने बाल-बच्चों को बताना;
6 कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात् जो बच्चे उत्पन्न होनेवाले हैं, वे इन्हें जानें; और अपने अपने बाल-बच्चों से इनका बखान करने में उद्यत हों,
7 जिस से वे परमेश्वर का भरोसा रखें, और परमेश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएं, परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें;

जैसा कि अधिकतर परिवार करते हैं, भोजन से पहले एक साथ प्रार्थना करने के अलावा, आराधना, वचन बांटने, और प्रार्थना के लिए नियमित रूप से इकट्ठा होने का अभ्यास करें। हमारे घर में, हमने यह समय शाम में रखा है। हम ऐसा प्रतिदिन नहीं करते—क्योंकि कुछ व्यवहारिक कारणों से कुछ दिन छुट जाते हैं। परंतु अधिकतर दिनों में, हम भोजन के बाद अपने पारिवारिक वेदी के निकट बैठते हैं। हम इस समय को सरल बनाए रखते हैं और मज़ेदार भी। हम ऐसा समय रखते हैं जब बच्चे उसमें शामिल हो सकें। हम इस समय का उपयोग परमेश्वर के वचन से सत्य सीखने के लिए करते हैं। बिना कुछ समझे केवल वचन पढ़ने या भक्ति की पुस्तक पढ़ने के बजाए सत्य सीखना अधिक महत्वपूर्ण है। हर समय हम भिन्न बातें करते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक समय था, जब हमने जीवन में परमेश्वर के स्वप्न और उद्देश्य रखने के विषय में बातें कीं। इस समय हम सीख रहे हैं कि हम मसीह में कौन हैं। अतः हम थोड़ा थोड़ा इन सच्चाइयों को प्रस्तुत करते हैं और उनकी उम्र के अनुसार प्रस्तुत करते हैं। पारिवारिक समय को संक्षिप्त, अर्थपूर्ण, लचीला, सहज, और समय समय पर अलग बनाए रखना महत्वपूर्ण है। कभी-कभी केवल हम प्रार्थना करते हैं, कभी-कभी परिवार के रूप में एक साथ केवल अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं या आराधना में समय बिताते हैं। परंतु ये एक साथ बिताए गए अनमोल क्षण हैं।

सेवकाई से पहले परिवार को महत्व दें

1 तीमुथियुस 3:4,5

4 अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से आधीन रखता हो।

5 (जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा?)

हम में से अधिकतर मसीही सेवक इस ज़रूरत के विषय में जानते हैं कि परमेश्वर के भवन में सेवकाई के लिए आगे बढ़ने से पहले हमें अपने घर का प्रबंध करना है, फिर भी हम अक्सर इसकी ओर नज़रअंदाज करते हैं। शायद सेवकाई की ये मांगें या कभी-कभी सेवकाई करने का रोमांच हमारे अपने घर और परिवार की देखभाल करने के सरल आनन्द से हमें अधिक

बढ़कर लगता है। इसलिए हमें खुद पर, अपने परिवारों पर जानबूझकर ध्यान देने की ज़रूरत है और देखें कि इन क्षेत्रों में हम कैसे कार्य कर रहे हैं। आवश्यकता पड़ने पर, हम धीमी गति अपनाएं या और अपनी सेवकाई की कार्यसूची को बदलें ताकि पहले हम अपने परिवार को सेवा प्रदान कर सकें। इस क्षेत्र में हम परिपूर्ण या सिद्ध होने का दावा नहीं करते। मैंने वर्षों से यह प्रयास किया है और अब भी कर रहा हूं और मेरे द्वारा स्वीकार किए गए सेवकाई के कामों और घर में बिताए जाने वाले समय के मध्य मैं संतुलन बनाने की कोशिश करता हूं। कुछ सेवकाई की कार्यसूचियों को मैं "ना" कहता हूं, केवल मैं घर में समय बिताना चाहता हूं, उदाहरण के तौर पर, सप्ताह के दौरान या किसी महीने कुछ निश्चित समय केवल परिवार के लिए निकालना उत्तम हो सकता है। उसी तरह, जब सम्भव हो, हम सेवकाई से विश्राम पाने हेतु और परिवार के साथ रहने हेतु समय निकाल लें।

तीन चार महीनों में कम से कम एक तौभी, जब मैं व्यक्तिगत् चुनौतियों में से होकर गुजरा हूं, मैंने यह निर्णय लिया कि मैं उस समय में प्रचार नहीं करूंगा। मैंने सेवकाई से अवकाश लिया और अतिथी वक्ताओं को बुलाया, और हमारे सहायक पासबानों ने हमारी रविवार की सभाओं में प्रचार किया।

लोगों के मध्य सेवा करते समय अपने परिवार की रक्षा करें

मसीही सेवकाई में होना पासबान होने के नाते न केवल आप पर असर करता है, बल्कि आपके परिवार पर भी करता है। परिवार को (पत्नी/पति और बच्चों को) जिन तनावों का सामना करना पड़ता है, उनमें से एक बड़ा तनाव है लोगों की अपेक्षाएं या उम्मीदें। लोग अपने आप आपके जीवनसाथी के लिए यह अपेक्षा करते हैं कि वे एक निश्चित रीति से व्यवहार करें। वे न केवल परमेश्वर के जन से यह अपेक्षा करते हैं, कि वे अभिषिक्त हों, परंतु वे प्रचारक की पत्नी से भी अपेक्षा करते हैं कि वह अभिषिक्त, वरदान प्राप्त हो, किसी विशिष्ट तरीके से आचरण करे और कुछ निश्चित काम करे। उसी तरह, लोग "प्रचारकों के बच्चों से या पासबानों के बच्चों" से हर प्रकार की अनुचित अपेक्षाएं रखते हैं, मानो उनके बच्चे स्वर्गदूत हों! अतः आपको लोगों की अनुचित अपेक्षाओं से अपने परिवार की रक्षा करने की ज़रूरत

है। अपने परिवार को वही होने की और करने की आज़ादी दें जो करने के लिए परमेश्वर ने उन्हे ठहराया है, लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयास न करें। मैं नहीं चाहता हूं कि मेरे बच्चे मण्डली को प्रभावित करने के लिए "चर्च गेम" खेलें। यही एक कारण हो सकता है कि कई "पासबानों के बच्चे" बड़े होने पर विद्रोही बन जाते हैं। शायद, जब वे बच्चे होते हैं, तब उनके माता-पिता ने उन पर ऐसे काम करने और इस प्रकार बनने हेतु दबाव डाला, जैसा वे नहीं बनना चाहते थे, केवल मण्डली के सामने अच्छा दिखाई देने के लिए। इसलिए जीवन में बाद में, वे स्थानीय कलीसिया से अप्रसन्न रहते हैं और उससे कोई सम्बंध नहीं रखना चाहते।

सुरक्षा का दूसरा क्षेत्र है, आपके घर में प्रवेश। मैं जो बताना चाहता हूं, वह हर एक के लिए, हो सकता है कि सम्भव न हो, परंतु इस पर विचार करना महत्वपूर्ण है। मैंने अपने घर को "घर" बनाए रखने का प्रयास किया है, और दफ्तर को वह स्थान बनाया है जहां पर लोग आकर चर्च के लिए या सेवकाई से सम्बंधित बातों के लिए मुझसे मिल सकते हैं। कुछ पासबान और प्रचारक मण्डली के हर एक के लिए अपना घर खुला रखते हैं। मुझे नहीं लगता कि यह अच्छा विचार है—यह केवल मेरी व्यक्तिगत् राय है। घर वह स्थान होना है जहां पति, पत्नी, बच्चे एक साथ समय बिता सकें और एक साथ बढ़ सकें। परंतु यदि घर ऐसा स्थान बन जाता है जहां रात और दिन, सप्ताह के सातों दिन, मण्डली के सभी सदस्यों के लिए मिलने का स्थान हो, और पासबान के परिवार को निजी समय न मिले—तो इसका पासबान के परिवार पर असर हो सकता है। हम अपने घर में लोगों के साथ समय नहीं बिताते, और हमने घर में छोटी सभाएं, सम्मेलन, सहभागिता के समयों को आयोजित किया है, परंतु ये सूचीबद्ध कार्यक्रम हैं, ऐसा प्रतिदिन नहीं होता है।

बाहर कदम न रखें, घर में कदम रखें

उत्पत्ति 2:24

इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बनें रहेंगे।

पुरुष और स्त्री जो विवाह में एकजुट हुए हैं एक हो गए हैं। हम इसे एक विवाह के दायरे के रूप में कल्पना कर सकते हैं जिसमें केवल इस पुरुष और स्त्री को अनुमति है। अन्य किसी भी व्यक्ति को विवाह के दायरे में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। जब हम विवाह के इस दायरे का आदर करते हैं, तब हम परमेश्वर का आदर करते हैं जिसने विवाह की स्थापना की। हम मसीही सेवकों के लिए, हमें इस बात का ध्यान रखते हुए परमेश्वर का आदर करना है कि हम अपने विवाह के दायरे से बाहर कदम न रखें, और इस बात का भी ध्यान रखें कि हम किसी और के विवाह के दायरे में कदम न रखें। चाहे कोई भी कारण या ज़रूरतें हों, विवाह के दायरे की यह सीमा का उल्लंघन न किया जाए। हमें इस सीमा के अंतर्गत रहकर कार्य करना सीखना है। यह उस समय विशेष तौर पर महत्वपूर्ण हो जाता है, जब हम दूसरे विवाहित दम्पत्तियों की या विरूद्ध लिंगी अविवाहित व्यक्ति की सेवा प्रदान करते हैं।

आवश्यकता पड़ते ही सहायता प्राप्त करें

इफिसियों 4:16

जिससे सारी देह, हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के ठीक-ठीक कार्य करने केद्वारा उस में होता है अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

वस्तुस्थिति यह है कि हम में से जो लोग मसीही सेवकाई में हैं वे भी अपने विवाह और पारिवारिक जीवनों में संघर्ष करते हैं। बाकी सभी लोगों के समान हमें भी चुनौतियों, तनावों, परीक्षाओं, और दबाव का सामना करना पड़ता है—कई मामलों में, शायद अन्य लोगों से अधिक। हम मसीही सेवकाई में हैं इसका यह अर्थ नहीं है कि हमें “सेवकाई” की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर ने कुछ क्षेत्रों में हमें बुलाया, अभिषेक किया और वरदान दिया है। पर अन्य कुछ लोग हैं जिन्हें उसने अन्य क्षेत्रों में बुलाया, अभिषेक किया, और वरदान दिया है, उदाहरण के तौर पर, वैवाहिक जीवनों, घरों और परिवारों को सशक्त बनाना, पैसों के प्रबंधन में सहायता करना, संगठन और प्रशासन में सहायता करना, जिन बातों की लत है उन आदतों से छुटकारा पाने में मदद करना, आदि—हमें उनसे सेवकाई पाना सीखने की ज़रूरत है।

हम एक देह के अंग हैं, जहां हर एक अंग दूसरे के हित के लिए योगदान देता है ताकि सम्पूर्ण शरीर बढ़ सके और उन्नति पा सके। इसका अर्थ, हमें एक दूसरे से प्राप्त करना सीखना है।

सबसे पहले हम मसीही सेवकों के लिए यह चुनौती देता है कि हम इस बात को कबूल करें कि हमारे पास ज़रूरत है। अक्सर, जब हम अपने वैवाहिक जीवन, पैसों, संगठनों, आदतों (लत) या चरित्र में दोष आदि बातों के विषय में समस्याओं और चुनौतियों का सामना करते हैं, तब हम उस समस्या को आत्मिक बना देते हैं, शैतान को दोष देते हैं और यह निष्कर्ष निकालते हैं कि हम पर आत्मिक हमला हो रहा है। इन क्षेत्रों में हमें आत्मिक हस्तक्षेप की वास्तविकता को नज़रअंदाज नहीं करना चाहिए, परंतु साथ ही साथ हमें इस बात का भी अहसास रखना है कि जिन समस्याओं का हम सामना करते हैं, उनमें से कई समस्याएं हम में पाए जाने वाले दोष और कमज़ोरियों के कारण या जिनके साथ हम व्यवहार करते हैं उनके कारण होती हैं, जिनमें सुधार लाने की ज़रूरत होती है। इस सच्चाई का सामना करने हेतु बहुत अधिक नम्रता की आवश्यकता है कि भले ही हमें परमेश्वर ने बुलाया और अभिषेक किया है, फिर भी हम में अपने चरित्र दोष, सीमाएं, गलत आचरण हैं जिनमें सुधार की ज़रूरत है।

हम मसीही सेवकों के लिए अगली चुनौती यह है कि हम आवश्यक सहायता प्राप्त करें—हम यह नहीं जानते कि कहां से सहायता प्राप्त करें और यह सच्चाई जीवन के किसी क्षेत्र में जो सहायता हम पा रहे हैं, वह हमारी सेवकाई में रूकावट लाएगी। हम ऐसे गुण प्राप्त लोगों को जानते होंगे जो हमारी समस्याओं में हमारी सहायता कर सकते हैं, परंतु उन लोगों के पास जाने से हम हिचकिचाते हैं क्योंकि वे हमारे साथी हो सकते हैं या मसीही संसार में वे हमारे समान महत्वपूर्ण न हों। हमारा घमण्ड आड़े आता है। दूसरा कारण, हम में यह भय होता है कि यदि हम अपनी समस्या दूसरों के सामने उजागर करेंगे तो वे उस बात को गुप्त नहीं रखेंगे या वे जाकर उस विषय में सारे शहर में चर्चा करेंगे और फिर सारे मसीही समाज में यह बात आग की तरह फैल जाएगी।

इन चुनौतियों के होते हुए, हम अक्सर इस आशा से अपनी निजी समस्याओं को नज़रअंदाज कर देते हैं कि वे मिट जाएगी, या हम उन्हें सेवकाई के बहाने से छिपा देते हैं क्योंकि हमें सहायता पाने में संकोच होता है। अधिकतर मामलों में, समस्या सतह के नीचे उबलती रहती है, और एक दिन एक भयानक धमाका होता है जो हर किसी को अचम्भित, लज्जित और भौंचक्का कर देता है। इसके परिणाम हम दोनों के लिए हानिकारक हो सकते हैं और उन लोगों के लिए भी जो हमारी ओर आत्मिक अगुवों के रूप में देखते हैं, और कई लोग दुखी और आहत हो जाते हैं। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम विलम्ब न करें—परंतु जैसे ही हम अपनी ज़रूरत को महसूस करते हैं, जल्द से जल्द सहायता प्राप्त करें। हमें अपने घमण्ड और भय को हटाकर रखना है, और प्रार्थनापूर्वक ऐसे किसी व्यक्ति के पास जाना है जो हमारी सहायता करने की योग्यता रखता हो, उन पर भरोसा रखें और उनसे आवश्यक सहायता प्राप्त करें। बिना किसी बात को रोकते हुए, उन्हें हमारे जीवनों में बोलने की आज़ादी दें। हमें खुद को परमेश्वर के और उसके सेवकों के सामने नम्र बनाना है और उस सुधार को स्वीकार करना है जो वे हमारे जीवनों में लाएंगे। इस सुधार को स्वीकार करने से हमारा जीवन और हमारे जीवनों से जुड़े हुए अन्य कई लोगों का जीवन बच सकता है। *"जो शिक्षा पर चलता, वह जीवन के मार्ग पर है, परन्तु जो डांट से मुंह मोड़ता, वह भटकता है"* (नीतिवचन 10:17)। *"जो शिक्षा पाने में प्रीति रखता है वह ज्ञान में प्रीति रखता है, परन्तु जो डांट से बैर रखता, वह पशु सरीखा है"* (नीतिवचन 12:1)।

आपकी सेवकाई पारिवारिक व्यवसाय नहीं है

यशायाह 59:21

यहोवा यह कहता है, "जो वाचा मैंने उनसे बान्धी है वह यह है, कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैंने तेरे मुंह में डाले हैं अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मुंह से, और तेरे पुत्रों और पोतों के मुंह से भी कभी न हटेंगे।"

यह परमेश्वर की योजना और उद्देश्य है कि एक पीढ़ी को दिया गया विश्वास, प्रकाशन, और अभिषेक अगली पीढ़ी को दिया जाए। यह परमेश्वर का उद्देश्य है कि हर पीढ़ी पिछली पीढ़ी की बुनियाद पर निर्माण करती है।

इसलिए, सम्पूर्ण परिवारों और एक परिवार की कई पीढ़ियों के लोगों को प्रभु करते और उसके कार्य करते हुए देखना हमेशा अद्‌भुत बात होती है। यह देखना हमेशा ही अनोखा दृष्य है और आनन्द मनाने, और परमेश्वर की स्तुति करने की बात है। परिवार के हर सदस्य को विभिन्न क्षेत्रों में वरदान और अभिषेक मिला होगा। हर एक परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त अपने स्थान में हैं और फिर भी वे सब मसीह की देह के लिए एक बड़ी ईकाई के रूप में एक साथ मिलकर काम करते और आगे बढ़ते हैं। यह सचमुच परमेश्वर का अजीब कार्य है।

परंतु, दूसरी ओर, परमेश्वर जो करना चाहता है, उस भक्तिपूर्ण कार्य की हम गलत अभिव्यक्ति देखते हैं। कुछ कलीसियाओं और सेवकाइयों में, हम ज़िम्मेदारी के महत्वपूर्ण पद परिवार के सदस्यों से भरे हुए देखते हैं। इसमें बुरी बात यह है कि इन परिवार के सदस्यों में से कई इसके लिए अयोग्य हो सकते हैं, उन भूमिकाओं के लिए आवश्यक वरदान और अनुग्रह उनके पास न हो। परंतु, सम्पूर्ण कलीसिया या सेवकाई इस तरह चलाई जाती है, मानो वह पारिवारिक कारोबार हो। बाहर के लोगों को थोड़ी ज़िम्मेदारी दी जाती है। ऐसे परिवारों द्वारा चलाई जाने वाली सेवकाई में सबकुछ तब गलत होने लगता है, जब "परिवार के सदस्यों द्वारा" ऐसे पदों को विभूषित किया जाता है जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें नहीं बुलाया है। इसमें से अधिकतर गलत कारणों से होता है और जिसके भयानक परिणाम हो सकते हैं, एली के पुत्रों के समान (1 शमुएल 2:22-25) या शमुएल के पुत्रों के समान (1 शमुएल 8:1-3)।

हम अपने बच्चों और पोतों को प्रभु की सेवा में उठते हुए और हमारे नक्शकदमों पर चलते हुए देखने के लिए उत्सुक हैं, परंतु हमें यह स्मरण रखना है कि वे उनके जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना का अनुसरण करें और उनकी पीढ़ी में उसकी इच्छा को पूरा करें। हर कोई परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए गए निर्धारित स्थान को ग्रहण करे, न कि मनुष्य की इच्छाओं के अनुसार। *"परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है"* (1 कुरिन्थियों 12:18)।

लोग

क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।

(1 कुरिन्थियों 3:9)

अध्याय 3

3
लोग

मसीही सेवक होने के नाते, यदि हम सतर्क न रहे, तो हम सेवकाई की मुख्य बात को पूर्ण रूप से "खो बैठेंगे।" हम अंत में अपनी सेवकाई को एक कारोबार बना बैठेंगे—सुसंगठित प्रशासन जिसमें आधुनिक साधन, उपकरण और संसाधन हैं; या कार्यक्रम पंबंधन के एक कार्य के रूप में—बड़ी बड़ी जनसभाएं, उत्तम विज्ञापन, युक्तिपूर्ण तरक्कियां, चालाकी से धन इकट्ठा करना आदि; या नेटवर्किंग और जनसंपर्क का कार्य—अत्यंत प्रभावशाली लोगों से संबंध बनाना, ऊंचे ओहदे वाले लोगों से मधुरता के साथ वार्तालाप ताकि वे हमें बढ़ावा देने वालों में से हों। यह सबकुछ "मसीही सेवकाई" की शारीरिक और संसारिक अभिव्यक्ति है, जो मैं सोचता हूं कि परमेश्वर के सामने असहनीय बदबू के समान है! अनंतकाल बताएगा! हम मुख्य बात भूल जाते हैं कि मसीही सेवकाई लोगों के विषय में है—परमेश्वर के प्रेम और सामर्थ से लोगों के जीवनों को छूना है ताकि हम उन्हें शैतान के चंगुल से छुड़ाए जाते हुए और परमेश्वर की अद्भुत ज्योति में लाए जाते हुए, मसीह की समानता में बढ़ते हुए और उनके जीवन में परमेश्वर द्वारा दिए गए लक्ष्य को पूरा करने हेतु मुक्त किए हुए देख सकें। मसीही सेवकाई यह नहीं है कि हम कितनी पुस्तकें लिखते हैं, हमारे पास लोगों की विशाल भीड़ है या नहीं, सामाजिक मीडिया साईड पर बहुत सारे लोग हमें पढ़ते हैं या नहीं या हम अत्याधिक लोकप्रिय टी.वी. पर हैं या नहीं। मसीही सेवकाई लोगों से सम्बंधित है—उनकी यीशु मसीह से भेंट कराना और उन्हें उसके स्वरूप में बदलते हुए देखना।

और फिर भी मसीही सेवकाई में हम जिन सबसे बड़ी चुनौतियों का सामना करते हैं, वह है लोगों के साथ व्यवहार करना और उनके साथ काम करना। लोगों के साथ अच्छी तरह कैसे बर्ताव करें, अगुवाई करना, प्रबंध करना, मार्गदर्शन करना, सुधारना, सुसज्जित करना, सशक्त बनाना,

और फिर लोगों को उनके लक्ष्य में आगे बढ़ने हेतु छोड़ देना, इन बातों को समझना सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा अनुभव हैं जो हम मसीही सेवकाई में पा सकते हैं।

हम गलतियां करेंगे और शायद हमारे मार्ग में "झटके भी खाएंगे," परंतु यदि हम लोगों की उन्नति करना नहीं छोड़ेंगे, तो हम बड़े प्रतिफल देखेंगे।

सेवकाई का संबंध लोगों की उन्नति करने से

1 कुरिन्थियों 3:9
... तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।

2 कुरिन्थियों 3:2
हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है, और उसे सब मनुष्य पहचानते और पढ़ते हैं।

1 थिस्सलुनीकियों 2:19,20
19 भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होंगे?
20 हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।

1 कुरिन्थियों 3 में प्रेरित पौलुस कुरिन्थुस की सेवकाई से संबंधित बातों को संबोधित करता है, विशेषकर दो सेवकों अपुल्लोस और वह स्वयं, तब वह इस बात पर ज़ोर देता है कि लोग "परमेश्वर का खेत" हैं, और लोग "परमेश्वर की इमारत" हैं। सबके अंत में, अपुल्लोस और पौलुस परमेश्वर का भवन बना रहे थे–जो कि लोग हैं। अपुल्लोस और पौलुस दोनों परमेश्वर के खेत में परिश्रम कर रहे थे–जो लोग हैं। अतः, हम चाहे जिस प्रकार की सेवकाई करते हों, हम परमेश्वर के खेत पर काम कर रहे हैं और परमेश्वर का भवन बना रहे हैं, जो कि "लोग" हैं। मसीही सेवकाई लोगों की सेवा करना और उनकी उन्नति करना है।

दुख की बात यह है कि हममें से कई मसीही सेवक लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं मानों वे ऐसी "वस्तुएं" हो जिनके सहारे हम अपने कार्यक्रमों को पूरा कर सकते हैं। हम चाहते हैं कि भीड़ हमारे पास आए और लोगों की विशाल भीड़ संख्या बन कर रह जाए जिनसे हम बोलते हैं।

हम पैसा चाहते हैं, और लोग उस पैसों का मात्र माध्यम बन जाते हैं। हमें लगता है कि हमें परमेश्वर ने बुलाया है और लोग केवल हमारी सेवा करने के लिए और हमारी बुलाहट को पूरा करने के लिए हैं। वास्तव में माना जाता है कि यह इसके बिलकुल विपरीत है। हम यहां पर परमेश्वर के सेवक हैं ताकि लोगों की सेवा करें और उनकी सेवकाई पूरा करने हेतु लोगों की (पवित्र जनों) सहायता कर सकें। हम यहां पर उन लोगों के लिए हैं। हम यहां पर लोगों को उठाने के लिए हैं—इसलिए नहीं कि लोग हमें उठाएं।

लोग हमारे दिलों पर लिखे होने चाहिए। तभी हम यह देख सकते हैं कि हम यहां पर उनकी सेवा करने के लिए हैं, उनका उपयोग करने के लिए नहीं। जब हम प्रभु से मिलेंगे, तब हमारा "आनंद और मुकुट" हमारे द्वारा लिखी गई पुस्तकें नहीं होंगी, हमारे द्वारा प्रचार किए गए प्रवचन नहीं होंगे, हमारे द्वारा यात्रा किए गए स्थान नहीं होंगे, हमारे द्वारा बनाए हुए भवन नहीं होंगे, बल्कि हमारा आनन्द और मुकुट वे लोग होंगे, जिन्हें हमने प्रभु के पास लाकर और उसके स्वरूप में बढ़ने में उनकी सहायता करके उनकी सेवा की।

उन्नति विभिन्न स्तरों में होती है—धीरज के साथ मिलकर यात्रा करें

इब्रानियों 5:12-14

12 समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तोभी यह आवश्यक हो गया है कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए। तुम तो ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए।
13 क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है।
14 पर अन्न सयानों के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते, भले-बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।

इब्रानियों 6:1-3

1 इसलिए आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर हम *सिद्धता* की ओर बढ़ते जाएँ, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने,
2 और बपतिस्मा और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अनन्त न्याय की शिक्षारूपी नींव, फिर से न डालें।

[3] **और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे।**

हमारे लिए, विशेषकर हम में से उन लोगों के लिए जो पासबान हैं और स्थानीय कलीसियाओं की अगुवाई करते हैं, यह महत्वपूर्ण है कि हम आत्मिक उन्नति और परिपक्वता के साथ लोगों के साथ धीरजपूर्ण यात्रा करें। हमें उस दर्शन और लक्ष्य में भी धीरज के साथ यात्रा करना है, जो परमेश्वर ने स्थानीय कलीसिया के लिए नियुक्त किया है। लोगों की सेवा जहां वे हैं, वहां से करें और उन्नति और परिपक्वता के ऊंचे स्तरों में आगे बढ़ने हेतु कदम उठाने में उनकी सहायता करें। प्रभु यीशु ने इसी तरह अपने शिष्यों की सेवा की। वह उद्देश्यपूर्ण ढंग से बोलता था और ऐसी बातें बोलता था जिसे वे उस समय ग्रहण कर पाते थे, और जिन बातों को वे ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं थे, उन्हें वह रोककर रखता था। ""*ये बातें मैंने तुमसे इसलिए कही कि तुम ठोकर न खाओ। परन्तु ये बातें मैंने इसलिए तुमसे कही कि जब उनका समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था, "मैंने आरंभ में तुमसे ये बातें इसलिए नहीं कही क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। "मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते"* (यूहन्ना 16:1,4,12)।

इसका अर्थ यह है कि हमें अपने प्रचार और शिक्षा में उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। हमें केवल आराधना के समय को पूरा करने के लिए संदेशों का प्रचार नहीं करना है। बल्कि प्रत्येक संदेश उस यात्रा में एक कदम है—मण्डली को आत्मिक परिपक्वता में और परमेश्वर के हमारे लक्ष्य में आगे बढ़ने में मण्डली की सहायता करना है।

उस आत्मिक स्तर को जानें जहां पर लोग हैं और उस स्तर से आरम्भ करते हुए उन्हें सेवा प्रदान करें। परंतु, आपका प्रचार करना और सिखाना उन्हें अगले स्तर पर ले जाना वाला हो। उन्नति विभिन्न स्तरों में होती है, इसलिए लोगों को स्तर-ब-स्तर नये स्तरों की ओर ले जाएं। हो सकता है कि आप बहुत ऊंचे स्तर पर हों—परंतु आपको अपनी मण्डली के साथ धीरज के साथ कार्य करते हुए आप जिस स्तर पर हैं उसमें बढ़ाने हेतु उनकी सहायता करने की ज़रूरत है।

उसी तरह याद रखें, मण्डली के लोग जो पसंद करते हैं, वह हम प्रचार नहीं कर सकते—क्योंकि अलग अलग लोग अलग अलग बातें सुनना चाहेंगे। कुछ लोगों को लगेगा कि हमें "अंत के समयों" के विषय में प्रचार करने की ज़रूरत है। अन्य कुछ लोगों को लगेगा कि हमें शिष्यता और सहभागिता के विषय में बोलने की ज़रूरत है। और कुछ लोग महसूस करते हैं कि हमें सुसमाचार प्रचार और मिशनों आदि पर ज़ोर देना चाहिए। स्थानीय मण्डली में पासबान या अगुवा होने के नाते, आप इन मांगों को पूरा नहीं कर सकते और विभिन्न लोगों की दिलचस्पियों के अनुसार कार्य नहीं कर सकते। आपको स्पष्ट रूप से यह जानना है कि मण्डली आत्मिक तौर पर कहां है और परमेश्वर किस दिशा में मण्डली को बढ़ाना चाहता है, और उन्हें वहां ले जाएं। समय समय पर, स्तर-ब-स्तर एक साथ यात्रा करें। हर ॠतु में दिया जाने वाला महत्व अगले ॠतु की ओर एक पायदान का पत्थर होगा जिसका विश्वासियों की स्थानीय मण्डली इंतजार कर रही है।

हर एक का आदर करें

रोमियों 12:10

भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।

मत्ती 10:42

जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाएगा, मैं तुमसे सच कहता हूं, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा।"

हमें हर एक के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना है—चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, उनकी सामाजिक, आर्थिक, शिक्षात्मक, वांशिक, या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जो हो। हमें लोगों का सम्मान भी करना है और उनके विभिन्न फिरकों के साथ सलग्नता के कारण उनके विरोध में भेदभाव नहीं करना है। कई प्रकार की कमियां हो सकती हैं परंतु हमें हर एक व्यक्ति में अच्छाई को देखना सीखना है। जब हम अपना वचन देते हैं, तब व्यक्ति चाहे छोटा हो, दीन हो, या सामाजिक रीति से महत्वहीन, हमें अपने वचन को निभाना है। कभी-कभी हम उन लोगों का आदर करते हैं, जो सामाजिक तौर पर

या आर्थिक तौर पर सामर्थी या प्रभावशाली होता है। परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटे को प्रदान की गई सरल से सरल सेवा, इसलिए दुर्लक्षित नहीं की जाएगी क्योंकि वे परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं।

जब व्यक्ति लोगों के साथ केवल जनसंपर्क बनाने के लिए रिश्ता रखता है, और जब व्यक्ति अपने हृदय की गहराई में लोगों की सच्ची निगरानी करने के लिए उनसे सम्पर्क रखता है, तो इनके बीच आसानी से फर्क देखा जाता है। जब आप लोगों से सम्पर्क करते हैं, तो इसलिए करें क्योंकि आप उनकी सचमुच परवाह करते हैं।

अगुवों, प्राचीनों, पिताओं का आदर करें

1 तीमुथियुस 5:17
जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएँ।

1 थिस्सलुनीकियों 5:12,13
12 हे भाइयो, हम तुमसे बिनती करते हैं कि जो तुममें परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनका सम्मान करो।
13 और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो। आपस में मेलमिलाप से रहो।

जो हमारे आत्मिक अगुवे हैं, विशेष तौर पर वे जो हमें परमेश्वर का वचन सुनाकर सेवा प्रदान करते हैं, उन्हें हमें "दुगुना आदर" देने के लिए कहा गया है। हमें अपने आत्मिक अगुवों, प्राचीनों और पिताओं की ओर बड़े आदर के साथ देखना है। समय बदल सकता है, और उसके साथ कई बातें भी बदल जाती हैं, परंतु हमें उन लोगों का निरंतर आदर करते रहना है, जो विश्वास की इस यात्रा में हमसे आगे चल रहे हैं। हम युवा सेवक तंत्र "विज्ञान का ज्यादा ज्ञान" (टेक्नो-सैवी) रखते हैं और बुजुर्ग सेवकों से अधिक फुर्ति से और अधिक कार्यक्षमता के साथ कार्य कर सकते हैं, इसलिए हम उनसे बेहतर नहीं हो जाते। हमें उनका आदर और सम्मान करना है, विशेष तौर पर जो कुछ उन्होंने परमेश्वर के राज्य के लिए पहले

ही हासिल किया है, उस कारण। आदर रखना इसका मतलब है सम्मान के साथ उस व्यक्ति की ओर देखना, यह उनका आदर करना है, इसका मतलब है अपने ही मार्ग पर अड़े रहने के बजाए उनके निर्णयों को स्वीकार करना, खुद को उनकी बराबरी में रखने के बजाए उन्हें पहले मान्यता और प्राथमिकता देना।

पक्षपात न करें

1 तीमुथियुस 5:21

परमेश्वर, और मसीह यीशु और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चेतावनी देता हूं कि तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम पक्षपात से न कर।

याकूब 2:1-9

1 हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुममें पक्षपात के साथ न हो।
2 क्योंकि यदि एक पुरुष सोने के छल्ले और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए तुम्हारी सभा में आए और एक कंगाल भी मैले कुचैले कपड़े पहने हुए आए,
3 और तुम उस सुन्दर वस्त्रवाले का मुंह देखकर कहो "तू यहां अच्छी जगह बैठ"; और उस कंगाल से कहो, कि "तू यहां खड़ा रह", या "मेरे पांवों की पीढ़ी के पास बैठ",
4 तो क्या तुमने आपस में भेदभाव न किया और कुविचार से न्याय करनेवाले न ठहरे?
5 हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो, क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं?
6 पर तुम उस कंगाल का अपमान किया। क्या धनी लोग तुम पर अत्याचार नहीं करते और क्या वे ही तुम्हें कचहरियों में घसीट घसीट कर नहीं ले जाते?
7 क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिसके तुम कहलाए जाते हो?
8 तौभी यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस वचन के अनुसार कि "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" सचमुच उस राज्य व्यवस्था को पूरी करते हो, तो अच्छा ही करते हो।
9 परंतु यदि तुम पक्षपात करते हो तो पाप करते हो; और व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती है।

जब हम लोगों के साथ काम करते हैं, और उनसे सम्पर्क करते हैं, तो हमें इस आज्ञा को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। लोगों के लिए और लोगों के प्रति निर्णय लेते समय हमें बिना व्यक्तिगत् पूर्वाग्रह और बिना पक्षपात

के ऐसा करना चाहिए। प्रेरित पौलुस युवा सेवक तीमुथियुस को इसी तरह अगुवाई करने और परमेश्वर के लोगों की सेवा करने हेतु सिखा रहा था। यह दिलचस्पी की बात है कि तीमुथियुस पर यह ज़िम्मेदारी सौंपते हुए, पौलुस उसे स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह, और चुने हुए स्वर्गदूत लोगों के साथ हमारे व्यवहार के गवाह हैं। दूसरे शब्दों में, यह एक गंभीर और महत्वपूर्ण आज्ञा है, जिसे हमें टालना नहीं चाहिए और लोगों के साथ व्यवहार करने की हमारी मन्शा को हम छिपा नहीं सकते।

यह हम में से उन लोगों के लिए सच है, जो पासबान हैं और हमारे मण्डली में हमारे साथ आराधना करने के लिए आने वाले लोगों के साथ हम कैसा व्यवहार करते हैं इस विषय में भी यह सच है। याकूब इसी प्रकार की घटना को सम्बोधित करता है और चेतावनी देता है कि यदि हम पक्षपात करते हैं या लोगों के सामाजिक, सांस्कृतिक, वांशिक या आर्थिक दर्जे के आधार पर लोगों के साथ भिन्न व्यवहार करते हैं, तो हम पाप करते हैं। हमें सभी लोगों के लिए जिनके साथ हम काम करते हैं और जिनसे हम सम्पर्क करते हैं, समान मानकों को बनाए रखना है। उदाहरण के तौर पर, हमारी स्थानीय कलीसिया में, आरम्भ के दिनों में, मैंने यह आदत बनाई थी कि यदि महत्वपूर्ण लोग हमारे साथ आराधना करने के लिए आते हैं, तो हम सार्वजनिक तौर पर उनके लिए तालियां न बजाएं और न उन्हें मान्यता दें। मैं उन्हें मण्डली में बैठने देता था, और जो वे करने के लिए आए हैं, उन्हें करने देता—परमेश्वर की आराधना करने और उसके वचन की सेवकाई को पाने। ऐसा नहीं है कि मैं निजी रूप से उन्हें मान्यता नहीं देता, परंतु हम मण्डली में ऐसा नहीं करना चाहते, जहां पर हम सभी परमेश्वर के सामने समान स्तर पर हैं, फिर हमारा संसारिक दर्जा कुछ भी क्यों न हो उसी तरह, हमारी कलीसिया की सेवकाई की टीम में लोगों को भूमिकाएं देते समय, मैंने हमेशा उन लोगों को मान्यता देने और ज़िम्मेदारी सौंपने का अधिकार बनाया है, जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया और वरदान दिया है और ऐसा मैं अच्छे हृदय के साथ और उस विशिष्ट सेवकाई के जो पूर्ण रूप से अनुरूप हो उसके अनुसार करता हूं। हम लिंग भेद, सांस्कृतिक, सामाजिक या अन्य कारकों के आधार पर भेदभाव या मतभेद नहीं रखते। उसी तरह

अनुशासन और सुधार पर अमल करते समय, हम हर एक के साथ समान और न्यायपूर्ण व्यवहार करते हैं। हम सभी समतल भूमि पर खड़े हैं।

धन्यवाद की भावना रखें, "धन्यवाद" कहें!

रोमियों 16:3,4

3 प्रिस्का और अक्विला को जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार।
4 उन्होंने मेरे प्राण के लिए अपना ही जीवन जोखिम में डाल दिया था; और केवल मैं ही नहीं, वरन् अन्य जातियों की सारी कलीसियाएं भी उनका धन्यवाद करती हैं।

1 थिस्सलुनीकियों 1:2

हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं,

हमें उन लोगों के लिए प्रभु के प्रति उपकारबुद्धि रखना सीखना चाहिए, जिन्हें उसने हमारे आसपास रखा है। लोगों के लिए प्रभु का धन्यवाद मात्र देना इस बात का दर्शक है कि हमें इस बात का अहसास है कि हम कौन हैं, हमारे अपने महान प्रयासों के कारण नहीं, परंतु परमेश्वर के अनुग्रह के कारण और हमारे साथ वाले लोगों की सहायता से। हमें लोगों की सराहना भी करना है, उन बातों के लिए जो वे हमारे साथ रहकर करते हैं। अक्सर, हम सेवक कई बातों को "सहजता से लेते हैं" जो लोग हमारे लिए करते हैं। ऐसा लगता है कि लोगों से सहायता पाना, सहारा और प्रोत्साहन पाना हमारा अधिकार है। जिसने आपकी सेवा की है, किसी तरह हमारी मदद की है, या हमें सहारा दिया है, उसे सरल शब्दों में "धन्यवाद" कहना सीखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब कोई आपको दान देता है, तो "धन्यवाद!" कहना न भूलें। जब किसी व्यक्ति ने किसी तरह से आपकी सहायता की है, चाहे छोटी क्यों न हों, तो उन्हें उसके लिए धन्यवाद कहना न भूलें। लोगों को यह जानने की ज़रूरत है कि जो कुछ भी वे करते हैं उसकी आप सच्चे मन से सराहना करते हैं।

जब कोई आपसे गुप्त में कुछ कहता है, तो उसे गोपनीय बनाए रखें

नीतिवचन 10:19

जहां बहुत बातें होती हैं, वहा अपराध भी होता है, परन्तु जो अपने मुंह को बन्द रखता वह बुध्दि से काम करता है।

2 तीमुथियुस 2:16
पर अशुद्ध बकवाद से बचा रह; क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति में बढ़ते जाएंगे।

परमेश्वर के सेवक होने के नाते, लोग अक्सर अपनी व्यक्तिगत समस्याएं और संघर्ष लेकर हमारे पास आते हैं और हमसे ईश्वरीय परामर्श और प्रार्थना और प्रोत्साहन पाना चाहते हैं। वे अक्सर हम पर भरोसा रखकर अपनी अत्यंत निजी और व्यक्तिगत बातों को हमें बताते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हम इन बातों को दूसरों के सामने न दोहराएं और न ही सार्वजनिक तौर पर उनके विषय में बताएं। हमें सावधानी बरतना है कि कहां पर उस विशिष्ट घटना का उपयोग हमारे प्रचार में उदाहरण के तौर पर करें, ताकि अन्य लोग वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से शिक्षा पा सकें। नियमानुसार, मैं अपने प्रवचनों में लोगों के व्यक्तिगत् मामलों / निजी संघर्षों के विषय में उदाहरण के तौर पर अपने ज्ञान का उपयोग नहीं करता। ऐसी बातों के विषय में लोगों के सामने चर्चा करना उचित नहीं है, क्योंकि वे आप पर भरोसा रखते हुए कि आप उनकी बातों को गोपनीय बनाए रखेंगे आपके पास सहायता के लिए आए हैं। जब हम उदाहरण के तौर पर लोगों के साथ वार्तालाप का उपयोग करते हैं, तब हमें उन्हें आम शब्दों में करना चाहिए, उस व्यक्ति की पहचान को सबके सामने प्रगट न करें। ऐसा उस परिवेश में करना उत्तम होगा जहां पर वह व्यक्ति उपस्थित न हो, ताकि अन्य लोग किसी भी रीति से उन्हें पहचान न सकें। अन्य सेवकों के साथ “गपशप” लड़ाते समय या “बकवास” करते समय भी उसका उपयोग नहीं करना चाहिए। जो गुप्त रूप में बताया गया है वह गोपनीय बना रहे। इसी तरह से हम लोगों का भरोसा प्राप्त करते हैं।

लोगों को बड़े प्रेम के साथ सुधारें

1 कुरिन्थियों 16:14
जो कुछ करते हो प्रेम से करो।

2 कुरिन्थियों 13:10
इस कारण मैं तुम्हारे पीठ पीछे ये बातें लिखता हूं कि उपस्थित होकर मुझे उस अधिकार के अनुसार जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिए नहीं पर बनाने के लिए मुझे दिया है, कड़ाई से कुछ करना न पड़े।

मैंने व्यक्तिगत् तौर पर पाया है कि सेवकाई में लोगों को सुधारने का काम करना सबसे मुश्किल है। एक ओर तो जब लोग अपनी भूमिकाओं और उन्हें दी गई ज़िम्मेदारियों में बढ़ने लगते हैं तब उनके साथ धीरज रखने का प्रयास करते हैं। हम लोगों को प्रयास करने, गलतियां करने, सीखने और बढ़ने के लिए पर्याप्त समय देने का, अवकाश देने का और उनके साथ दयालुता, प्रेम और सौम्यता बरतने का प्रयास करते हैं। परंतु, यदि व्यक्ति गलत मार्ग पर चलने लगता है, या जो करना चाहिए वह नहीं करता, तब उसे किसी समय ताड़ना या सुधार की आवश्यकता होती है ऐसा न हो कि जो गलत है वह बढ़ता रहे और उससे भारी हानि हो, और कई लोग चोट खाएं। हमारी सेवकाइयों पर आत्मिक अगुवे होने के नाते, परमेश्वर ने हमें एक अधिकार दिया है, जिसके द्वारा हम ठोस कदम उठाते हैं, और फिर भी यह इस तरह से होना चाहिए जिससे लोगों की उन्नति हो, और उनका नाश न हो। मैं मानता हूं कि कभी-कभी जब हम किसी परिस्थिति के विषय में "तंग" आ जाते हैं, तब हम उनका सामना इस तरह से करते हैं जिससे हमें बाद में पछताना पड़ता है। हो सकता है अनुशासन और सुधार लाते समय हमने प्रेम और दयालुता का उपयोग नहीं किया। मैंने दो चरणों वाला तरीका अपनाना सीखा है—चेतावनी और फिर ताड़ना। जब मैं बातों को गलत होते हुए देखता हूं, तब पहले कदम के रूप में मैं उन व्यक्तियों को चेतावनी देता हूं कि सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है, बदलाव लाने की और एक निश्चित दिशा में जाने की ज़रूरत है, मैं समझाता हूं कि मेरी उनसे क्या अपेक्षा है और उन्हें सुधार की ओर कदम बढ़ाना होगा। उसके बाद, मैं जो कुछ कहा गया है उसके अनुसार चलने के लिए उस व्यक्ति को पर्याप्त समय देता हूं। उसके बाद जब मुझे लगता है कि उन्हें बदलाव लाने के लिए पर्याप्त समय दिया गया था, और फिर भी उनमें बदलाव नहीं आया है, तब मैं अगला कदम बढ़ाता हूं जो है प्रेम के साथ ताड़ना देना। यह मुश्किल काम है, जहां पर हमें ईश्वरी बुद्धि की ज़रूरत है।

जिस सुधार या ताड़ना की ज़रूरत होती है, वह जो गलत हो रहा है, उसके "कारण और परिणाम" पर निर्भर करता है। यदि आवश्यक शर्तों को पूरा न करने का "कारण" कौशल का अभाव, प्रशिक्षण का अभाव,

समय प्रबंधन के उचित कौशल आदि से संबंधित होता है, तो मैं इन गुणों का विकास करने में व्यक्ति की सहायता करने के द्वारा उस परिस्थिति पर सुधारात्मक उपाय करने का प्रयास करता हूं। परंतु दूसरी ओर, यदि "कारण" का सम्बंध आलस, परिश्रम करने की अनिच्छा, विद्रोह, घमण्ड, लोगों के साथ कलह, बुरा रवैय्या, स्वार्थपूर्ण योजनाएं, आवश्यकता से अधिक खुद को आत्मिक समझना, खुद को दूसरों से बेहतर समझना होता है, तब मैं कठोर कार्यवाही करते हुए ताड़ना देता हूं, अक्सर उस व्यक्ति को ज़िम्मेदारी से मुक्त कर देता हूं—ताकि वे परमेश्वर को अपने जीवन में काम करने दें। ताड़ना या सुधार लाते समय, मैं उसके परिणामों को भी देखता हूं। उस व्यक्ति की गलती या असफलता का क्या प्रभाव या "परिणाम" हो सकता है? यदि परिणाम छोटे पैमाने पर है और उस पर नियंत्रण लाया जा सकता है, ताकि होने वाली हानि ज्यादा न हो, तब बदलाव लाने हेतु उस व्यक्ति को और समय देने की और उसके साथ और धीरज रखने की गुंजाईश होती है। परंतु, यदि उस व्यक्ति की असफलता का परिणाम बड़े पैमाने पर हो, सेवकाई के किसी क्षेत्र पर पड़ रहा हो, वह कई लोगों के लिए बुरा उदाहरण हो, आदि बातों के विषय में ताड़ना कठोर, फौरन दी जाती है, और अक्सर उसमें उस व्यक्ति को उस सेवकाई से हटा दिया जाता है, ताकि वे अधिक हानि न पहुंचाते हुए सारी बातों में निजी रूप से सुधार ला सकें।

सुधार का उद्देश्य हमेशा आशीष देना होता है—जिन लोगों की रक्षा करने का हम प्रयास कर रहे हैं उनकी आशीष और कल्याण की हम अभिलाषा रखते हैं और जिसमें हम सुधार ला रहे हैं उसकी भी आशीष और हित की हम कामना करते हैं, भले ही सुधार की प्रक्रिया अपने आपमें पीड़ादायक क्यों न हो। ताड़ना देते समय, मैं कोशिश करता हूं कि उस व्यक्ति के साथ मेरे रिश्ते में दरार न आए, मैं यह जानते हुए अपने हृदय की रक्षा करता हूं कि ताड़ना देते समय भी जो कुछ मैं कर रहा हूं वह परमेश्वर के समक्ष सही है, और व्यक्तिगत् तौर पर मेरे मन में उस व्यक्ति के प्रति किसी प्रकार की दुर्व्यवहार की भावना नहीं है। मैं उस व्यक्ति की उन्नति करते हुए उससे सम्बंध बनाने, और उससे प्राप्त करने के लिए तैयार रहता हूं।

कृपया इस बात पर ध्यान दें, लोगों में सुधार लाने की चर्चा करते समय, मैं व्यक्तिगत् विषयों को सम्बोधित नहीं कर रहा हूं, अर्थात् हम पासबान और मण्डली के सदस्य के बीच व्यक्तिगत् संघर्ष के विषय में नहीं बोल रहे हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों का सामना हमें अलग तरह से करना है और इसकी प्रक्रिया भिन्न है (मत्ती 18:15-22; मरकुस 11:25,26)। मैं जिस बात के विषय में बोल रहा हूं, वह उस समय सुधार लाना है, जब सेवकाई में अगुवाई करने वाला व्यक्ति अपनी भूमिका और ज़िम्मेदारी में गलती करता है, या मण्डली का कोई व्यक्ति कुछ गलत कर रहा है जिसका असर स्थानीय कलीसिया के विश्वासियों पर पड़ता है।

गुप्त रूप से ताड़ना, लोगों के सामने प्रशंसा

नीतिवचन 17:19

जो दूसरे के अपराध को ढांप देता, वह प्रेम का खोजी ठहरता है, परन्तु जो बात की चर्चा बार बार करता है, वह परम मित्रों में भी फूट करा देता है।

1 तीमुथियुस 5:19,20

[19] कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको न सुन।
[20] पाप करनेवालों को सब के सामने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें।

जो गलत हो गया है उसमें सुधार लाना, दोनों के लिए सुधार पाने वालों के लिए और सुधार प्रदान करने वालों के लिए भी अपने आप में एक मुश्किल और पीड़ादायक प्रक्रिया है। यह आसान नहीं है। यह सुधार का कार्य हो जाने के बाद, उसे हमें हटाकर रख देना चाहिए और उस विषय में दूसरों से बोलते नहीं रहना चाहिए, निंदा नहीं करना चाहिए, अफवाहें नहीं फैलाना चाहिए। और अवश्य ही, लोगों के गलत कामों के विषय में हमें लोगों के सामने पुलपिट से नहीं बोलना है। कुछ अवसर हो सकते हैं, जहां पर प्राचीन, अर्थात आत्मिक “अगुवे” में सुधार लाने हेतु कार्यवाही करना हो तो, सार्वजनिक तौर पर उसे निवेदन करने की ज़रूरत होती है। यह भी जिसमें सुधार लाया जा रहा है, उसकी भलाई को ध्यान में रखते हुए किया जाए, सही हृदय और भावना के साथ ताकि स्थानीय देह की रक्षा हो। परंतु यह केवल तभी करें जब आवश्यक हो।

दूसरी ओर, लोगों द्वारा किए गए अच्छे कामों के लिए लोगों के सामने उनकी प्रशंसा करें। ऐसा अक्सर करें। इससे दूसरों को उत्तम उदाहरणों का अनुसरण करने हेतु प्रोत्साहन मिलेगा। निर्देशानुसार, लोगों को निजी तौर पर ताड़ना दें। लोगों के सामने प्रशंसा करें, ताकि दूसरों को प्रेरणा मिल सके।

मुश्किल परिस्थितियों का सामना करने हेतु व्यक्तिगत् नीति अपनाएं

नीतिवचन 19:20

सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर, कि तू अन्तकाल में बुध्दिमान ठहरे।

यह महत्वपूर्ण है कि जीवन और सेवकाई में हमें जिन मुश्किल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, उनके द्वारा हम निरंतर सीखें, और उनके द्वारा बढ़ते जाएं। लोगों के साथ कैसे काम करना चाहिए, लोगों के साथ मुश्किल परिस्थितियों का सामना करते समय अपने कौशल्यों को हमें कैसे सुधारना चाहिए, ये बातें हमें सीखना है। समय के साथ, हम लोगों से निपटने और उनके साथ कार्य करने की व्यक्तिगत् रणनीति तैयार करें। उदाहरण के तौर पर, यहां पर कुछ बातें बताई गई हैं जिनका हम अनुसरण करें। हमारी कलीसियाई टीम के साथ दिन प्रतिदिन के वार्तालाप में, मैं ई-मेल के माध्यम से बहुत कुछ करता हूं। मैं हर छोटी बात के लिए व्यक्तिगत् सभाएं नहीं बुलाता। ई-मेल के द्वारा कार्य करने से मुझे बहुत सारे काम तुरंत, तेजी से करने में सहायता मिलती है, और सारी बातें मेरे पास लिखित रूप से रहती हैं ताकि क्या किया जाना चाहिए इस विषय में सारी बातें स्पष्ट रहती हैं। जो बातें महत्वपूर्ण हैं और जिनके लिए चर्चा, सामुहिक इन्पुट (योगदान), कई लोगों के विचार आदि की ज़रूरत पड़ती है, तब टीम की सभा बुलाना उत्तम होगा। जब सभी बैठकर एक साथ चर्चा कर सकते हैं। अतः जब कभी आवश्यक हो, तब मैं केवल उन लोगों के साथ सभा का आयोजन करता हूं जिनकी आवश्यकता होती है। यह सामान्य दिन प्रतिदिन का तरीका है।

परंतु, जब मुश्किल परिस्थिति उत्पन्न होती है, तब निर्देशन के रूप में, मैं फोन या ई-मेल के माध्यम से समस्या को सुलझाने के बजाए, व्यक्तिगत् रूप से उसे करना पसंद करता हूं। मुश्किल बातों को ई-मेल या फोन के

द्वारा सम्बोधित करना, मामले को और बिगाड़ सकता है। सबसे पहले, ई-मेल पढ़ते समय उन भावनाओं और संवेदनाओं को मान लेना आसान होता है, जो उसमें शामिल नहीं होती। इसलिए हमेशा व्यक्तिगत् तौर पर चर्चा करना बेहतर है। "बात करके समस्या को सुलझाना" अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसका अर्थ मुख्य रूप से है, कि मैं सुनने का काम कर रहा हूं—सुनना, सुनना, सुनना—सभी पक्षों से और परमेश्वर से। जब ऐसा हो जाता है तब मैं निर्णय लेता हूं और व्यक्तिगत तौर पर उस बात को निवेदन करता हूं।

पहले मुझे इनमें से कुछ छोटी-छोटी बातों का ज्ञान नहीं था, और इस कारण मैंने लोगों और परिस्थितियों का सामना करते समय कई गलतियां कीं। लोगों के साथ काम करने के सही तरीके यदि मैंने जाने होते, तो मैंने अधिक बुद्धिमानी से काम किया होता। परंतु, यह एक सीखने की प्रक्रिया है और मुश्किल लोगों और परिस्थितियों से निपटारा करने के बेहतर तरीके देखने, उन पर मनन करने, और उन्हें खोज निकालने के लिए मैं अपने हृदय को खुला रखता हूं।

परमेश्वर के लोगों पर हुकुमत न चलाएं

1 पतरस 5:1-4

1 तुममें जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं,
2 कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिए नहीं पर मन लगा कर।
3 जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिए आदर्श बनो।
4 जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं।

बाइबल अत्यंत स्पष्ट है कि भले ही हम आत्मिक प्राचीन या अगुवे हैं, हमें परमेश्वर के लोगों पर "अधिकार" नहीं जताना है, या हुकुमत नहीं चलाना है। बल्कि, अगुवे होने के नाते, हमें परमेश्वर के झुण्ड के लिए उदाहरण बनना है। दुख की बात यह है कि अगुवों को आदर देना और उनकी सेवा करना उत्तम है, फिर भी मुझे लगता है कि, इस बात को बहुत

आगे खींचा गया है। आत्मिक अगुवे का आदर करने के नाम पर, अगुवा उसकी सेवा करने वाले लोगों का अक्सर गलत उपयोग करता है और उनके साथ दुर्व्यवहार करता है। वे उन कामों को करने के लिए लोगों का उपयोग करते हैं जिन्हें स्वयं उन्हें करना चाहिए। मुझे यह अजीब लगता है जब मैं प्रचारक को पुलपिट पर चलते हुए देखता हूं, तब उसके साथ साथ कई लोग उसे वहां पहुंचाने आते हैं, एक व्यक्ति के हाथ में उसकी बाइबल होती है, दूसरा व्यक्ति उसकी ब्रीफकेस पकड़ता है, और तीसरा व्यक्ति उसका मोबाईल फोन लेकर चलता है। मैं परमेश्वर के अभिषिक्तों का आदर करता हूं, परंतु मैं व्यक्तिगत तौर, यह सोचता हूं कि ऐसे प्रचारकों को अपनी बाइबल लेकर चलना सीखना चाहिए और अपनी वस्तुओं का स्वयं ध्यान रखना चाहिए! मैं प्रचारकों को देखता हूं जो लोगों को उनके लिए ये और वो काम करने के लिए आदेश देते रहते हैं—जिन कामों को वे स्वयं बड़ी आसानी से कर सकते हैं। यह और बहुत सारी गलत बातें हैं जो आज हम मसीही समाज में देखते हैं, वह यह है कि अगुवे परमेश्वर के लोगों पर "अधिकारी" के रूप में जीवन बिता रहे हैं और वे परमेश्वर के वचन का उल्लंघन कर रहे हैं। उनके जीवन मसीह सदृश्यता का और मसीह के समान सेवक का भक्तिपूर्ण उदाहरण नहीं हैं।

नियंत्रित न करें और हथकण्डे न अपनाएं

2 कुरिन्थियों 1:24

यह नहीं कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं, परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।

पासबान होने के नाते, परमेश्वर के लोगों की रक्षा करने और उन पर नियंत्रण करने के मध्य एक महीन रेखा है। हम यहां पर लोगों की सेवा करने और विश्वास में उनके परिपोषण में उनकी सहायता करने के लिए, उन पर नियंत्रण जताकर उनके विश्वास जीवन पर प्रभुता करने के लिए नहीं। कुछ कलीसियाओं में, पासबान लोगों से यह मांग करता है कि उनकी नौकरी, एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने, विवाह, मुख्य वस्तुओं की खरीदी आदि व्यक्तिगत् निर्णय लेने से पहले उनसे मिलें और उनसे मंजूरी प्राप्त

करें। कुछ पासबान अपने लोगों को अन्य कलीसियाओं में जाने की, मसीही सभाओं में जाने की या आर्थिक रूप से अन्य सेवकाइयों की मदद करने की अनुमति नहीं देते। वे हर बात में पूर्ण वफादारी और अधीनता की मांग करते हैं। वे पुलपिट पर से ही धमकियां, निर्देश आदि देकर लोगों के निर्णयों को नियंत्रित करते हैं और हथकंडे अपनाते हैं। यह सब कुछ लोगों का अनैतिक नियंत्रण और चालबाजी है, और एक तरह से "आत्मिक जादूटोने" का एक रूप है। आरम्भ ही से, हमारी कलीसिया में हमने यह स्पष्ट कर दिया कि मैं लोगों के लिए व्यक्तिगत् निर्णय नहीं लूंगा। हम उन्हें सीखा सकते हैं, परामर्श दे सकते हैं और उनके साथ परमेश्वर का वचन बांट सकते हैं, परंतु हर एक को अपना निर्णय लेना होगा और स्वयं उसकी ज़िम्मेदारी स्वीकारना होगा। हम लोगों को बाइबल पर विश्वास करने वाली कलीसियाओं में जाने, अन्य कलीसियाओं या सेवकाइयों द्वारा आयोजित सभाओं में भाग लेने, अन्य सेवकों को आर्थिक मदद करने की पूर्ण अनुमति देते हैं। हम ऐसे मामलों में, न तो कुछ पूछते हैं और न ही हस्तक्षेप करते हैं। मैं एक बात पर विश्वास करता हूं और मैंने एक बात देखी है, कि लोग हमेशा उसी स्थान में लौटेंगे जहां पर उनका हृदय है। और इसी बात की हम अभिलाषा रखते हैं, कि लोग इसलिए स्थानीय कलीसिया के प्रति समर्पित न रहें, क्योंकि पासबान द्वारा उन पर नियंत्रण रखा जा रहा है, परंतु इसलिए कि वे महसूस करते हैं कि उनकी वफादारी उस कलीसिया के साथ है।

व्यक्तिगत् असुरक्षाओं पर विजय पाएं

2 कुरिन्थियों 3:1,5,6

1 क्या हम फिर अपनी बड़ाई करने लगे? या हमें "अन्य लोगों" के समान सिफारिश की पत्रियां तुम्हारे पास लानी या तुमसे लेनी हैं?

5 यह नहीं कि हम अपने आप से इस योग्य हैं कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें, पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है,

6 जिसने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द के सेवक नहीं वरन् आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता है, परंतु आत्मा जिलाता है।

कभी-कभी, हम परमेश्वर के सेवक कई प्रकार की व्यक्तिगत् असुरक्षाओं को लेकर चलते हैं और इन असुरक्षाओं के कारण सेवकाई में काम करते हैं। हमारी असुरक्षाएं कई तरह से प्रगट होती हैं:

- यदि मैं असुरक्षित हूं कि और किसी प्रचारक पर पूरा ध्यान दिया जाएगा और लोग उसके पीछे जाएंगे, तो मैं निरंतर लोगों की दृष्टि में खुद को बड़ा बनाने की कोशिश करूंगा। मेरे संदेशों में इस बात का उदाहरण होगा कि मैं कितना अभिषिक्त और सामर्थी हूं। मेरा नाम और चित्र सब तरफ सजाए जाएंगे, ताकि लोग मुझे भूल न सकें।
- यदि मैं असुरक्षित हूं कि कोई और मुझसे बेहतर प्रचार कर सकता है, और मैं लोगों को उसका वचन सुनने से रोकता हूं।
- यदि मैं असुरक्षित हूं कि लोग मेरी कलीसिया छोड़ देंगे और दूसरी कलीसिया में जाएंगे, इसलिए मैं लोगों को निर्देश देता हूं कि वे अन्य कलीसियाओं को भेंट न दें। या उससे भी अधिक, मैं इस बात का ध्यान रखता हूं कि मैं पुलपिट से, या प्रत्यक्ष रूप से, या बड़ी सूक्ष्मता से लोगों से कहता हूं कि दूसरी कलीसिया गलत शिक्षा दे रही है।
- यदि मैं परमेश्वर की संतान के रूप में खुद को असुरक्षित समझता हूं, तो मैं खुद में सेवक होने की पहचान बनाता हूं। मैं अपेक्षा करता हूं कि लोग मुझे “परमेश्वर का जन” कहें, मुझे सभागार में महत्वपूर्ण स्थान मिले, मुझे मंच आदि दिया जाए। यदि लोग मुझ पर ध्यान नहीं देते, या “परमेश्वर के जन” के रूप में मुझे नहीं पहचानते तो मुझे बुरा लगता है।
- यदि मैं असुरक्षित हूं कि मेरी सेवकाई का कोई व्यक्ति सेवा में मुझसे बेहतर कर सकता है। मैं उन्हें दबाता हूं, उनका दमन करता हूं और उनकी पूर्ण क्षमता में आगे बढ़ने से उन्हें रोकता हूं।
- यदि मेरी पहचान में मैं असुरक्षित हूं, तो मैं उन सारे धनवान, नामी, और सामर्थी लोगों के विषय में बोलता हूं जिन्हें मैं जानता हूं, और लोगों पर प्रभाव डालने के लिए मैं किस तरह से उनके साथ हूं यह बताने की कोशिश करता हूं।

हम सेवकों द्वारा इस प्रकार का आचरण गहरी असुरक्षा से उत्पन्न होता है और हमें प्रभु से अनुग्रह मांगने की ज़रूरत है कि हम अपने जीवनों में इन बातों से छुटकारा पाएं। हमें प्रेरित पौलुस के समान ऐसे स्थान में

आना है, जिसे मनुष्यों की ओर से किसी प्रकार की सिफारिश या प्रशंसा की ज़रूरत नहीं थी। वह जानता था कि सेवकाई में उसकी पूर्णता परमेश्वर की ओर से आती है, जिसने हमें नई वाचा के योग्य सेवक बनाया है। यह सारी समस्याओं का समाधान करता है और सारी असुरक्षाओं से और ध्यान आकर्षित करने की ज़रूरत से हमें मुक्त करता है।

व्यक्तिगत् कार्यसूची लेकर आने वाले लोगों को मंच न दें

फिलिप्पियों 1:15,16

15 कई तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं और कुछ भली मनसा से। 16 कई एक तो यह जान कर कि मैं सुसमाचार के लिए उत्तर देने को ठहराया गया हूं, प्रेम से प्रचार करते हैं।

फिलिप्पियों 2:3

विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो ...

सेवकाई में लोग जो कुछ करते हैं, वह सब शुद्ध इरादे से जन्म नहीं लेता। कुछ लोग अपनी व्यक्तिगत् कार्यसूची को बढ़ावा देने के लिए चर्च आते हैं, और सेवकाई में सेवा करना चाहते हैं। अगुवा होने के नाते, आपकी ज़िम्मेदारी ऐसे लोगों को पहचानना है जिनके पास शुद्ध हृदय हैं और उन्हें प्रोत्साहन दें, और जो लोग अनुचित इरादों से आते हैं—अवसर प्रदान करने से पहले उन्हें उनके हृदयों को ठीक करने के लिए समय दें। यदि मुझे व्यक्ति के इरादों के विषय में निश्चित रूप से मालूम नहीं होता तब मैं सामान्य तौर पर उन्हें कुछ समय "परखता" हूं। ऐसा करना बाइबल आधारित है। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि लोगों को डिकन नियुक्त करने से पहले, उन्हें परखा जाए। *"और ये भी पहले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें तो सेवक का काम करें"* (1 तीमुथियुस 3:10)। मैं देखता हूं कि वे अन्य लोगों के साथ किस प्रकार व्यवहार करते हैं। क्या वे दूसरों के अधीन सेवा करने के लिए तैयार हैं? क्या वे अन्य लोगों के साथ टीम के रूप में काम करने इच्छुक हैं? क्या उन्हें मान्यता न मिलने पर भी ठीक लगता है या क्या वे बोलने के लिए आगे रहना चाहते हैं? क्या वे अगुवों के दर्शन और निर्देशों के अनुसार चलते हैं, या वे "अपनी ही योजना को

पूरा करना" चाहते हैं और जहां पर आप लोगों की अगुवाई कर रहे हैं, उस दिशा में बढ़ना नहीं चाहते? दोहरा दर्शन (Di-Vision) विभाजन (division) की ओर ले जाएगा, और इसलिए उसमें सुधार लाया जाए।

कई प्रकार के गलत इरादे होते हैं जिनके विषय में आपको सावधान रहने की ज़रूरत है। लोग सेवा करना चाहते हैं क्योंकि मान्यता पाने और लोकप्रिय होने से उन्हें आनन्द आता है। लोग सेवा करना चाहेंगे ताकि उन्हें मान्यता मिले और बाद में उसका भी उपयोग वे अपनी योजना को बढ़ावा देने के लिए करते हैं, उदाहरण के तौर पर, उनकी अपनी व्यक्तिगत् सेवकाई या कारोबार। लोगों को सेवा करने का अवसर देने से पहले उन्हें परखना चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि क्या उनके हृदय सही हैं। अगुवा होने के नाते, हमें आपके जीवन के उदाहरण से और शिक्षा में परमेश्वर की और लोगों की सेवा करते समय हमारे हृदयों और इरादों को शुद्ध बनाए रखने की ज़रूरत पर निरंतर ज़ोर देना चाहिए।

जिस बात को आप नहीं समझते उसके लिए न लड़ें

यूहन्ना 3:8

हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती है और किधर जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।"

प्रेरितों के काम 5:34,35,38,39

34 परन्तु गमलीएल नामक एक फरीसी ने जो व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय था, न्यायालय में खड़े होकर प्रेरितों को थोड़ी देर के लिए बाहर कर देने की आज्ञा दी।
35 तब उसने कहा, हे इस्राएलियो, जो कुछ इन मनुष्यों से किया चाहते हो, सोच समझ के करना। ...
38 इसलिए अब मैं तुमसे कहता हूं, इन मनुष्यों से दूर ही रहो और इन से कुछ काम न रखो; क्योंकि यदि यह धर्म या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा।
39 परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे; कहीं ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो।"

हमारे परमेश्वर को संदूक में नहीं रखा जा सकता। बाइबल परमेश्वर को प्रगट करती है, परंतु वह परमेश्वर के लिए सीमओं को नहीं निर्धारित

करती। परमेश्वर अपने वचन का कभी उल्लंघन नहीं करेगा, परंतु वह अपने वचनों तक सीमित भी नहीं है। परमेश्वर उस पुस्तक से बड़ा है जो उसने हमें दी है। इसलिए स्पष्ट रूप से परमेश्वर कुछ नए काम करेगा जो हमें अचंभित कर देंगे। अक्सर हम अपेक्षा करते हैं कि परमेश्वर केवल कुछ निश्चित प्रकार के लोगों को उपयोग करता है, या परमेश्वर किसी निश्चित तरीके से प्रगट होगा। और फिर परमेश्वर ऐसा कुछ करता है जो हमारी समझ से परे होता है या वह किसी और का उपयोग करता है जिसकी हम ने कम से कम अपेक्षा की थी। हमारी आम प्रकितक्रिया होती है उसका "विरोध करना" और उसे एक "भूल" या उसी प्रकार कोई नाम देना। यह गलत तरह की प्रतिक्रिया है। यदि अनपेक्षित और असामान्य प्रकटीकरण जो हम देखते हैं परमेश्वर के वचन की बुनियादी बातों के विरोध में नहीं है, तब हम सावधान हों, उसकी आलोचना न करें, केवल इसलिए कि वह हमारे काम करने के तरीके के अनुसार नहीं है। जो आत्मा लोगों के द्वारा कर रहा है उसका विरोध न करना हमें सीखना है, भले ही वह हमारे द्वारा निर्धारित मानकों का विरोध करे।

कभी-कभी यह पहचानना आसान नहीं होता कि हम जो "प्रगटीकरण" देखते हैं वह आत्मा का कार्य है या केवल लोग अपने शारीरिक आवेश में आकर कर रहे हैं। अच्छा यह होगा कि हम केवल खड़े होकर देखें। उसे कुछ समय दें। उसके फल का इंतजार करें। फल आपको बताएगा कि वह कहां से आया है।

दूसरी गलत बात है पुलपिट से असामान्य परिदृश्य की चर्चा करना। उदाहरण के तौर पर, यदि आप शहर की किसी मसीही सभा में कुछ अजीब होता हुए देखते हैं और आप यकीन के साथ नहीं कह सकते कि वह सचमुच परमेश्वर की ओर से है या शारीरिक मनुष्य द्वारा निर्मित प्रगटीकरण है या दुष्टात्मा का प्रगटीकरण है, तो शांत रहें और उसे कुछ समय दें। इसके बजाए, यदि आप पुलपिट से बोलना आरम्भ करेंगे, तो सम्भवतः ऐसा होगा कि क्योंकि आपने उस विषय में बोला है, लोग उत्सुक हो जाएंगे और जाकर खुद ही देखेंगे। अतः अनजाने में आपने उस अजीब घटना का मुफ्त में विज्ञापन किया और कई लोगों को उसकी खोज में भेजा है। परंतु यदि

वह सचमुच परमेश्वर की ओर से था और आपने उसकी आलोचना की, तो आपने खुद को ऐसे स्थान में पाया है जहां पर आप परमेश्वर के सच्चे कार्य का विरोध कर रहे हैं! इसलिए उत्तम यह होगा कि आप जिस बात को नहीं समझते, उसका विरोध न करें। यह परमेश्वर का काम है और वह उत्तम रीति से जानता है कि उसे कैसे किया जाए।

कुछ बातें और काम जो लोग करते हैं, उस पर आपको अपना समय नहीं देना चाहिए

सभोपदेशक 7:21,22

[21] जितनी बात कही जाए सब पर कान न लगाना, ऐसा न हो कि तू सुने कि तेरा दास तुझी को शाप देता है;
[22] क्योंकि तू आप जानता है कि तू ने भी बहुत बार दूसरों को शाप दिया है।

नीतिवचन 20:3

मुकद्दमे से हाथ उठाना, पुरुष की महिमा ठहरती है; परन्तु सब मूढ़ झगड़ने को तैयार होते हैं।

हम यहां पर परमेश्वर की सेवा करने के लिए हैं। परंतु हम लोगों के आचरण पर नियंत्रण नहीं करते और उसके लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। हम उनके चुनाव और निर्णयों को नियंत्रित नहीं कर सकते। कभी-कभी सेवकाई में, लोग आसानी से भूल जाते हैं कि हमने किस प्रकार उनकी सेवा की। लोग अचानक हमारे विषय में अपना मन बदल देते हैं। आरम्भ में वे हमारा समर्थन करते हैं और हमें प्रोत्साहन देते हैं, फिर अचानक वे हमारी आलोचना करने लगते हैं और हमारे दोष और कमियों की ओर उंगली दिखाने लगते हैं। लोग छोड़कर जाते हैं। लोग बदला लेते हैं। लोग भूल जाते हैं। यह सबकुछ सेवकाई का एक भाग है। परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हमें मानसिक तौर पर मज़बूत होना चाहिए, और परमेश्वर की बुलाहट पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, कि ऐसी बातें होने पर भी हम मज़बूत रहें और आगे बढ़ते रहें।

ऐसी बातें आपका "सोचने का समय" बर्बाद न करने पाएं। ये बातें आप पर असर न करने पाएं। बदला न लें और खुद का बचाव करने के

प्रयास में लड़ाई झगड़ा न करें। कोई भी मूर्ख यह कर सकता है। इसके बदले, प्रार्थना करने और आहत या दर्द की भावनाओं को प्रभु के सामने मुक्त करना सीखें और परमेश्वर ने जो करने के लिए आपको बुलाया है, उसे करने की ओर आगे बढ़ते रहें।

मैंने लोगों को सुना है कि वे मुझे सारी बातों के विषय में जानकारी देते रहते हैं—मैं कैसे प्रचार करता हूं, मैं कैसे कपड़े पहनता हूं, मेरे तौर-तरीके, मेरा स्वभाव, मैं कैसे लोगों की अगुवाई करता हूं आदि। मैं उनकी बातें सुनता हूं। यदि जो कुछ वे कहते हैं वह महत्वपूर्ण है, तो मैं उसके अनुसार बदलाव लाता हूं। यदि यह आलोचना है जिससे कोई लाभ नहीं होता तो मैं उसे छोड़ देता हूं। सेवकाई में, हमें मज़बूत रहना चाहिए, और जो लोग कहते और करते हैं, उसके अनुसार नहीं चलना है।

ठोकर (चोट) को पीछे छोड़ दें—उसे अपने साथ लेकर चलना उचित नहीं है

गलातियों 4:11,12

11 मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि जो परिश्रम मैंने तुम्हारे लिए किया है, व्यर्थ ठहरे।

12 हे भाइयो, मैं तुमसे बिनती करता हूं, तुम मेरे समान हो जाओ, क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूं; तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं।

प्रेरित पौलुस गलातिया के विश्वासियों के साथ अत्यंत निराश और दुखी हो गया होता। उन्हें विश्वास में लाने के लिए उसने जो परिश्रम किया, वे कुछ अन्य लोगों की बातों में आसानी से आ गए जो इस बात का आग्रह कर रहे थे कि पुराने नियम की व्यवस्था की कुछ प्रथाओं का उन्हें पालन करना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता था कि पौलुस के परिश्रम व्यर्थ हो गए हैं, परंतु ऐसी परिस्थिति में, पौलुस ने नमूने के रूप में खुद की ओर संकेत किया जिसका उन्हें अनुसरण करना था और वह साहस के साथ कहता है कि *"तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं।"* गलातियों द्वारा किए गए किसी भी कार्य से पौलुस ने ठोकर नहीं खाई, या वह आहत नहीं हुआ।

बाद में, बरनबास और मरकुस यूहन्ना के साथ पौलुस को ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ा, जब मरकुस यूहन्ना के सम्बंध में पौलुस की भिन्न राय के कारण, पौलुस और बरनबास एक दूसरे से अलग हो गए (प्रेरितों के काम 15:37-39)। बाद में, जब पौलुस ने मरकुस यूहन्ना को बढ़ते हुए और परिपक्व होते हुए देखा, उसने उसे वापस अपने साथ ले लिया, और उसे अपना संगी सेवक बनाया और सेवकाई में उसे तरक्की दी। उसने किसी प्रकार की कड़वाहट या चोट अपने मन में नहीं रखी। पिछले दिनों की बातों को पीछे छोड़ दिया गया था। पौलुस मरकुस यूहन्ना के विषय में अपनी पत्री में क्या लिखता है, उस पर विचार करें:

2 तीमुथियुस 4:11
केवल लूका मेरे साथ है। मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है।

फिलेमोन 1:24
और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं, उनका तुझे नमस्कार।

कुलुस्सियों 4:10
अरिस्तर्खुस, जो मेरे साथ कैदी है, और मरकुस जो बरनबा का भाई लगता है (जिसके विषय में तुमने आज्ञा पायी थी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उससे अच्छी तरह व्यवहार करना),

परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हमें यह सीखना है कि हम लोगों के कामों से आहत न हों। और यदि ऐसे अवसर आते भी हैं तो हमें उसे पीछे छोड़ देना सीखना है और परमेश्वर आज जो कर रहा है, उस नये कार्य में आगे बढ़ना है।

लोग बढ़ते हैं, लोग बदलते हैं—इसलिए उन्हें छोड़ने के लिए तैयार रहें

परमेश्वर लोगों को हमारे जीवनों में कुछ समय के लिए भेजता है। लोग आते हैं, परंतु उन्हें जाना भी होगा। कुछ ही लोग आरम्भ से लेकर अंत तक

हमारे साथ यात्रा करेंगे। अधिकतर लोग हमारी यात्रा के कुछ समय के लिए हमारे साथ आएंगे, और कुछ समय के लिए हमारे साथ रहेंगे। कुछ लोग विश्वास में छोटे बच्चों के रूप में या जवानों के रूप में आएंगे। उन्हें बढ़ते हुए, परिपक्व होते हुए, परमेश्वर के साथ उनके जीवन और सेवकाई में बढ़ते हुए देखने का सौभाग्य हमें प्राप्त होगा। और फिर ऐसा समय आएगा जब शायद परमेश्वर चाहेगा कि वे बाहर निकलें, कार्य और सेवकाई के किसी अन्य क्षेत्र में कार्य करने हेतु छोड़ दिए जाएं। कुछ लोगों के पास ऐसी सेवकाइयां होंगी जो स्थानीय कलीसिया के क्षेत्र के बाहर होंगी। कुछ लोग प्रभाव के क्षेत्र में हमसे भी आगे निकल जाएंगे। और कुछ लोग किसी और बात की ओर आगे बढ़ने का निर्णय लेंगे जो उन्हें उस समय दिलचस्प लगती है। परिस्थिति चाहे जो हो हमें लोगों के जीवनों को पकड़कर नहीं रहना है। जिस प्रकार प्रेम से और तत्परता से हमने उनका स्वागत किया, उसी तरह हमें उन्हें आशीष देने और जो कुछ परमेश्वर ने उनके लिए रखा है, उसमें जाने हेतु छोड़ देने के लिए तैयार रहना है। यदि परमेश्वर ने उन्हें हमारे पास भेजा, तो उन्हें बाहर भेजने का भी अधिकार उसका है।

कभी-कभी, हम लोगों को पकड़कर रखते हैं और उन्हें जाने नहीं देते हमें उनसे लगाव हो जाता है और हम महसूस करते हैं कि वे हमारे “कर्ज़दार” हैं और इसलिए उन्हें हमारे साथ रहना चाहिए और कहीं और नहीं जाना चाहिए। कभी-कभी हम उस “खालीपन” से डरते हैं जो उनके जाने से उत्पन्न हुआ हो। शायद, वह हमें अपर्याप्त महसूस करा सकता है या कुछ अधुरा कि वे खुद की सेवकाई में खुद को आगे बढ़ाने हेतु कहीं और चले गए। ये सारे ईश्वररहित प्राणीक (मानसिक) लगाव हैं जो एक आत्मिकता का रूप रखते हैं, परंतु वास्तव में वे परमेश्वर के उद्देश्यों में बाधा ला रहे हैं। हमें ऐसी बातों के विरोध में खुद की रक्षा करने की ज़रूरत है और आनन्द और आशीष के साथ। जैसे परमेश्वर उन्हें अगुवाई करता है, उन्हें छोड़ देना सीखना है। और यदि परमेश्वर वापस हमारी ओर उनकी अगुवाई करता है, तो हमें उनका स्वागत करना चाहिए।

खुशामद—उसे स्वीकार न करें, आप भी खुशामद न करें

नीतिवचन 20:19

जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रगट करता है; इसलिये बकवादी से मेल जोल न रखना।

नीतिवचन 28:23

जो किसी मनुष्य को डांटता है वह अन्त में चापलूसी करनेवाले से अधिक प्यारा हो जाता है।

नीतिवचन 29:5

जो किसी मनुष्य को डाँटता है वह अन्त में चापलूसी करनेवाले से अधिक प्यारा हो जाता है।

यह सच है कि ऐसा समय होता है, जो लोग आपकी सेवकाई के द्वारा सचमुच आशीष पाते हैं और वे ईमानदारी के साथ आते हैं और आपको बताते हैं कि उन्होंने आशीष और प्रोत्साहन पाया। यह ठीक है। परंतु ऐसे लोगों से मिलना एक आम बात है जो प्रचारकों की चापलूसी करना सही तरह से जानते हैं। हर प्रवचन के बाद वे आपको बताएंगे कि वह सही वचन था, वह प्रकाशन से परिपूर्ण था और उस दिन आप बहुत अधिक अभिषिक्त थे। वे आपको बता सकते हैं कि आप शहर के सर्वोत्तम प्रचारक, सर्वोत्तम पासबान और सर्वाधिक अभिषिक्त प्रचारक आदि हैं। ऐसी चिकनी-चुपड़ी बातों के शिकार हो जाना आसान हैं। यदि हम सतर्क नहीं रहे, तो हम ऐसे लोगों को अपने आसपास इकट्ठा करना पसंद करने लगते हैं क्योंकि वे हमें अभिमानी महसूस कराते हैं, और यह महसूस कराते हैं कि हम महत्वपूर्ण हैं। जल्द ही हमें इस प्रकार की बातों की आदत पड़ जाती है, और हम ऐसे लोगों को सह नहीं सकते जो हमसे सवाल पूछते हैं या ऐसा सुझाव देते हैं जो हमारी विचारशैली के खिलाफ हो। हम खुशामद के संसार के जाल में फंस गए हैं। हमारे कदम इस जाल में फंस गए हैं।

जब कोई आपका अभिवादन करता है, तो अपने हृदय में, वह प्रशंसा और धन्यवाद परमेश्वर को दें। *"हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन अपने ही नाम की महिमा, अपनी करूणा और सच्चाई के निमित्त कर"* (भजन

संहिता 115:1)। खुद को इस बात का स्मरण दिलाएं कि आप व्यक्तिगत तौर पर यहां पर मनुष्यों का आदर पाने के लिए नहीं हैं (यूहन्ना 5:41) और आपके लिए, स्वर्ग की प्रशंसा मनुष्यों की प्रशंसा से अधिक महत्वपूर्ण है (यूहन्ना 5:44)। फौरन उस व्यक्ति को पहचान लें जो आपकी खुशामद करता है। जब वह व्यक्ति बोलता है, तब उसकी बातों को ग्रहण न करें। जिस प्रकार बतख की पीठ से पानी बह जाता है, उसी तरह उनकी खुशामद के शब्द मिट जाएं। आप जानते हैं कि खुशामद एक खतरनाक जाल है जो आपको फंसा सकता है। वह आपमें प्रवेश न करने पाए और इसी कारण किसी और की खुशामद न करें। यदि आप उनके द्वारा किए गए किसी अच्छे काम के लिए उनकी प्रशंसा करना चाहते हैं, उन्हें अभिवादन देना चाहते हैं, प्रोत्साहन देना चाहते हैं या बधाई देना चाहते हैं, तो उसे पूर्ण सच्चाई के साथ करें।

आप लोगों के सुझावों को सुन सकते हैं, परंतु अंतिम निर्णय आप स्वयं लें

1 कुरिन्थियों 3:13,14

13 तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।
14 जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मज़दूरी पाएगा।

2 कुरिन्थियों 5:10

क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए कि हर, एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।

जो सेवकाई हम कर रहे हैं, उसमें लोगों को शामिल करना महत्वपूर्ण है और परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए दर्शन के विषय में उनके विचारों और सुझावों को सुनना भी। दूसरी ओर, आत्मिक अगुवा होने के नाते, यह जानना महत्वपूर्ण है कि अंत में आपके जीवन और सेवकाई के द्वारा जो कुछ हुआ उसके लिए परमेश्वर आपको ज़िम्मेदार ठहराएगा। लोगों के पास कई विचार होंगे। विचार या सुझावों को बांटना आसान है। परंतु किसी को यह निर्णय लेना होगा कि परमेश्वर क्या चाहता है कि हम कौन से निर्णयों

के अनुसार चलें और उन सुझावों पर कैसे अमल करें, और अंत तक उन्हें कैसे पूरा करें। यह अगुवों की टीम की और अंततः स्थानीय कलीसिया या सेवकाई में जो मुख्य अगुवा है, उसकी ज़िम्मेदारी है। जब मैं परमेश्वर के समक्ष खड़ा रहता हूं, तब मैं यह नहीं कह सकता कि किसी और ने यह सोचा कि वह अच्छा विचार था, इसलिए मैंने ऐसा किया। न ही मैं प्रभु से यह कह सकता हूं कि उस कार्य को मैंने इसलिए नहीं किया क्योंकि किसी ने मुझे यह सुझाव दिया था कि मैं उसे न करूं। मुझे खुद इसका जबाब देना होगा और जो कुछ भी किया गया है और नहीं किया गया है, उसके लिए मैं उत्तरदायी रहूंगा। इसलिए उनकी सुनें और सभी विचारों, सुझावों, सिफारिशों को उस दृष्टिकोण से सुनें और उनका मूल्यांकन करें।

किसी भी व्यक्ति को आप पर नियंत्रण न करने दें

एक बात मैंने सीखी है, मज़बूत और दृढ़ रहना, ताकि कोई "सामर्थी" व्यक्ति (संसारिक अर्थ से) परमेश्वर ने मुझे जो करने के लिए बुलाया है, उसे मुझे किस प्रकार करना चाहिए इस विषय में आदेश न दे। कभी-कभी प्रभावशाली लोग—व्यवसायी, धनवान लोग, नामी लोग, प्रबुद्ध लोग—प्रत्यक्ष / अप्रत्यक्ष रूप से प्रचार करने, पासबान पर अपना प्रभाव डालने के अवसरों का प्रयास करते हैं या "बड़ी मधुरता के साथ" पासबान को अपने नियंत्रण में लेने या उसे यह बताने का प्रयास करते हैं कि उसे क्या करना चाहिए आदि। हमें अपनी बात में अटल रहना चाहिए। उनमें से कुछ लोग ईमानदार होंगे और उनका उद्देश्य सही होगा, परंतु उनका तरीका और प्रेरणा गलत है। अनजाने में वे सोचते हैं कि संसार में उनकी सफलता—पैसा, प्रभाव, ओहदा, अनुभव के साथ—उन्हें स्वयं ही पुलपिट के पीछे स्थान पाने, या पासबान, कलीसिया या सेवकाई को नियंत्रित करने / प्रभावित करने की उनकी भूमिका के लिए अधिकार प्रदान करती है। इससे अधिक बड़ी गलती उनकी क्या हो सकती है?

पासबान होने के नाते, हम लोगों के विचार / जानकारी को सुन सकते हैं, परंतु हमें यह जानना है कि उन्हें रुकने की ज़रूरत है और हमारा कार्यक्षेत्र कहां आरम्भ होता है—एक क्षेत्र जहां पर हमें अंतिम निर्णय लेना होगा और दर्शन, पुलपिट, कलीसिया, और सेवकाई के लिए परमेश्वर के

प्रति उत्तरदायी रहना होगा। हमें इतना दृढ़ और मज़बूत होना चाहिए कि हम उन्हें "न" कह सकें, उन्हें यह समझा सकें कि सीमा रेखा कहां पर खींची गई है, जिसे वे लांघ नहीं सकते।

दूसरी ओर, परमेश्वर इस संसार में जिनके पास पैसा, ओहदा और प्रभाव आदि है, उन विश्वासियों के द्वारा जो कुछ कर रहा है उसे हम प्रोत्साहन देना चाहते हैं और उसका उत्सव मनाना चाहते हैं। परमेश्वर ने उन्हें यह आशीष दी है। परमेश्वर के राज्य के लिए बड़े बड़े काम करने हेतु हम उन्हें सशक्त बनाना चाहते हैं और उन्हें प्रोत्साहन देना चाहते हैं, तैयार करना चाहते हैं। और फिर भी हमें यह करना चाहिए—अपने स्थान का समझौता किए बगैर, अर्थात् सेवकाई जो हमें सौंपी गई है, और कार्यक्षेत्र जिसके लिए हम ज़िम्मेदार हैं। हमें विश्वासियों को यह भी समझाना है कि संसार में उनकी सफलता स्वयं ही उन्हें स्थानीय कलीसिया और सेवकाई में महत्वपूर्ण भूमिका, पद, या बोलने का अधिकार प्रदान नहीं करती।

मैं ऐसे अगुवों की वकालत नहीं कर रहा हूं जो किसी के भी प्रति उत्तरदायी नहीं रहते। दूसरी ओर, मैं पूर्ण विश्वास करता हूं कि अगुवे होने के नाते, हमें न केवल परमेश्वर के प्रति और अपने परिवारों के प्रति उत्तरदायी रहना है, बल्कि उन अगुवों के प्रति भी जो हम पर हैं, शासकीय और नियामक मण्डल और उन लोगों के प्रति भी जिनकी हम अगुवाई और सेवा करते हैं। हमारे जीवन ऐसे होने चाहिए जिससे कोई भी किसी भी बात के विषय में हमें जांच सके और हम शुद्ध विवेक के साथ उन्हें उत्तर दे पाएं। हम झूठ का जीवन नहीं बिताते। मैं यहां पर यह कहना चाहता हूं कि कोई भी व्यक्ति इस संसार में उनके पास जो पैसा, ओहदा, सत्ता, उपलब्धियों या प्रभाव उनके कारण अगुवे के नाते आपको नियंत्रित न करने पाए, आपको उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं देना चाहिए।

अगुवों के प्रति और एक दूसरे के प्रति अधीनता आवश्यक है और ईश्वरीय बात है। परंतु, किसी भी व्यक्ति के प्रभाव में इस हद तक रहना जहां पर हम उनके इशारों पर चलें और सेवकाई के साथ समझौता करें, अस्वस्थ और हानिकारक है।

उसी तरह, हमें इस बात का भी ध्यान रखना है कि हम पर कोई "अति आत्मिक" लोग भी नियंत्रण न करने पाएं। मैं मध्यस्थी करने वालों, प्रार्थना योद्धाओं और भविष्यद्वक्ताओं के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देता हूं, परंतु कभी-कभी ऐसे लोग भी दर्शनों, स्वप्नों और "परमेश्वर की ओर से प्राप्त वचन" का उपयोग कर अपने अगुवों को नियंत्रित करने या प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। पासबान होने के नाते, मैं लोगों द्वारा लाए गए "प्रभु की ओर से प्राप्त वचनों" को सुनता हूं। परंतु उसे परमेश्वर से प्राप्त सच्चे वचन के रूप में स्वीकार करने से पहले स्वयं परखने के विषय में सावधान रहता हूं। उसी तरह मैं इस बात के विषय में भी सावधान रहता हूं कि कोई भी विशिष्ट "मध्यस्थ" या "भविष्यद्वक्ता" परमेश्वर के और मेरे बीच में स्वयं-नियुक्त मध्यस्थ न बनने पाए—ताकि मुझे केवल उनकी सुनना पड़े और उनके भविष्यद्वाणी के वचनों या प्रकाशनों के आधार पर अपने निर्णय लेने पड़े।

"आत्मिक" लोगों के साथ सावधानी से बर्ताव करें

कुलुस्सियों 2:18,19

18 कोई मनुष्य आत्महीनता और स्वर्गदूतों की पूजा कराके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है,

19 और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिससे सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है।

आपको निश्चय ही कुछ "अति आत्मिक" विश्वासी मिलेंगे जो हमेशा वह करना चाहेंगे जो उन्हें लगता है कि परमेश्वर उनसे कहता है—परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों की परवाह न करते हुए। जब आप पासबान होने के नाते उनसे कहते हैं कि वे कुछ करें या आपके द्वारा निर्धारित किए गए तरीके का अनुसरण करें, तब उनकी सामान्य प्रतिक्रिया कुछ इस प्रकार रहती है "जैसा प्रभु मेरी अगुवाई करेगा, वैसे मैं करूंगा।" वे अक्सर अपने निर्णयों के साथ प्रभु ने "मुझसे कहा ..." या परमेश्वर ने "मुझसे बातें की ..."

हम अवश्य ही विश्वासियों को प्रोत्साहन देना चाहते हैं कि वे प्रार्थना करें और परमेश्वर की ओर से सुनें—परंतु इन अति आत्मिक लोगों को यह

समझने की ज़रूरत है कि सर्वप्रथम, पासबान या अगुवा भी प्रार्थना कर रहा है, परमेश्वर की सुन रहा है और इसलिए एक निश्चित रीति से निश्चित कार्य को करने का उसने निर्णय लिया है। मैं जानता हूं कि जिस बात की हम यहां चर्चा कर रहे हैं, वह अत्यंत प्रिय विषय नहीं है। परंतु मैं सोचता हूं कि मैंने ऐसे कई उदाहरण देखे हैं जिससे मैं इस प्रकार की टिप्पणियां कर रहा हूं। मेरी व्यक्तिगत् राय और निरीक्षण में, ऐसा दिखाई देता है कि कई अति आत्मिक लोग “परमेश्वर ने मुझसे कहा ...” या “परमेश्वर जिस प्रकार अगुवाई करेगा, वैसे मैं करूंगा ...” जैसे वाक्यों का उपयोग कर आज़ादी और अवज्ञाकारिता की उनकी अभिलाषा को छिपाते हैं। ऐसे अति आत्मिक लोगों के साथ हमें सावधानीपूर्वक बर्ताव करना चाहिए। मैं सामान्य तौर पर ऐसे लोगों को महत्वपूर्ण भूमिका नहीं देता, क्योंकि मैं उन पर भरोसा नहीं कर सकता या उन पर निर्भर नहीं रह सकता कि परमेश्वर के मार्गदर्शन में हम जिस दर्शन और अभिदिशा को प्रदान कर रहे हैं, उसके अनुसार वे चलेंगे। जो व्यक्ति वास्तव में आत्मिक है और परमेश्वर के साथ चलता है, उसे “परमेश्वर ने मुझसे कहा ...” जैसे शब्दों का उपयोग कर लोगों के मनों पर यह प्रभावित करने की ज़रूरत नहीं होती। वह नम्रता और अधीनता में चलता है। उसका जीवन और फल प्रगट करेंगे कि वह आत्मा के अनुसार चल रहा है।

अगुवों को तैयार करें

1 कुरिन्थियों 4:17

इसलिए मैंने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूं।

1 कुरिन्थियों 16:10

यदि तीमुथियुस आ जाए, तो देखना कि वह तुम्हारे यहां निडर रहे; क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम करता है।

प्रेरित पौलुस ने अपनी सेवकाई अकेले नहीं की। उसने कई अगुवों को अपने आसपास तैयार किया। उसने उन्हें अपने सहयोगी, सहकर्मी कहा। तीमुथियुस अगुवे का एक ऐसा ही उदाहरण है जिसे पौलुस ने अपनी

सेवकाई में तैयार किया। एक जवान के रूप में लुस्त्रा में पाया (प्रेरितों के काम 16:1-3) और उसे अपनी टीम के एक हिस्से के रूप में अपने साथ ले लिया। समय के साथ पौलुस ने परमेश्वर के जन के रूप में उसका परिपोषण किया, जो उसी तरह सेवा का काम कर सके जिस तरह पौलुस ने किया। तीमुथियुस पौलुस का एक सहकर्मी बन गया था।

मसीही सेवकाई में, आपके साथ काम करने वाले अगुवे को तैयार करना महत्वपूर्ण है। अगुवे परमेश्वर के घर में खम्भों के समान हैं (गलातियों 2:9)। यदि आप एक बड़ा घर बनाना चाहते हैं तो आपको विशाल रचना को सहारा देने के लिए कई खम्भों की ज़रूरत होगी। आप केवल एक ही खम्भे के सहारे बहुत अधिक निर्माण नहीं कर सकते। यदि आप मज़बूत स्थानीय कलीसिया बनाना चाहते हैं, तो आपको अपने आसपास कई अगुवों को तैयार करना होगा जिन्हें सेवकाई के निश्चित पहलुओं को पूरा करने हेतु सिखाया जाए, प्रशिक्षण दिया और अधिकार प्रदान किया जाए। ए.पी.सी. में हम लगातार इस बात को दोहराते हैं कि "हर एक विश्वासी सेवक है।" हम हर एक को सेवा करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। हम नये विश्वासियों को लेकर उन्हें शिष्य बनाने का काम करते हैं, शिष्यों को सेवक बनाते हैं, और सेवकों को अगुवे बनाते हैं। हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हर कोई अगुवा बन सकता है। अगुवा प्रतिष्ठा का पद या लोगों के मध्य श्रेष्ठता का स्थान नहीं है। अगुवे का कार्य मात्र बड़ी ज़िम्मेदारी लेना और बड़ी सेवा करना है।

हम सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों के लिए अवसर तैयार करते हैं कि वे अगुवे बनें। हम उन्हें बढ़ने देते हैं। हम उनके जीवन के उदाहरण को और उनके हृदय की प्रवृत्ति का अवलोकन करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर हम उनमें सुधार लाते हैं और उन्हें सही मार्ग पर लाते हैं ताकि हम लोगों का परिपोषण करके उन्हें अच्छे अगुवे बना सके। हम उन्हें आवश्यक समय लेने देते हैं और जल्दबाजी में उन्हें अगुवे की भूमिका नहीं देते। हम पहले बिना किसी उपाधी या पद के लोगों को सेवा करने देते हैं। यदि कोई बिना उपाधी, भूमिका या मान्यता के सेवा करता है, तो वे निश्चित रूप से इन बातों के पाने पर सेवा करता रहेगा। हम लोगों को केवल उनके

गुण, कौशल, और करिश्मा के आधार पर (वरदान) ऊंचा स्थान नहीं देते। ईश्वरीय जीवन का उदाहरण, हृदय की सही प्रवृत्ति, लोगों के साथ उत्तम रिश्ता, दर्शन के अनुरूप होना आदि महत्वपूर्ण बातें हैं जिनकी हम खोज में रहते हैं। हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि अगुवे अपना नमूना पेश करें।

आपके आसपास उत्तम अगुवे होना मज़बूत सेवकाई की कुंजी है। अर्थात्, सभी अगुवे जीवन भर आपके साथ नहीं रहेंगे। परमेश्वर उन्हें बड़ी बुलाहट, अलग सेवकाई दे सकता है, इसलिए समय आने पर प्रेम के साथ उन्हें आगे बढ़ने हेतु मुक्त करें जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है। जब आप अगुवों को मुक्त करते हैं, तब आप और लोगों को उठने के लिए और उनके स्थान पर अगुवा बनने के लिए अवसर तैयार करते हैं।

अपने अगुवों के साथ खड़े रहें

1 तीमुथियुस 5:19,20

[19] कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको न सुन।
[20] पाप करनेवालों को सब के सामने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें।

आत्मिक अगुवा होना आसान काम नहीं है—विशेष करके यदि आप उसे सही रीति से करना चाहते हैं तो। जो अगुवे आपके साथ सेवा करते हैं और आपकी अधीनता में हैं वे इस बात को जानने पाएं कि उनको आपका पूर्ण समर्थन है। उन्होंने अपने जीवन को जोखिम में डाला है और आपके साथ ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं। इसलिए उनके साथ खड़े रहें, विशेषकर उस समय जब मण्डली की ओर से उनके विरोध में शिकायत या आरोप होता है। दो या तीन सच्चे गवाहों के साथ जांच पड़ताल करें। जब आपने इस बात को जांच लिया कि सचमुच कुछ गलती हुई थी, तभी सुधार के लिए आगे बढ़ें।

हम सभी गलतियां करते हैं। कोई भी निर्दोष नहीं है। इसलिए यदि अगुवा भी गलती करता है, जो कि नैतिक गुन्हा न हो, या ईश्वरीय मानकों के साथ समझौता न हो, तो उसे गुप्त रूप से सम्बोधित करें और उन्हें प्रोत्साहन दें कि वे खुद में सुधार लाएं। कभी-कभी अगुवा गलती को दोहराता है और आपको धीरज रखने की आवश्यकता है, और उन्हें सुधार लाने

हेतु उनकी यात्रा में प्रोत्साहन दें। परंतु, यदि पर्याप्त समय और प्रोत्साहन देने के बाद भी परिस्थिति में बदलाव नहीं आया है, तब आपको उसमें सुधारात्मक कार्यवाही करना होगा। नैतिक गुन्हा या ईश्वरीय मानकों के साथ समझौते के मामलों में सुधारात्मक सुझाव और गंभीर होंगे। ऐसा हर एक की भलाई को ध्यान में रखते हुए किया जाए। इन सबके पीछे, आपकी टीम का प्रत्येक सदस्य इस बात को जानने पाए कि आप मुश्किल समयों में उनके साथ खड़े रहेंगे और परमेश्वर के राज्य में उनके पुनर्स्थापन और बढ़ौत्तरी का ध्यान रखेंगे।

निष्क्रियता या लापरवाही के द्वारा "अबशालोम" को जन्म न लेने दें

राजा दाऊद इस्राएल का सर्वाधिक सफल राजा था। परंतु, ऐसा दिखाई देता है कि वह अपने परिवार का बहुत अच्छा पिता नहीं था, कम से कम उसके बेटे शलमोन के जन्म तक तो नहीं। उसके बच्चों में, अबशालोम और तामार भाई बहन थे, और उनका सौतेला भाई अम्नोन भी था। अम्नोन तामार से प्रेम करता था, और उसने बड़ी कुटिलता से उसके कौमार्य को भंग किया (2 शमुएल 13)। बाइबल कहती है कि, *"जब ये सब बातें दाऊद राजा के कान में पड़ी, तब वह बहुत झुंझला उठा"* (2 शमुएल 13:21)। और फिर भी जो कुछ हुआ था उस विषय में राजा दाऊद ने कुछ नहीं किया। समझने की बात यह है कि अम्नोन ने तामार के साथ जो कुछ किया था, उसके लिए अबशालोम उससे बहुत क्रोधित था। शायद उसका क्रोध इसलिए बढ़ रहा था क्योंकि दाऊद ने दो वर्षों तक इस विषय पर ध्यान नहीं दिया। फिर अबशालोम ने समस्या को अपने हाथ में लिया, और अम्नोन की हत्या कर दी। अबशालोम तीन वर्षों तक छिपा रहा। अम्नोन की हत्या के लिए दाऊद का विलाप पूरा होने के बाद, वह अबशालोम की अभिलाषा करने लगा। *"दाऊद के मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही; क्योंकि अम्नोन जो मर गया था, इस कारण उसने उसके विषय में शान्ति पाई"* (2 शमुएल 13:39)। यहां पर फिर, तीन वर्षों तक दाऊद ने कुछ नहीं किया। उसने अबशालोम से सम्पर्क नहीं किया। अब कल्पना कीजिए, पांच वर्षों तक अबशालोम उसकी बहन के साथ हुए अन्याय के दर्द को अपने अंदर रखकर चलता रहा, और पांच वर्षों तक पिता होने के नाते दाऊद ने

उस तक पहुंचने के लिए कुछ भी नहीं किया। अंत में, दाऊद के अगुवों में से एक योआब ने दाऊद को यकीन दिलाया, परंतु ऐसा दो वर्षों तक चलता रहा। *"अतः अबशालोम राजा का दर्शन बिना पाए यरूशलेम में दो वर्ष रहा"* (2 शमुएल 14:28)। अंततः, अबशालोम ने योआब को यकीन दिलाया कि वह उसके पिता से उसकी मुलाकात कराए, राजा दाऊद से। *"तब योआब ने राजा के पास जाकर उसको यह बात सुनाई; और राजा ने अबशालोम को बुलवाया। अतः वह उसके पास गया, और उसके सम्मुख भूमि पर मुह के बल गिरकर दण्डवत् की; और राजा ने अबशालोम को चूमा"* (2 शमुएल 14:33)। यद्यपि अंत में, अन्याय की घटना के सात वर्षों बाद, अबशालोम की भेंट उसके पिता से हुई, फिर भी कोई संकेत नहीं है कि दाऊद ने उन घावों को चंगा करने की कोई कोशिश की हो। परिणामस्वरूप, न्याय देने के इस क्षेत्र में, अबशालोम ने लोगों के दिलों में जगह बना ली। *"अतः जितने इस्राएली राजा के पास अपना मुक़द्दमा ले कर आते उन सभों से अबशालोम ऐसा ही व्यवहार किया करता था; इस प्रकार अबशालोम ने इस्राएली मनुष्यों के मन को हर लिया"* (2 शमुएल 15:6)। ऐसा करने के बाद, अबशालोम ने अपने पिता राजा दाऊद के विरोध में, एक बड़ा बलवा आरम्भ किया। दाऊद को यरूशलेम से भाग जाना पड़ा और वह प्रायः सिंहासन खो बैठा।

काश दाऊद आरम्भ में ही, जब अन्याय की घटना हुई थी तब अबशालोम से मिलता, और उस पीड़ा को, अबशालोम के हृदय की समस्याओं को दूर करता? ये पूर्णतया सम्भव है कि विद्रोह कभी नहीं होता। सात वर्षों तक, दाऊद ने उस दर्द और समस्या को सुलझाने के लिए कुछ नहीं किया, और अंततः इसका परिणाम विद्रोह हुआ।

सेवकाई की टीम की अगुवाई करने के विषय में इससे हम एक महत्वपूर्ण पाठ सीख सकते हैं। यदि आप अपनी सेवकाई की टीम में किसी सदस्य को पाते हैं जिसके पास समस्याएं और विवाद हैं, तो उसे नज़रअंदाज न करें। जैसे ही आपको इस बात का पता चलता है, उससे आंतरिक वार्तालाप करें। उनके संघर्षों के विषय में और अशांति के कारणों को सुन लें। आपके हृदय को समझने में उनकी सहायता करें। जहां तक हो सके, समस्याओं को सुलझाएं। यदि वे मामलों को सुलझा नहीं पा रहे हैं, तो उन्हें प्रेम के साथ मुक्त करें ताकि वे मिनिस्ट्री में टीम से निकलकर और किसी कार्य में लग

जाएं, बजाए इसके कि टीम रहकर मन ही मन घुटते रहे। यह दोनों के लिए हानिकारक होगा, टीम के लिए और उस व्यक्ति के लिए भी। और अर्थात् आप अबशालोम को तैयार करना नहीं चाहते जो अंत में आपकी ही सेवकाई में "विद्रोह" करेगा। इसलिए समस्या का पता लगते ही उससे निपटारा करें। उसे प्रलम्बित न करें। आपकी निष्क्रियता और लापरवाही, आपकी ही अपनी टीम में अबशालोम को तैयार न करने पाए।

अन्य लोगों के पापों के भागीदार न हों

1 तीमुथियुस 5:22
किसी पर शीघ्र हाथ न रखना, और दूसरों के पापों में भागी न होना; अपने आपको पवित्र बनाए रख।

नीतिवचन 26:17
जो मार्ग पर चलते हुए पराये झगड़े में विघ्न डालता है, सो वह उसके समान है, जो कुत्ते को कानों से पकड़ता है।

मसीही सेवक होने के नाते, विशेष तौर पर यदि आप किसी मण्डली के पासबान हैं, तो आप हर सम्भव तरीके से अपने लोगों की मदद और सहायता करना चाहेंगे। इसमें बड़े आश्चर्य की बात है कि मसीही सेवकाई के संदर्भ में भी जो गलत है उसमें सहभागी होने के निवेदन हो सकते हैं। मुझे एक घटना याद है जब एक विशिष्ट मसीही संस्था को एक कार्यक्रम के अंत में ऑल पीपल्स चर्च को कुछ पैसा लौटाना था। उस संस्था के लिए कार्य करने वाले व्यक्ति ने मुझसे पूछा, "आप चेक किसके नाम से चाहते हैं?" यह प्रश्न सुनकर मैं अचम्भित रह गया। मेरे लिए उत्तर स्पष्ट था और इस प्रश्न के पूछे जाने पर मैं चौंक गया, विशेष करके एक मसीही संस्था के लिए काम करने वाले व्यक्ति से वह प्रश्न सुनकर। मेरा उत्तर सरल था, "पैसा ऑल पीपल्स चर्च द्वारा दिया गया था और उसे ऑल पीपल्स चर्च को ही लौटाना था।" और यही किया गया। परंतु इससे मैं यह सोचने लगा और क्या कुछ हो रहा होगा, पैसों का गलत उपयोग कहां किया जा रहा होगा। एक घटना में ऑल पीपल्स चर्च की आराधना में कुछ महीनों से भाग लेना वाला एक जवान एक रविवार आराधना के पश्चात मेरे पास आया और उसने मुझे बताया कि वह अमेरिका के एक बाइबल कॉलेज में अध्ययन

के लिए आवेदन भेज रहा है। वह चर्च से एक पत्र पाना चाहता था जिसमें लिखा हो कि वह कलीसिया के कर्मचारियों में से एक है, और इस क्षेत्र में सेवा कर रहा है आदि। मनोरंजन की बात यह थी कि वह मुझसे कह रहा था कि वह एक पत्र लिखकर दूं जो कि सरासर झूठ था! इसके लिए मेरे लिए उत्तर बिल्कुल स्पष्ट था—“नहीं!” उसने फौरन कलीसिया छोड़ दी और उसके बाद से वह आराधना में कभी दिखाई नहीं दिया।

कुछ क्षेत्र ऐसे होंगे जहां पर सही और गलत इतने स्पष्ट नहीं दिखते हों और आपको अत्यंत सावधान रहने की ज़रूरत है। उदाहरण के तौर पर, ऐसी परिस्थिति में जहां पर एक पत्र मांगा जाए जिसकी विषयवस्तु पूर्ण रूप से सच और न्यायोचित हो—परंतु आपको ऐसा बताया जाता है कि उसका उपयोग किसी गलत बात को सहारा देने के लिए किया जा रहा है तो आप क्या करेंगे? आप नहीं जानते थे कि पत्र का उपयोग किस तरह किया जा रहा है, और मण्डली के सदस्य ने उसे लेकर किसी गलत बात के समर्थन में उसका उपयोग किया, अर्थात् जो आपके नियंत्रण के बाहर थी। परंतु यदि आपको बताया जाता कि उसका उपयोग गलत का समर्थन करने के लिए किया जा रहा था, तब महत्वपूर्ण यह होगा कि आप उस पाप के भागी न बनें। उसी तरह, पासबान होने के नाते, आपको अपनी मण्डली के सदस्यों के लिए ऐसे वाक्य कहने के लिए बुलाया जा सकता है—या तो भविष्य के नियोक्ता द्वारा, विवाह प्रस्ताव आदि के लिए। ऐसे समयों में, आप चाहेंगे कि एक बहुत अच्छी रिपोर्ट प्रस्तुत करे ताकि वास्तविक सच्चाइयों के बिना उस व्यक्ति को उत्तम भविष्य मिल सके। मैंने हमेशा सच्चाइयों को निवेदन करने की प्रथा बनाई है। इसके अलावा मैं कुछ नहीं करता।

”ना” कहना पाप नहीं है

नीतिवचन 25:16

क्या तू ने मधु पाया? तो जितना तेरे लिये ठीक हो उतना ही खाना, ऐसा न हो कि अधिक खाकर उसके उगल दे।

जीवन और मसीही सेवकाई में कई बातें ऐसी हैं जो अच्छी और हानिरहित हैं। परंतु, उनकी आवश्यकता से अधिकता खतरनाक हो सकती है। विभिन्न

स्थानों में सेवा के निमंत्रण प्राप्त करना अच्छी बात है। परंतु आपको जानने की ज़रूरत है कि किसे "हां" कहें और किसे "ना" कहें। पासबान होने के नाते, कई लोग चाहेंगे कि आप उनकी कलीसिया में प्रचार करें। फिर से यहां आपको यह जानने की ज़रूरत है कि आप कौन से लोगों को "हां" कहेंगे और कौन से लोगों को "ना" कहेंगे। आपकी मण्डली के लोग चाहेंगे कि आप आकर उनके घरों में होने वाले हर कार्यक्रम का हिस्सा बनें—हर विवाह, हर जन्मदिन, हर विवाह की सालगिरह, हर विवाह का समर्पण विधि आदि। फिर से एक बार, ऐसी बातों में, आपको यह जानने की ज़रूरत है कि किस बात को "हां" कहें और किस बात को "ना"।

मसीही सेवकों के नाते, हम हर एक बात के प्रति "हां" कहने का दबाव महसूस करते हैं। परंतु यह व्यवहारिक तौर पर सम्भव नहीं होता। इस प्रकार की सभी बातों को "हां" कहकर हम अपने जीवनों को बरबाद कर सकते हैं—स्वास्थ्य, परिवार आदि। मैंने यह सीखा है कि "ना" कहना पाप नहीं है। मैं इस बात को कबूल करता हूं कि मैं सबकुछ नहीं कर सकता। जब मैं किसी को "ना" कहता हूं, तब मैं उस व्यक्ति का इन्कार नहीं कर रहा हूं। जो प्रस्ताव रखा गया था, केवल उसके लिए मैं "ना" कह रहा हूं—उस निमंत्रण या कल्पना के स्वीकार किए जाने को। मैं "ना" कहकर भी उन लोगों से प्रेम कर सकता हूं, और अन्य समयों में और अन्य कामों में सम्पूर्ण हृदय से उनके साथ काम कर सकता हूं। इसलिए हर एक बात के लिए "हां" कहने के दबाव के वश में होने के बजाए, उन बातों के लिए "ना" कहना सीखें जिनका आप हिस्सा नहीं बन सकते, परंतु उसके विषय में खुद को अपराधी महसूस न करें।

अपने दोष लगाने वालों के स्तर पर न झुकें

रोमियों 12:17,18,21

17 बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो।

18 जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।

21 बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

तीतुस 3:10 (द मैसेज बाइबिल)
किसी झगड़ालू को एक दो बार समझा बुझाकर उससे अलग रह।

हम बैंगलोर आकर वहां चर्च और अपना कारोबार शुरू करने से पहले करीब तीन साल तक, शिकोगा में रहे। इस समय के दौरान हम एक छोटी सी स्थानीय कलीसिया का हिस्सा थे जिसमें बीस से पच्चीस लोग थे। इस कलीसिया में हमने हर तरह से सहायता की। हमें पासबान के माता-पिता, जिम और लोरेन नैगल के साथ समय बिताने का अवसर प्राप्त हुआ। उस समय मि. जिम करीब साठ वर्ष की उम्र के या उसके आसपास थे। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय तौर पर सुविख्यात एक विशाल मसीही सेवकाई में 17 वर्षों तक कार्य किया और कई नामी मसीही सेवकों को देखा और सुना। मुझे मसीही सेवकाई की उनकी कहानियां और अनुभव सुनना अच्छा लगता था। उन्होंने मुझे दो महत्वपूर्ण बातें सिखाई, जिनका मैं अक्सर खुद को स्मरण दिलाता रहता हूं। इनमें से दोनों इस मसीही संस्था में उनके अनुभवों पर आधारित थीं। उन्होंने मुझे बताया कि इस विशिष्ट सेवकाई में 17 वर्षों तक सेवा करने के बाद, जहां पर वे लेखा और अर्थ विभाग में थे, एक दिन उन्हें बिना किसी उचित कारण के नौकरी छोड़ने के लिए कहा गया। उन्हें यकीन नहीं हो पाया। वे चकित रह गए। जब वे इस दुखद परिस्थिति में से होकर गुजर रहे थे, तब उन्हें अक्सर लगता रहता था कि उनके मसीही भाइयों द्वारा जो अन्याय उनके साथ किया गया है, उसका बदला लिया जाए। जब उन्होंने प्रभु की ओर सामर्थ पाने के लिए देखा, तब प्रभु ने उनसे कहा और उन्हें चुनौती दी कि उनके भाई जिस स्तर पर काम कर रहे हैं, उस स्तर पर वे न झुकें। परमेश्वर ने उनसे कहा कि उसके ऊपर होकर जीवन को बिताएं और उनके साथ जो गलत हुआ है उससे बड़े होकर। इसलिए मि. जिम ने ऐसा करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने भाइयों के स्तर पर नीचे गिरने से इन्कार किया जो अपने व्यवहार में अन्यायी और अनुचित थे। उन्होंने निर्णय लिया कि वे क्षमा के ऊंचे स्तर में चलेंगे और परमेश्वर में भरोसा करेंगे। इसलिए मि. जिम ने मुझे बार बार बताया, "आशीष, आपको लोगों के साथ चाहे जिस बात का सामना करना पड़े, उनके गलत कामों

के स्तर पर नीचे मत झुकना। हमेशा यहां रहना, जहां परमेश्वर चाहता है कि तुम जीवन बिताओ।"

मसीही सेवक होने के नाते, हमें अवश्य ही कई आरोपों, आलोचनाओं, निंदा, अफवाहों का सामना करना पड़ेगा जो लोग हम से या हमारे विषय में कहेंगे। लोग क्या कहते हैं और करते हैं इस पर हमारा नियंत्रण नहीं है। सबसे बुरी बात यह है कि अक्सर ये लोग हमारे ही भाइयों में से होते हैं। दुख की बात है कि, कई तरह से, हमारे विरोधी हमारे ही अपने घराने के होते हैं (मत्ती 10:36)। परंतु हमारे पास हमेशा एक चुनाव होता है कि बुराई का बदला बुराई से न लें। हमारे पास एक चुनाव होता है कि हमें चोट पहुंचाने वाले लोगों के स्तर के ऊपर होकर जीवन बिताएं।

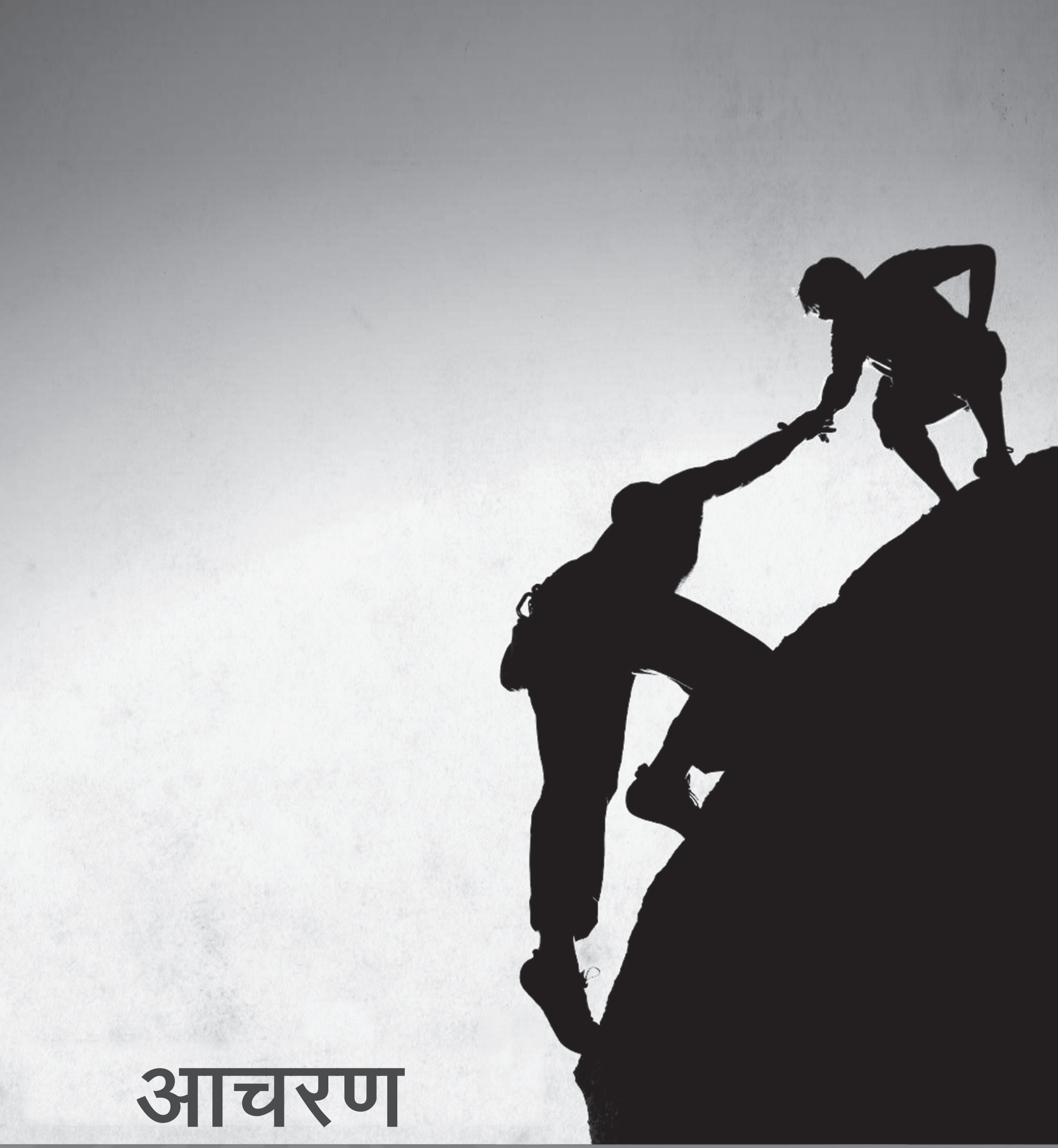

आचरण

यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है। यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष ...

(1 तीमुथियुस 3:1,2)

अध्याय 4

4
आचरण

दुख की बात यह है कि आज कलीसिया में, प्रचारक को लोग पुलपिट से दूर जो जीवन वे बिताते हैं उसके अनुसार मूल्यांकन करने के बजाए, पुलपिट के पीछे एक घण्टे में वे उन्हें जो कुछ करते हुए देखते हैं, उसी के अनुसार उनका मूल्यांकन करते हैं। इससे ऐसे प्रचारकों का उदय हुआ है जिनका लक्ष्य पुलपिट के पीछे रहते हुए "एक अच्छा काम करना" होता है, परंतु पुलपिट से दूर रहते हुए वे किस प्रकार का जीवन बिताते हैं, इस पर वे ध्यान नहीं देते।

परंतु, परमेश्वर के वचन द्वारा निर्धारित मानक अत्यंत स्पष्ट है। मसीही अगुवे को दोषरहित होना चाहिए और उसका जीवन अन्य विश्वासियों के लिए उदाहरण हो। यही बात उसे मसीही सेवक (पासबान, प्रचारक, शिक्षक, भविष्यद्वक्ता, प्रेरित, सुसमाचार प्रचारक आदि) होने की योग्यता प्रदान करता है। यह अध्याय आचरण के सम्बंध में कुछ मुख्य विषयों को सम्बोधित कर रहा है—जब हम मंच पर लोगों को प्रचार नहीं करते हैं, तब जिस प्रकार का जीवन हम बिताते हैं।

उदाहरण बनें, मानक निर्धारित करें

1 कुरिन्थियों 11:1
तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं।

1 तीमुथियुस 4:12
कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल-चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा।

प्रेरित पौलुस ने स्पष्ट रूप से बताया कि परमेश्वर का जन होने के नाते, उसके जीवन का उदाहरण अत्यंत महत्वपूर्ण था और इस प्रकार

उसने लोगों को चुनौती दी कि उसके जीवन का उदाहरण अनुसरण करें। मैं सोचता हूं कि हम में से कितने प्रचारक लोगों से कह सकते हैं कि “मेरा उदाहरण अपनाओ और पुलपिट के पीछे न रहते हुए जिस प्रकार का जीवन मैं बिताता हूं, उसका अनुसरण करो।”

प्रेरित पौलुस ने युवा तीमुथियुस को चुनौती दी कि वह विश्वासियों के सामने आदर्श बनकर इफिसुस की कलीसिया की अगुवाई करे। मसीही अगुवे को मानक निर्धारित करना है और अपना उदाहरण पेश करना है:

- बातों में—हम किस प्रकार बोलते हैं, किस प्रकार की बातें बोलते हैं।
- आचरण में—हम किस प्रकार जीवन बिताते हैं, हम अपने समय, पैसों, रिश्तों का कैसे प्रबंधन करते हैं।
- प्रेम में—हम अन्य लोगों को कैसे प्रेम करते हैं और उनकी कैसे देखभाल करते हैं।
- आत्मा में—हमारे हृदय की बातों में हमारे इरादों, हमारी प्रवृत्तियों की शुद्धता।
- विश्वास में—प्रभु पर हमारे भरोसे में और निर्भरता में, उसके वचन का पालन करने के हमारे साहस में।
- शुद्धता में—दिन प्रतिदिन की बातों में पवित्रता और भक्तिमानता के हमारे जीवन में।

हमें इस बात को स्मरण रखना है कि छोटी छोटी बातों में भी लोग हमें देखते हैं और जिस प्रभु का हम प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके विषय में सोचने लगते हैं। मुझे याद है कि एक मसीही सभा में मैंने हिस्सा लिया जहां पर एक प्रतिष्ठित मसीही अगुवा मंच पर बैठकर जब सभा चल रही थी तब, अपने मोबाईल फोन का इस्तेमाल कर रहा था, संदेश भेज रहा था और फोन पर जवाब दे रहा था! मैं जानता हूं कि हम व्यस्त संसार में हैं, परंतु इस अर्थ से कि उसके मन में जो सभा चल रही थी, उसके प्रति आदर नहीं था और यह घोर अपमान था। उसे देखने वाले बाकी लोगों के

लिए यह किस प्रकार का उदाहरण होगा! यह छोटी बात लगती है, परंतु सेवा में कार्यरत् लोगों के रूप में मैं सोचता हूं कि हमारा आचरण आदर्श होना चाहिए! *"परमेश्वर के सेवकों के नाते हमारा कार्य वैधता प्राप्त करता है—या नहीं—विस्तारपूर्वक। लोग हमें देख रहे हैं कि हम अपने स्थान में किस प्रकार रहते हैं, सतर्क होकर, विचलित न होते हुए ..."* (2 कुरिन्थियों 6:4, द मैसेज बाइबिल)।

फिलिप्पियों को लिखते समय प्रेरित पौलुस कहता है: *"हे भाइयो, तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो, और उन्हें पहचान रखो जो इस रीति पर चलते हैं, जिसका उदाहरण तुम हममें पाते हो। जो बातें तुमने मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा"* (फिलिप्पियों 3:17; फिलिप्पियों 4:9)।

आपके जीवन का उदाहरण सबसे ऊंची आवाज़ में बोलता है

प्रेरितों के काम 20:17-19

17 उसने मीलेतुस से इफिसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के प्राचीनों को बुलवाया।
18 जब वे उसके पास आए, तो उनसे कहा, "तुम जानते हो, कि पहले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुंचा, मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा।
19 अर्थात् बड़ी दीनता से, और आंसू बहा-बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षड़यन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी, मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।

इब्रानियों 11:4

विश्वास ही से हाबील ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिए चढ़ाया, और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई, क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है।

इफिसुस के अगुवों को उपदेश के अंतिम शब्दों में, प्रेरित पौलुस अपने जीवन के उदाहरण की ओर संकेत करता है, जिसे उन्हें याद करना और अनुसरण करना है। परमेश्वर के वचन की शिक्षा और प्रचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। परंतु लोगों के जीवन में जो "बना रहता है," वह है, परमेश्वर का वचन जो शिक्षा देता है उसे हम मूर्त रूप में कैसे जीते हैं। लोग अच्छे प्रवचन आसानी से भूल जाएंगे, परंतु जो जीवन वे हमें बिताते हुए देखेंगे, और जो

उदाहरण हम प्रस्तुत करते हैं, उसे लम्बे समय तक याद रखा जाएगा। जो हाबिल ने किया, उसे परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकार किया गया और पवित्र शास्त्र कहता है कि यद्यपि वह मर गया है, फिर भी वह बोलता है—उसके काम का स्मरण होते रहता है!

परिश्रम करें

1 कुरिन्थियों 15:10

परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं; और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैंने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।

परमेश्वर हमें अनुग्रह और वरदान देता है, परंतु यह हमारे हाथ में है कि हमें दिए गए वरदानों और अनुग्रह का हम कैसे उपयोग करते हैं। मसीही सेवकाई में फलवंत होने के लिए, हमें परिश्रम करने, जो आसान और आरामदायक है उससे आगे बढ़ने, त्याग करने और अतिरिक्त मील चलकर जाने के लिए तैयार रहना है। परमेश्वर का सेवक जब परमेश्वर के राज्य के निमित्त वास्तव में जब परिश्रम करता है, और अपनी सीमा से आगे बढ़कर कार्य करता है, और जब कोई केवल कम से कम काम करता है, केवल अपने कामों को जारी रखता है, तो उसके अंतर को आसानी से देखा जा सकता है। प्रेरित पौलुस ने स्पष्ट किया कि उसने अन्य लोगों से अधिक परिश्रम किया। यही कारण हो सकता है कि परमेश्वर ने प्रारम्भिक कलीसिया की सीमाओं का विस्तार करने हेतु बड़ी सामर्थ के साथ उसका उपयोग किया।

यह देखना अत्यंत शोचनीय है कि लोग मसीही सेवकाई के लिए आराम और आलस्य के जीवन का साधन के रूप में उपयोग करते हैं। कुछ लोगों ने मसीही सेवकाई को इसलिए चुना क्योंकि वे नियमित संसारिक नौकरी में परिश्रम नहीं करना चाहते। मसीही सेवकाई में होने पर, वे सबकुछ आराम से कर सकते हैं, कम से कम काम कर सकते हैं और आराम की ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं। वे हर काम में ढिलाई बरतते हैं। भाइयो, इस प्रकार के सेवक न बनें, परंतु प्रभु के लिए हमारा सौ प्रतिशत और उससे भी अधिक दें।

नम्रता के साथ चलें

मत्ती 5:5
"धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।"

1 पतरस 5:6
इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

नम्रता हृदय का रवैय्या है जहां पर हम परमेश्वर और लोगों की आधीनता में चलते हैं। यह हृदय की वह प्रवृत्ति है जो हमें अनुमति नहीं देती कि हम खुद के विषय में आवश्यकता से अधिक ऊंचा सोंचें (रोमियों 12:3)। यह हमें धनवान और निर्धन दोनों के साथ बिना किसी भेदभाव के व्यवहार करने की योग्यता देता है। यह हमें योग्यता देता है कि हम खुद को मात्र "एक मनुष्य" समझें और यह देखें कि सारी महानता परमेश्वर की है। यह हमें योग्यता देता है कि हम अन्य सभी विश्वासियों के साथ समान स्तर पर खड़े रहें, भले ही हमने हमारी सेवकाइयों में, सम्पूर्ण जीवन भर कितने ही बड़े बड़े काम क्यों न किए हों।

इस प्रकार, आप मसीही सभाओं में महत्वपूर्ण स्थान नहीं खोजते। आप लोगों के सामने मान्यता, प्रशंसा और तालियों की इच्छा नहीं रखते। जब आप इस प्रकार चलते हैं तब आप नम्रता के साथ चलते हैं। नम्रता खुद को बढ़ावा नहीं देती और परमेश्वर का इन्तज़ार करने से संतुष्ट रहती है कि वह अपने समय में हमें ऊंचा उठाएगा। नम्रता संतुष्ट रहती है कि वह अपने समय में हमें ऊंचा उठाएगा। नम्रता सच्चा बल है। यह वह स्थान है जहां से परमेश्वर और अनुग्रह भेजता है।

शांति का अनुसरण करें

2 तीमुथियुस 2:23,24
23 पर मूर्खता, और अविद्या के विवादों से अलग रह, क्योंकि तू जानता है कि इनसे झगड़े उत्पन्न होते हैं।
24 प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए, पर वह सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण और सहनशील हो।

रोमियों 12:18
जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।

इब्रानियों 12:14
सब से मेल मिलाप रखें, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।

विवाद, कलह और झगड़ों में पड़ने से बचें। कलह से खुद को मुक्त रखें। कुछ मसीही सेवक लड़ते-झगड़ते रहते हैं। वे अपनी मंडली के विश्वासियों के साथ, अन्य मसीही सेवकों के साथ, कलीसिया के बाहर के लोगों के साथ लड़ते-झगड़ते रहते हैं। कलह हर प्रकार की बुराइयों के लिए द्वार खोल देता है। कलह आपका समय और शक्ति बरबाद कर देता है और महत्वपूर्ण कामों को करने से आपको वंचित करता है। हम शारीरिक मनुष्य बन जाते हैं और परमेश्वर के सेवक के समान नहीं। *"क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिए कि जब तुममें डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?"* (1 कुरिन्थियों 3:3)।

जब कोई आप पर दोष लगाता है, आपकी आलोचना करता है, आपको उकसाता है, आपको किसी तरह चोट पहुंचाता है, तो अपने आप से पूछें कि क्या यह मामला इतना महत्वपूर्ण है कि उसके लिए आप अपना समय दें। क्या आपको गलतफहमी दूर करने की, किसी तरह से क्षमा मांगने की या या उस पर बिना कोई ध्यान दिए आगे बढ़ने की ज़रूरत है? यदि आपको किसी तरह प्रतिक्रिया व्यक्त करना है, तो उसे इस तरह करें जिससे सारी बातें शांतिपूर्ण ढंग से हों। ऐसे काम करें जिससे शांति रहे। यदि आपको लगता है कि किसी से बात करने से विवाद और कलह की आग और भड़क उठेगी, तो उसे छोड़ दें। उससे मामले के निकट भी न जाएं। नहेम्याह ने जब अपने जीवन की बुलाहट को पूरा करना आरंभ किया, तब उसके विरोधियों ने उसके काम में बाधा डालने की कोशिश की, परंतु नहेम्याह ने हमारे लिए एक नमूना पेश किया। *"जब सम्बल्लत, तोबियाह और अरबी गेशेम और हमारें अन्य शत्रुओं को यह समाचार मिला, कि मैं शहरपनाह को बनवा चुका; और यद्यपि उस समय तक भी मैं फाटकों में पल्ले न लगा*

चुका था, तौभी शहरपनाह में कोई दरार न रह गया था। तब सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास यों कहला भेजा, "आ, हम ओनो के मैदान के किसी गांव में एक दूसरे से भेट करें।" परन्तु वे मेरी हानि करने की इच्छा करते थे । परन्तु मैने उनके पास दूतों से कहला भेजा, "मैं तो भारी काम में लगा हूं, वहां नही जा सकता; मेरे इसे छोडकर तुम्हारे पास जाने से वह काम क्यों बन्द रहे?" फिर उन्होंने चार बार मेरे पास वैसी ही बात कहला भेजी, और मैने उनको वैसा ही उत्तर दिया" (नहेम्याह 6:1-4)। परमेश्वर ने आपको जो बड़ा काम करने के लिए बुलाया है, उस पर अपना ध्यान केन्द्रित करें। आपके पास कलह के लिए समय नहीं है। मामले को तुरंत और शांति के साथ सुलझाएं, और परमेश्वर के काम में आगे बढ़ते जाएं। *"धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे"* (मत्ती 5:9)। शांति—मेल करने वाले बनें!

हमेशा सीखने के लिए तैयार रहें

1 कुरिन्थियों 8:2

यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूं, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता।

हमेशा सीखने के लिए तैयार रहें। हमेशा सीखते रहें। जो कुछ परमेश्वर आपसे कहता है उसे देखने के लिए अपनी आत्मिक आंखें और सुनने के लिए अपने कान हर समय खुले रखें। हममें से कुछ मसीही सेवक ऐसा दिखाते हैं कि वे सबकुछ जानते हैं—या कम से कम हमारा आचरण ऐसे प्रगट करता है। हम बैठकर दूसरे प्रचारक का नहीं सुनेंगे, विशेष करके यदि वह प्रचारक हमारे समान "बड़ा" नहीं है तो, या वह सेवक हमसे सेवकाई में छोटा हो। हम आवश्यक तौर पर अन्य लोगों की नहीं सुनते जिनके पास हमारे लिए सही शब्द या परामर्श होता है, विशेष तौर पर, यदि वे आम विश्वासी हों और हमारे समान "अभिषिक्त" दिखाई नहीं देते। हमें इस बात को समझना है कि परमेश्वर किसी का भी उपयोग कर सकता है, छोटा बच्चा भी हमारे जीवनों में सही "समय में सही वचन" बोल सकता है। प्रचारक चाहे जितना छोटा हो, यदि हम बैठकर अपने हृदय को परमेश्वर की ओर लगाएंगे तो वह हमसे बात करेगा और हमें कुछ सिखाएगा। "*जो शिक्षा को*

सुनी-अनसुनी करता, वह अपने प्राण को तुच्छ जानता है, परन्तु जो डांट को सुनता, वह बुध्दि प्राप्त करता है" (नीतिवचन 15:32)।

जहां तक सम्भव हो, अपने वचन का पालन करें, या वचन ही न दें

भजन संहिता 15:1-5

1 हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा?
2 वह जो खराई से चलता और धर्म के काम करता है, और हृदय से सच बोलता है;
3 जो अपनी जीभ से निन्दा नहीं करता, और न अपने मित्र की बुराई करता, और न अपने पड़ोसी की निन्दा सुनता है;
4 वह जिसकी दृष्टि में निकम्मा मनुष्य तुच्छ है, और जो यहोवा के डरवैयों का आदर करता हैं, जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठाना पड़े;
5 जो अपना रुपया ब्याज पर नहीं देता, और निर्दोष की हानि करने के लिये घूस नहीं लेता है। जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा।

भजन संहिता 15:5 (द मैसेज बाइबिल)
अपने वचन का पालन करें, भले ही उसके लिए आपको कीमत चुकानी पड़े।

हमारे स्वर्गीय पिता के समान, हमें अपने शब्दों को गंभीरतापूर्वक लेना चाहिए। हमारे शब्द हमारा बॉन्ड, प्रतिज्ञा हो जिसका हमें पालन करना है। मैं मानता हूं कि कभी-कभी ऐसा समय आता है जब हम मनुष्यों के रूप में असफल हो जाएंगे, और हमारे उत्तम से उत्तम उद्देश्यों के लिए भी व्यवहारिक सीमाओं के कारण रूकावट आ सकती है। परंतु, जहां तक हमारी योग्यता है, हमें अपने वचन का पालन करना है। यदि हम कुछ करने की प्रतिज्ञा करते हैं, तो उसे पूरा करने का हम प्रयास करें। कभी-कभी यह ऐसा क्षेत्र होता है जिसमें हम मसीही सेवकों के लिए बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न होती है। हम "ना" कहना नहीं जानते। इसलिए लोगों को प्रसन्न करने हेतु या लोगों के सामने अच्छा दिखने हेतु, हम ऐसे कामों को करने का वचन देते हैं जिनके विषय में हम जानते हैं कि हम कर नहीं पाएंगे। अंत में, हम अपने वचन का पालन नहीं कर पाते और फिर इसके द्वारा उन लोगों में बड़ी निराशा उत्पन्न होती है जो अपेक्षा करते हैं कि जिस बात का हमने वचन दिया है उसे हम पूरा करेंगे। तब हम अपनी विश्वसनीयता खो बैठते हैं। और इससे हमारी सेवकाई पर असर पड़ता है। लोग भरोसा खो देते हैं, चोट खाते है, अपमानित महसूस करते हैं, और शायद स्थानीय कलीसिया भी छोड़ कर चले जाएं। प्रेरित पौलुस

ने सेवकाई को इसे गंभीर बात मानी थी। कुरिन्थुस की कलीसिया को लिखते लिए वह कहता है, *"इसलिए मैंने जो यह इच्छा की थी तो क्या मैं ने चंचलता दिखाई? या जो करना चाहता हूं क्या शरीर के अनुसार करना चाहता हूं, कि मैं बात में 'हाँ, हाँ' भी करूँ और 'नहीं, नहीं' भी करूँ?"* (2 कुरिन्थियों 1:17)।

यह सच है कि हम इस क्षेत्र में सिद्ध न हों। हम किसी बात की प्रतिज्ञा करते हैं और उसका पालन करने से चूक जाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में, हम लोगों से तुरंत क्षमा मांगे और उसे एक सबक के रूप में सीखें, और अपनी सीमाओं के क्षेत्र को जानें ताकि हम इस गलती को फिर दोहरा न सकें।

प्रभु यीशु मसीह हमें सिखाता है, *"परन्तु तुम्हारी बात 'हां' की 'हां', या 'नहीं' की 'नहीं' हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह बुराई से होता है"* (मत्ती 5:37)।

दूसरों के समय का आदर करें–वक्तशीर बनें, हमेशा

इफिसियों 5:15,16

15 इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते होः निर्बुद्धियों के समान नहीं: पर बुद्धिमानों के समान चलो।

16 अवसर को बहुमूल्य समझो क्योंकि दिन बुरे हैं।

एक और बड़ा क्षेत्र है, जिसमें में मुझे ऐसा लगता है कि हम मसीही सेवकों को वक्तशीरता के मामले में सुधार लाने की ज़रूरत है। मुझे याद है कि कुछ वर्षों पहले, एक स्थानीय कलीसिया के विज्ञापन मासिक में एक पूरे पृष्ठ पर सम्पूर्ण दिन की प्रार्थना सभा का विज्ञापन दिया गया था जो हमारे शहर के एक बड़े सभागार में आयोजित की गई थी। उसमें लिखा था कि प्रार्थना सभा का आरम्भ 9 बजे होगा। इस प्रार्थना सभा का आयोजन एक विशाल कलीसिया द्वारा किया गया था और उस कलीसिया का नाम और उसके पासबानों के नाम विज्ञापन में मोटे मोटे अक्षरों में लिखे गए थे। मैंने फैसला किया कि अन्य विश्वासियों के साथ इकट्ठा होकर प्रार्थना करना एक अच्छी बात है, इसलिए मैंने उस प्रार्थना सभा में जाने के लिए उस दिन को अलग रखा। मैं 9 बजे से कुछ मिनिट पहले उस स्थान में जा पहुंचा। मुझे यह देखकर अत्यंत निराशा हुई कि वहां पर कोई नहीं था

और हॉल के दरवाज़े बंद थे। इसलिए मैं सुरक्षा गार्ड से मिला और उससे पूछा कि क्या कोई आया था आदि। फिर मैंने कलीसिया के दफ्तर में उस सभा के विषय में पूछताछ करने के लिए फोन किया। यह अत्यंत शर्मिंदगी का क्षण था। जो उत्तर मुझे मिला वह था, कृपया वहां पर इंतजार कीजिए और पास्टर 10 या 11 बजे तक आ जाएंगे। मैं निराश होकर तुरंत उस स्थान को छोड़कर चला गया।

भारत में यह घोषणा करने का प्रचलन है कि मसीही सभा या आराधना का आरम्भ किसी निश्चित समय में होगा, परंतु आयोजक घोषित समय के 30 मिनिट बाद सभा आरम्भ का उद्देश्य रखते हैं। यह बहुत बुरी प्रथा है। सबसे पहले, हम आरम्भ करने के समय के विषय में लोगों से झूठ बोल रहे हैं। दूसरी बात, हम उन्हें 30 मिनिट तक इंतजार करवाकर उन लोगों के साथ अन्याय कर रहे हैं, जो समय पर आते हैं। तीसरी बात, हम अपने ही लोगों में गलत आदत डाल रहे हैं—एक समय की घोषणा करना और उसके 30 मिनिट बाद आरम्भ करना। वे भी ऐसा करेंगे, और यह समस्या जारी रहती है। हमें निर्णय लेना है जब हम सभा के आरम्भ समय की घोषणा करते हैं, तब हम इस तरह से अपना नियोजन और तैयारी करें जिससे हम समय पर आरम्भ कर सकें। उस स्थान पर चाहे कितने ही लोग क्यों न हों, हमारी ज़िम्मेदारी है अपने वचन का पालन करना और समय पर आरम्भ करना। यदि हम कुछ समय तक ऐसा लगातार करते रहेंगे, तो लोग समझेंगे कि उन्हें समय पर आने की ज़रूरत ही नहीं तो वे आराधना के मुख्य भाग से वंचित रह जाएंगे। जी हां, शायद कभी ऐसे अवसर आएंगे जब हमें मुश्किल परिस्थितियों के कारण विलम्ब होगा। ऐसे मामलों में, हमें लोगों से क्षमा मांगनी चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम भविष्य में ऐसी परिस्थिति से बचने के लिए आवश्यक सावधानी बरत सकें।

यही बात व्यक्तिगत् मुलाकातों के विषय में भी है जिसका समय हम तय करते हैं। यदि हम किसी व्यक्ति से निश्चित समय पर हमसे मिलने के लिए कहते हैं, तो हमें वहां पर रहने की ज़रूरत है और उस निर्धारित समय में उस व्यक्ति को मिलने की ज़रूरत है। वह व्यक्ति चाहे जो हो या भले ही वह व्यस्त न हो, फिर भी उस व्यक्ति को "इंतज़ार करवाते" रखना

अनुचित है। यदि हम किसी परिस्थिति के कारण अपने समय का पालन नहीं कर पाते हैं, तो हम यथासम्भव उस व्यक्ति को जानकारी दें, ताकि वे भी हमारे समय के अनुसार अपने समय में बदलाव ला सकें।

परमेश्वर के सामने और मनुष्यों के सामने दोषरहित रहें

2 कुरिन्थियों 6:3,4

3 हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।

4 परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्‌गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेषों से, दरिद्रता से, संकटों से,

2 कुरिन्थियों 8:21

क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं, हम उनकी चिन्ता करते हैं

जहां तक सम्भव हो, हमारा आचरण परमेश्वर और मनुष्यों के सामने दोषरहित हो। हमारा लक्ष्य है हमारे व्यक्तिगत् जीवनों में और सेवकाई में जिस तरह हम कार्य करते हैं, उसमें, हम निर्दोष रहें। हमें इस प्रकार का जीवन बिताना चाहिए कि हमारे पास छिपाने के लिए कुछ भी न हो। जी हां, हम गलतियां करते हैं और प्रभु से क्षमा और सुधार पाते हैं, और उन बातों को हम पीछे छोड़ देते हैं और आगे बढ़ते हैं। हम गलत बातों को आगे जारी न रखने का चुनाव करते हैं। सभी बातों में—हम अपने जीवनसाथी और बच्चों के साथ कैसे रहते हैं, हम अपने पैसों का और समय का कैसे उपयोग करते हैं, हम किस तरह से सेवा आदि करते हैं—हमें प्रभु के सच्चे सेवकों के रूप में खुद को प्रगट करना है। हमें न केवल परमेश्वर की दृष्टि में सही रहना है, परंतु जहां तक सम्भव हो, मनुष्यों की दृष्टि में भी सही रहना है।

जीवन का आनन्द उठाएं, परंतु अश्लील बातों से और मूर्खतापूर्ण विनोद से दूर रहें

इफिसियों 4:29

कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो।

इफिसियों 5:3,4

[3] जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्यभिचार, और किसी प्रकार के अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो।

[4] और न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्ठे की, क्योंकि ये बाते सोहती नहीं, वरन् धन्यवाद ही सुना जाए।

आराम या सुखचैन की मांग न करें

2 कुरिन्थियों 4:8-10

[8] हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते;

[9] सताए तो जाते हैं, पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते।

[10] हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो।

1 थिस्सलुनीकियों 2:6,9-12

[6] और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुमसे, न और किसी से।

[9] क्योंकि, हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो, कि हमने इसलिए रात दिन काम धन्धा करते हुए तुममें परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया कि तुममें से किसी पर भार न हों।

[10] तुम स्वयं ही गवाह हो, और परमेश्वर भी, कि तुम्हारे बीच में जो विश्वास रखते हो हम कैसी पवित्रता और धार्मिकता और निर्दोषता से रहे।

[11] तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव करता है, वैसे ही हम तुममें से हर एक को भी उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे,

[12] कि तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।

आज यह आम प्रचलन चल रहा है, “विशेषकर महान और सामर्थी,” “अभिषिक्त” सेवकों के मध्य कि जब उन्हें किसी सभा या आराधना में प्रचार करने और सेवा करने के लिए बुलाया जाता है, तब उनके द्वारा बड़ी बड़ी भेंटों की, यातायात के लिए एयरकंडिशन्ड गाड़ियों, रहने के लिए फाईव्ह स्टार होटेल्स और सुपर हिरो के समान बर्ताव की मांग की जाती हैं। मैं बड़े बड़े दानों, या यात्रा के लिए उत्तम वाहनों या फाईव्ह स्टार होटेल में रहने के विरोध में नहीं हूं—परंतु बाहर जाकर प्रचार करने की आवश्यकता

के रूप में ऐसी बातों की मांग करना पासबानों और सेवकों के लिए पूर्ण रूप से गलत है। यदि आयोजनकर्ता स्वेच्छा से इन बातों को देते हैं तो उनका आनन्द उठाएं! यदि आप स्वयं उसका खर्च उठाते हैं, तब भी ठीक और अच्छा है। पर इस प्रकार के "राजसी" व्यवहार की मांग और अपेक्षा करना और उसे अपना मानक निर्धारित करना जिसके द्वारा परमेश्वर का सेवक किसी निमंत्रण को स्वीकार या इन्कार करे, यह मसीह सदृश्य होने के बिल्कुल निकट नहीं है! यदि परमश्वेर चाहता है कि हम जाकर सेवा करें, तो हमें फाईव्ह स्टार होटेल में रहने मिले या किसी और के घर में कहीं सोने मिले, हमें उसके लिए तैयार रहना चाहिए। हमारी बुलाहट परमेश्वर की आज्ञा को मानना है, सुखविलास और आराम को खोजना नहीं।

मैंने यह भी देखा है कि ऐसे सेवक बड़े आनन्द के साथ किसी और का पैसा खर्च करके इस प्रकार के आराम और सुविधाओं का आनन्द उठाते हैं। परंतु जब उन्हें स्वयं इसका भुगतान करने के लिए कहा जाए, तब वे तुरंत सारी बातों को मौलिक आवश्यकताएं कहकर टाल देते हैं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए! परमेश्वर ने हमें जो संसाधन दिए हैं, उसका हमें मूल्य रखना चाहिए, चाहे वह हमारे हाथ में हो या किसी और के हाथ में।

अब दूसरी ओर, यदि आप पासबान हैं, या सभा/कॉन्फ्रेन्स का आयोजन करने वाला कोई और किसी स्त्री या पुरुष को या परमेश्वर के जन को निमंत्रण देना चाहता है, तो आपको उस विषय में क्या करना चाहिए? मैं सोचता हूं कि यह जानना बेहतर होगा कि उस परमेश्वर के जन को आने के लिए और आपकी सभा में सेवकाई करने के लिए आपकी संस्था उस प्रचारक के लिए यात्रा, निवास, और भोजन के लिए कितना खर्च कर सकती है? उसके बाद उस निमंत्रण के साथ यह भी स्पष्ट रूप से लिखें कि आप कितना खर्च कर सकते हैं, उदाहरणः इस एयरलाईन की हवाईयात्रा में इकॉनॉमिक क्लास में आने जाने की यात्रा, इतने दिनों के लिए इस स्थान में रहना, और सेवा करने के लिए ईनाम की इतनी रकम आदि। यदि वे इस प्रकार के प्रबंध से खुश हैं तो वे निमंत्रण से सहमत होने या निमंत्रण का इन्कार करने के लिए स्वतंत्र हैं। इस प्रकार आप गलत अपेक्षाओं से बच सकते हैं और आपको दिए गए पैसों के उत्तम भण्डारी बन सकते हैं, परमेश्वर

के किसी सेवक द्वारा मांग किए गए अनावश्यक खर्चों और सुखविलासों के लिए धन का अपव्यय किए बिना।

प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर के राज्य के लिए बहुत कुछ किया और प्रचार करने, कलीसियाओं का रोपण करने और विश्वासियों को दृढ़ बनाने हेतु अपनी यात्रा में उसने कई कठिनाइयों का सामना किया। उसने बहुत अधिक यात्रा या व्यस्तता का बहाना बनाकर उन कलीसियाओं से और विश्वासियों से जिनकी वह सेवा करने जाता था, सुविधाओं या विशेष बर्ताव की मांग नहीं की। हमें उसका उदाहरण अपनाना चाहिए।

पौलुस ने फिलिप्पुस की कलीसिया को आज्ञा दी, *"तुम्हारी कोमलता" सब मनुष्यों पर प्रगट हो; प्रभु निकट है"* (फिलिप्पियों 4:5)। कोमलता यह शब्द वासनाओं पर नियंत्रण, जीवन की सामान्य गंभीरता, किसी भी बात की अति से मुक्त रहने का उल्लेख करता है। इस शब्द का "उचित" अर्थ है, जो कुछ भी उचित या सही है, और उसके बाद, औचित्य, सौम्यता, शालीनता। उन्हें अतिरिक्त वासना, या पोशाक या खानपान में लिप्त नहीं होना था। उन्हें अपनी भूख पर नियंत्रण रखना था, अपने मिज़ाज पर संयम रखना था, और प्रभु जल्द ही आने वाला है इस उम्मीद में लोगों के लिए जो कुछ उचित था उसका उदाहरण बनना था। [सौम्यता इस शब्द का स्पष्टीकरण जो अल्बर्ट बार्नेज़ नोट्स ऑन द बाइबल, अल्बर्ट बार्नेज़ (1798-1870) से उद्धृत]

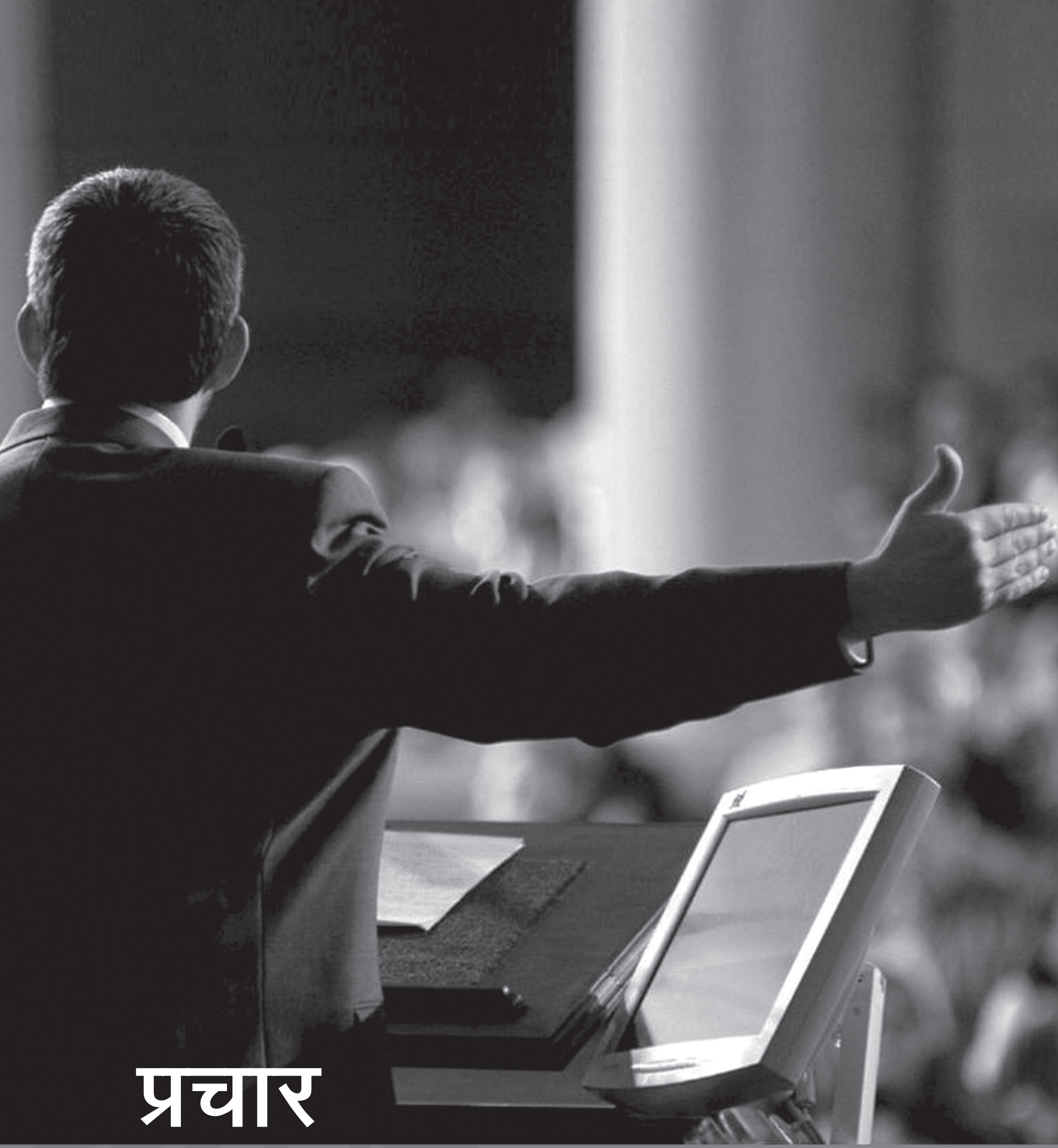

प्रचार

सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना। तेरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता, और ऐसी खराई पाई जाए कि कोई उसे बुरा न कह सके; जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने की गौं न पाकर लज्जित हों।

(तीतुस 2:7,8)

अध्याय 5

5
प्रचार

परमेश्वर ने आज्ञा दी कि उसके वचन का प्रचार किया जाये ताकि जीवनों को वह स्पर्श कर सके। परमेश्वर के सेवक होने के नाते हम जानते हैं कि अच्छा प्रचार और शिक्षा लोगों पर प्रभाव डाल सकती है। लोग उन्नति करते हैं, बल प्राप्त करते हैं और उत्साहित होते हैं। जब परमेश्वर के वचन का सामर्थ के साथ प्रचार किया जाता है, तो हम आत्माओं को बचते हुए, पापियों को पश्चाताप करते, लोगों को चंगा होते और छुटकारा पाते देखते हैं। इन बातों का हिस्सा होना एक अद्‌भुत बात है।

दूसरी ओर, ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जिनमें हमें परमेश्वर के वचन का प्रचार करते और सिखाते समय चौकन्ना रहना आवश्यक है। आज की बहुत-सी कलीसियाओं में प्रवचन एक उबाऊ धार्मिक उपदेश, जीवनरहित भाषण और कभी-कभी मंच से किसी को जिस मुद्दे को आगे बढ़ाना है, उसे बढ़ाने के लिये राजनैतिक दबाव, से अधिक नहीं होता। अन्य कुछ जगहों में, प्रवचन असंबद्ध कहानियों से बिखरा हुआ, आत्मिक उन्माद और भावनाओं की उत्तेजना को बढ़ानेवाले "हालेल्लूयाह" और "परमेश्वर की स्तुति हो" की पुनरावृत्तीय कर्णकटुध्वनी से अधिक नहीं होता। इसके अन्त में, आप सोचते रहेंगे कि प्रचारक क्या बताने की कोशिश कर रहे थे या प्रचार के द्वारा मैं परमेश्वर के बारे में क्या खोज पाया! अन्य कुछ स्थानों में हम किसी सिनेमागृह के चलचित्र के "मसीहीकृत" विकल्प के समान सेवकाई और प्रवचन को "बड़े मनोरंजक-कार्यक्रम" होते हुए देखते हैं। प्रचारक "समकालीन शैली" में ऐसी भाषा में प्रचार करते हुए अपने श्रोताओं को प्रभावित करने और उनके मनोरंजन के लिये पूरी तरह तैयार हैं, जो उसके भाषण को किसी उद्धार न पाये हुए टेलिविज़न मेजबान या ऐसे ही किसी प्रेरणादायी प्रचारक के भाषण से अलग न करेगा। क्रूस का प्रचार नहीं होता है। "पाप," "स्वर्ग," "नरक," "पश्चाताप" जैसे शब्दों को अप्रचलित माना जाता है। चिन्हों,

चंगाइयों, आश्चर्यकर्म और आत्मा के वरदान की जगह चमचमाती रोशनी, प्रतिभासंपन्न सुविख्यात व्यक्तियों, अभिनेताओं और सुसज्जित मंचों-रंगमंचों ने ले ली है। यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रचार का और परमेश्वर के समझौता न करनेवाले वचन की शिक्षा का जो भी हो!

परमेश्वर के वचन का प्रचारक होना मायावी/रोचक स्थान अथवा भूमिका नहीं है। वह ऊंची बुलाहट का प्रत्युत्तर है। वह ऊंचे मानकों से जीवन बिताने की और कठोर मापदंडों से न्याय किये जाने की सम्मति है। *"हे मेरे भाइयो, तुममें से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे"* (याकूब 3:1)। यदि हम इसके लिये तैयार नहीं हैं, तो हमें प्रचार नहीं करना चाहिये।

लोगों को परमेश्वर के वचन में दृढ़ करें

प्रेरितों के काम 20:32

और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं, जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है।

इफिसियों 4:14

ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उनके भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों।

अपनी अन्तिम चेतावनी में पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के अगुवों को परमेश्वर और परमेश्वर के वचन की ओर, जो उन्हें स्थापित कर सकता था, इंगित किया। यहां तक कि आज भी परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमारा एक उद्देश लोगों को परमेश्वर के वचन में स्थापित करना है। वचन उन्हें स्थापित करेगा और उन्हें उनकी मीरास में आने में सहायता करेगा। हम यहां लोगों का मनोरंजन करने, उनका जी बहलाने और उनको अच्छा महसूस करवाने या अपने उत्तम भाषण से उन्हें प्रभावित करने के लिये नहीं हैं। अपने दृष्टान्तों और कहानियों से उनके मनों को उत्तेजित करने के लिये हम यहां नहीं हैं। इन सब के अन्त में यदि लोग परमेश्वर के वचन में स्थापित नहीं हुए, तो यह सब व्यर्थ है। जब लोग परमेश्वर के वचन में

स्थापित होंगें, तभी वे भ्रम की युक्तियों की प्रत्येक बयार से उछाले न जाकर स्थिर और दृढ हो पायेंगें।

शुद्ध, आदरणीय, वास्तविक और हितकारी बने रहें

तीतुस 2:7,8

[7] सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना। तेरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता, [8] और ऐसी खराई पाई जाए कि कोई उसे बुरा न कह सके; जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हों।

परमेश्वर के वचन की सेवकाई में हमें जिन मापदंडों का अनुपालन करना है उनका वर्णन प्रेरित पौलुस ने किया है। उसने हमें इन बातों को करने कहा हैः

- **सत्यनिष्ठाः** पवित्र और दोषरहित। मुझे असत्य का प्रचार नहीं करना चाहिये और न ही उसे सिखाना चाहिये। मुझे कल्पित कहानियां और मनुष्यों की बनायी कहानियों का प्रचार नहीं करना चाहिये। बाइबल का विरोध करनेवाली बात असत्य है।
- **आदरः** सम्मान। संदेश देने का तरीका आदरयुक्त होना चाहिये और उस तरीके आप श्रोताओं का आदर पी सकें। परमेश्वर के वचन की सेवकाई करते समय मैं निम्न स्तर के शब्दों का प्रयोग नहीं कर सकता और जो मैं कर रहा हूं, उसे महत्त्वहीन नहीं बना सकता। मैं यहां "कोशिश करने, अच्छा दिखने और मेरे श्रोताओं द्वारा स्वीकार किया जाना महसूस करने के लिये नहीं हूं। सेवकाई करते समय मुझे सम्मान की भावना और परमेश्वर का भय और उसके वचन को धारण कर चलना चाहिये।
- **खराईः** सच्चाई। जिन बातों में मैं विश्वास नहीं करता, उनका मैं प्रचार नहीं कर सकता। जिन बातों पर मैं नहीं चलता और जिनको अपने जीवन में मैं व्यवहार में नहीं ला सकता, उनका मैं प्रचार नहीं कर सकता। केवल "अच्छा प्रतीत" करनेवाले संदेश का, अच्छी कल्पना जो पूर्णतः विश्वासयोग्य और अवलंबित रहने के योग्य न हो, उनका मैं प्रचार नहीं कर सकता।

- **ऐसी बातें जिनको कोई दोष न लगा सके:** स्वस्थ बातें। जिन शब्दों का मैं प्रयोग करता हूं और जिस प्रकार मैं बोलता हूं, वे निर्दोष होना चाहिये; जिनमें लोग त्रुटी न ढूंढ सकें।

देने के लिए प्रचार करें, प्रभावित करने के लिए नहीं

2 कुरिन्थियों 2:17

क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई से और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं।

2 कुरिन्थियों 4:2

परन्तु हमने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठाते हैं।

परमेश्वर के वचन को प्रचार करने का और उसकी सेवकाई करने का हमारा उद्देश जीवन का परिवर्तन करनेवाले प्रकाशन और सत्य को बांटना होना चाहिये। यदि हमारा उद्देश प्रथमतः लोगों को प्रभावित करना है, ताकि वे उत्तम प्रवचन के लिये हमारी पीठ थपथपायें, तो हमने परमेश्वर के वचन की हमारी सेवकाई का सम्पूर्ण उद्देश खो दिया है।

"परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं" से हमें बचना चाहिये। यहां पर एक शराब की दुकान के मालिक की कल्पना की गई है, जो शराब में पानी मिलाता है अथवा अन्य चीजों को असली शराब की जगह मिलाता है। परमेश्वर के वचन की सेवकाई में दो बातें महत्वपूर्ण है—न हलका करना और न मिलावट करना। परमेश्वर के वचन की बातों को स्पष्ट न बताते हुये उनको हलका मत कीजिये। मनुष्य की कल्पनायें, तत्वज्ञान, उत्तम और लोकप्रिय विचारों को परमेश्वर के वचन के साथ न मिलाईये। समझौता न करते हुये, मिलावट न किये हुये परमेश्वर के वचन की सेवकाई के प्रति सच्चे बने रहिये।

कठिन विषयों को सम्बोधित करें, प्रेम के साथ करें

इफिसियों 4:13-15

[13] जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएं।
[14] ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उनके भ्रम की युक्तियों की और उपदेश की हर एक बयार से उछाले और इधर-उधर घुमाए जाते हों।
[15] वरन् प्रेम से सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं।

रोमियों 2:3,4

[3] हे मनुष्य, तू जो ऐसे-ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है और आप वे ही काम करता है, क्या यह समझता है कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा?
[4] क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव सिखाती है?

जबकि हम प्रत्येक व्यक्ति आशा या विश्वास या सफलता या आशिषों पर उत्तम, सकारात्मक, उत्साहित करनेवाले संदेश को सुनाने में आनन्द उठाते हैं, हमें व्यक्तिगत चरित्र, लैंगिक शुद्धता, वैवाहिक विश्वसनीयता, आर्थिक प्रामाणिकता, दूसरों को क्षमा करना, बलिदान आदि विषयों पर भी बोलना चाहिये। इन में से कुछ विषयों पर मंच से बोलना कठिन होगा। तथापि हमें सत्य को प्यार से बोलना चाहिये, ताकि हम सब बातों में मसीह के समान बढ़ सकें। यह करने की कुंजी प्यार में है और न दोष लगाने के तरीके में। मैंने ऐसी गलतियां कई बार की। जब मेरा उद्देश परमेश्वर के मापदण्डों को सिखाना था, तो जिस तरीके से मैं उसे व्यक्त करता था, वह तरीका लोगों का न्याय करने और उन्हे दोष लगाने का था। इसलिये, समय के साथ मैंने सावधान रहना सीखा, और कठिन क्षेत्रों में मैंने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि मैं सत्य कहूं, परन्तु उसे मैं परमेश्वर की भलाई के साथ करूं। आग और गन्धक उगलना लोगों को हम से दूर करता है। यह परमेश्वर की अच्छाई है जो लोगों पश्चाताप की ओर ले जाती है।

ऐसे विषयों पर बोलते समय, यह महत्वपूर्ण है कि लोग जान लें कि हम भी उन बातों का सामना करते हैं और हम स्वयं भी परिपूर्ण नहीं हैं। हम उसी शैतान, उन्हीं परीक्षाओं और उन्हीं चुनौतियों का सामना करते हैं। हम अभी भी परिपूर्ण नहीं हुए हैं, लेकिन परिपूर्णता के लिये प्रयास कर रहे हैं और मसीह की समानता की ओर बढ़ने की यात्रा में हमारे साथ सम्मिलित होने के लिये हम दूसरों को उत्साहित करते हैं। हमें अपने आप को परिपूर्ण दिखाने के तरीके से प्रचार करने से सचेत रहना चाहिये, मानो हमने सब कुछ एक साथ पा लिया है और हम क्षुद्र लोगों से बात कर रहे हैं, जिन्हें मदद की आवश्यकता है। यहां फिर मैंने बातों को बताने के तरीके में गलतियां की हैं, और मुझे सीखना पड़ा कि उन्नति करनेवाले, न कि अवनति करनेवाले, तरीके में बातें कैसे करें। जैसा नीतिवचन में कहा गया है, *"... मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है"* (नीतिवचन 16:21)।

वचन का सही अर्थ समझाएं—सही शिक्षा को बनाए रखें

2 तीमुथियुस 1:13,14

13 जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।

14 और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हममें बसा हुआ है, इस अच्छी थाती की रखवाली कर।

2 तीमुथियुस 2:15

अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

1 तीमुथियुस 4:16

अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।

तीतुस 2:1

पर तू ऐसी बातें कहा कर जो खरे उपदेश के योग्य हैं।

परमेश्वर के वचन के सेवक होने के नाते हम पर सत्य के वचन को सही तरीके से समझाने की-सत्य में मिलावट किये बिना अथवा अन्य बातें

उसमें मिलाये बिना सही तरीके से परिभाषित करने की, अनुवाद करने की और उसे लोगों के समझने योग्य बनाने की बड़ी जिम्मेदारी है। यह महत्वपूर्ण है कि हम बाइबल में पढ़ी हुई कहानियों के आधार पर विचारों और बातों को सृजन न करें, और अपनी कल्पनाओं का प्रचार न करें। यह महत्वपूर्ण है कि हम बाइबल संबंधी अर्थबोध करने में उचित नियमों का पालन करें, और वचन की संपूर्णता के प्रकाश में विषयों पर ध्यान दें, और न ही असंबद्ध संदर्भो पर आधारित। हमें वचन के द्वारा ही वचन का अनुवाद करने देना है। हमें अपने स्वयं के जीवनों पर और हम क्या सिखा रहे हैं इस पर लगातार ध्यान रखना है। हमें स्वयं को प्रश्न पूछने की आवश्यकता है, जो हम सिखा रहे और प्रचार कर रहे हैं, वह अचूक और परिपूर्ण है। यदि हम ऐसा करते रहेंगें, तो हम स्वयं को और जो लोग हमें सुनते हैं, उनको बचायेंगे। यदि आपको यह निश्चय नहीं कि यह उचित उपदेश है, तो उसकी उनसे चर्चा करें जो परमेश्वर के परिपक्व सेवक हों और जो वचन में दृढ़ हों। आप जो प्रचार करते और शिक्षा देते हैं उन पर दृष्टि रखें। उचित उपदेश को बनाये रखें।

नियम पर नियम

यशायाह 28:9,10

[9] "वह किसको ज्ञान सिखाएगा, और किसको अपने समाचार का अर्थ समझाएगा? क्या उनको जो दूध छुड़ाए हुए और स्तन से अलगाए हुए हैं?
[10] क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां।"

परमेश्वर आज्ञा पर आज्ञा देकर, नियमों पर नियम लगाकर हमारे साथ छोटे बच्चों के साथ करने जैसा व्यवहार करता है। वह हमें सत्य की थोड़ी समझ देता है। और फिर वह उसको बढ़ाता है। और जैसे-जैसे हमारी समझ और अनुभव उस सत्य में बढ़ने लगते हैं, तो वह ऐसा करना जारी रखता है। यह हमें सीखने के लिये बहुत अच्छा पाठ हैं। हमें सत्य को नियम पर नियम, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां करके देते रहता है, ताकि लोग उस सत्य में बढ़ सकें। यह यात्रा है जो सत्य के गहन, स्पष्ट प्रकाशन में हम एकसाथ कर रहे हैं।

मुझे निश्चय है कि पासवान की हमारी सेवकाई में हम में से कईयों ने यह अनुभव किया है। पहली बार जब हमने किसी विशिष्ट विषय के बारे में कहा, तो लोगों को उसे समझने में कठिनाई हुई होगी। कई प्रश्न और शंकायें रही होगी। हम जब कुछ समय के बाद पुनः उस विषय को छेड़ते हैं और बातों को अगले स्तर पर ले जाते हैं, तो लोग उसे पहले से अच्छी तरह समझ सकते हैं। और जब आप सत्य के निश्चित क्षेत्र में लौटते और उसका अध्ययन करते हैं, सीखते हैं और अनुभव करते हैं, तो प्रकाश अधिकाधिक तेज होने लगता है। बातें अधिक स्पष्ट होने लगती हैं। उस सत्य के संबंध में परमेश्वर क्या चाहता है कि लोग करें, उसे लोग अच्छी तरह जानने लगते हैं। हम उसमें कदम-ब-कदम बढ़ने लगते हैं।

सही समय सही वचन दें

यशायाह 50:4
प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूं। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं।

नीतिवचन 25:11 (द मैसेज बाइबिल)
जैसे चान्दी की टोकरियों में सोनहले सेब हों वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है।

प्रत्येक परिस्थिति में परमेश्वर अपने लोगों को कौनसा "वचन" देना चाहता है यह जानना ज़रूरी है। यदि आप भ्रमणशील प्रचारक हैं, तो यह आपके बारे में सत्य है और यदि आप स्थानीय कलीसिया के पासवान हैं, तो यह विशेष रीति से सत्य है। जिन विषयों पर परमेश्वर हमारा ध्यान चाहता है, उनमें हमें संवेदनशील रहना आवश्यक है। यदि हम परमेश्वर की सुनेंगे, तो वह हमें परिस्थिति के अनुसार वचन को लाने का अधिकार देगा। आपके पास आनेवाले लोग परमेश्वर से उनके साथ बात करने की अपेक्षा करेंगे। वहां हर एक के लिये कुछ होगा।

अपने "प्रकाशनों" का प्रचार करने से पहले, उन्हें प्रमाणित करें

इब्रानियों 13:9

नाना प्रकार के विचित्र उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिनसे काम रखनेवालों को कुछ लाभ न हुआ।

मत्ती 13:52

उसने उनसे कहा, "इसलिए हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है।"

परमेश्वर के सेवक होने की हैसियत से हम कभी-कभी अपने आपको "नया" और "ताजा" प्रकाशन लाने के "दबाव" में पाते हैं। लोगों ने जो पहले नहीं सुना वह वे सुनना चाहते। सो दबाव में हम कुछ नये—कुछ ताजे प्रकाशन के साथ आगे आने का प्रयास करते हैं। कभी-कभी हम सही हो सकते हैं और परमेश्वर के वचन में नयी अंतदृष्टि—वचन में छिपा हुआ खजाना जो हमने पहली बार देखा और लोगों तक उसे पहुंचाने में समर्थ हैं—देने में सफल होते हैं। तथापि, यदि हम सोचते हैं कि हमारे पास "प्रकाशन" है जिसके सैद्धान्तिक और बाइबिल संबंधी अचूकता के विषय में हम अनिश्चित हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि प्रचार करने से पहले हम उसे "प्रमाणित" करें। इस बात को देखें कि जो आपके पास है उससे परमेश्वर के अनुभवी सेवक सहमत हैं। परखें कि वचन की संपूर्णता के प्रकाश में वह "प्रकाशन" सही है। आत्मा और वचन सहमत हैं (1 यूहन्ना 5:7)। सो पवित्र आत्मा ऐसी कोई बात प्रकट नहीं करेगा जो परमेश्वर के प्रकट वचन (बाइबिल) और परमेश्वर के वचन (यीशु मसीह के व्यक्तित्व) के विरोध में हो। उस "प्रकाशन" को रोके रखिये जब तक आपको ऐसा नहीं लगता कि यह अचूक है और इसलिये इसे परमेश्वर के लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। क्योंकि यदि ऐसा कुछ बताया गया और हमें पता चलता है कि यह गलत है, तो फिर उससे पीछे हटना बहुत कठिन होगा।

दूसरी ओर, "पुराने खजाने" को लाकर लोगों को प्रचार करने से मत डरिये। अधिकांश सत्य जिनका मैं आज प्रचार करता हूं, उनका मैं अपनी युवावस्था से—40 सालों से अधिक—प्रचार करता आया हूं। यह वही सत्य

है। सत्य बदला नहीं है। समझ की मेरी गहराई, उस सत्य में मेरा अनुभव, उस सत्य में मेरा आत्मविश्वास और स्पष्टता और मेरी उसे बताने की क्षमता इन वर्षों में बढ़ी है। लेकिन यह वहीं "पुराना खजाना" है जिसका मैं प्रचार करता आया हूं। इसमें कुछ भी गलत नहीं! यह सार्वकालिक सत्य है। और हमेशा नये लोगों को इन सार्वकालिक सत्यों में स्थिर होने की आवश्यकता है।

सामयिक रहें—परंतु ईश्वरविज्ञान द्वारा होने वाले विषयान्तर को टालें

2 पतरस 1:12

इसलिए यद्यपि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है उसमें बने रहते हो, तौभी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूंगा।

सत्य की समझ और सत्य का लागूकरण प्रगतिशील है। सो जब मसीह की कलीसिया परिपक्व होती जाती है, तो सत्य की हमारी समझ और प्रतिदिन के जीवन में उनको लागू करने की हमारी क्षमता बढती जाती है। और परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हमें "सत्य वचन" में सामयिक रहना है। उदाहरण के लिये, पवित्र आत्मा के बप्तिस्मे का सत्य बाइबिल में हमेशा था। लेकिन अंधकारमय युग के समय से 1900 के आरंभ में अझूसा स्ट्रीट जागृति के साथ लोगों ने बड़े पैमाने पर पवित्र आत्मा के अभिषेक का अनुभव करना शुरू किया। इसने पेन्तेकुस्तीय और अन्य क्रांतियों को जन्म दिया। पेन्तेकुस्तीय क्रान्ति के शुरूवाती दिनों में लोग "घण्टों तक" और कभी-कभी दिनोंदिन पवित्र आत्मा का बप्तिस्मा पाने और अन्य भाषा में प्रार्थना करने के लिये रूके रहे। समय के साथ लोग यह समझ गये कि प्रार्थना करना और पवित्र आत्मा का बप्तिस्मा पाना और अन्य भाषा में प्रार्थना करना आरंभ करना कितना आसान और सहज है। परमेश्वर का वचन बांटना और एक घण्टे के अन्दर पवित्र आत्मा पाने में लोगों की सहायता करना आज एक नियमित बात है। हम यहां क्या देखते हैं—कि मसीह की देह सत्य में और उस सत्य को कैसे अमल में लाना इस बात की समझ में बढ़ चुकी है।

अपुल्लोस वचन का दृढ़ सेवक था। लेकिन वह सत्य केवल यूहन्ना के बप्तिस्मे तक जानता था। इसलिये जब वह प्रिस्किल्ला और अक्विल्ला से मिला, तो उन्होंने उसे क्रूस पर मसीह के पूरे किये गये कार्य के विषय में

"अद्यावत जानकारी" दी। तब फिर अपुल्लोस नये नियम का दृढ़ शिक्षक और कुरिन्थ की कलीसिया का एक स्तंभ बना। *"अपुल्लोस नामक एक यहूदी, जिसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो विद्वान पुरुष था और पवित्र शास्त्र को अच्छी तरह से जानता था, इफिसुस में आया। उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय ठीक ठीक सुनाता और सिखाता था, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था। वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने यहां ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक ठीक बताया"* (प्रेरितों के काम 18:24-26)। इफिसियों के विश्वासियों के साथ पौलुस ने ठीक यहीं किया (प्रेरितों के काम 19:1-6)।

फिर भी हमारे लिये यह महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के सेवक होने के नाते हम *"हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह में और ज्ञान"* (2 पतरस 3:18) की बढ़ोतरी के साथ प्रवाहित होते रहें, जिसका मसीह की देह के द्वारा अनुभव किया जा रहा है। हमें सामयिक रहना है और पूरे संसार में परमेश्वर कलीसिया को जो कुछ दे रहा है उससे सीखना है।

तथापि ऐसा करने में हमें "अध्यात्मविज्ञान के माध्यम से होने वाले विषयान्तर" को टालना ज़रूरी है। कुछ अंतर्राष्ट्रीय और अत्यंत आदरणीय प्रचारक मुद्दे से भटक जाते हैं और ऐसी बातों का प्रचार करने और सिखाने लगते हैं जो वचन की नींव पर पूर्णतः आधारित नहीं हैं। वचन की कुछ मूलभुत शिक्षाओं को वे नकारते हैं। ऐसी बातें नये नियम के समय भी हुई है जब लोग सत्य से भटक गये।

2 यूहन्ना 1:7
क्योंकि बहुत से ऐसे भरमानेवाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया। भरमानेवाला और मसीह-विरोधी यही है।

2 तीमुथियुस 2:17,18
17 और उनका वचन सड़े घाव के समान फलता जाएगा। हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं,
18 जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनों के विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं।

ईश्वरविज्ञान के माध्यम से होने वाले विषयान्तर कई तरीकों से हो सकते हैं। यदि मैं किसी बात का असंतुलित रीति से, वचन में समाहित अन्य सत्यों को महत्त्व दिये बिना प्रचार करता और उन्हें सिखाता हूं, तो वे बातें लोगों को गुमराह कर सकती हैं। यदि मैं किसी सत्य पर आवश्यकता से अधिक ज़ोर देता हूं और वचन उसे जो महत्त्व देता है उससे अधिक मैं देता हूं, तो यह खतरनाक है। उदाहरण के लिये, यदि मैं बलिदान, दान और संतुष्टि के साथ संतुलित किये बिना आशीषों और संपन्नता पर अधिक ज़ोर देता हूं, तो मैं लोगों को भटका देता हूं। यदि मैं आत्मिक जीवन, पवित्रता और जबाबदेही पर ज़ोर दिये बिना अनुग्रह पर अधिक ज़ोर देता हूं, तो आवश्यकता से अत्यधिक अनुग्रह के सुसमाचार के साथ मेरी बातों का अन्त होगा और मैं लोगों को भटका दूंगा। यदि परमेश्वर का वचन जो कहता है उसे मैं आवाहन करता हूं और वास्तविक स्वर्ग और वास्तविक नर्क के अस्तित्व को नकारता हूं, तो मैं लोगों को भटका देता हूं।

यदि मैं परमेश्वर के वचन में मिलावट करता हूं और कहता हूं कि परमेश्वर के पास पहुंचने के बहुत सारे मार्ग है; यह स्पष्ट बताने के बजाय कि उद्धार केवल मसीह पर विश्वास करने से मिलता है, तो मैं लोगों को गुमराह कर देता हूं। वचन के सेवक होने के नाते हमें इन बातों के विरोध में सचेत रहना है और यह सुनिश्चित करना है कि हम इनमें फंस न जाये। हम बाइबिल की भविष्यद्वाणी में विश्वास करते हैं, लेकिन हम कभी भी चिन्ह खोजने या तारीख तय करने में फंस न जायें। हम अपने राष्ट्र की नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी में विश्वास करते हैं, फिर भी सर्वप्रथम परमेश्वर के वचन के सेवक होने से हमारा ध्यान विचलित करते हुये—हम कभी भी किसी सामाजिक अथवा राजनैतिक कार्य में फंस न जाये। हम चिन्हों और चमत्कारों में, और सुसमाचार के प्रचार के साथ होनेवाले आश्चर्यकर्मों पर विश्वास करते हैं, परन्तु हम अपना ध्यान आश्चर्यकर्मों पर कभी भी केन्द्रित न होने दें, और परमेश्वर की नज़दीकी से और आत्माओं के उद्धार से भटक न जायें। हम भविष्यद्वाणी और परमेश्वर की आवाज सुनने में विश्वास करते हैं, लेकिन हम विभिन्न और विचित्र "भविष्यद्वाणियों" से बहक न जायें, बल्कि हम अपने हृदयों को परमेश्वर के अनुग्रह के परिपूर्ण वचन के सार्वकालिक सत्य में स्थापित होने दें।

गलतियों पर विजय पाने के लिए, सत्य को विस्तार से बताएं

यूहन्ना 1:5

ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।

2 तीमुथियुस 4:2-4

2 कि तू वचन को प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डांट और समझा।

3 क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे,

4 और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे।

दीप जलाना अंधियारे को करने दूर करने का सर्वोत्तम तरीका है। जब तक अंधियारे के प्रत्येक अंश को समाप्त न कर दिया जाये, तब तक उस रोशनी को तेज करें। उसी प्रकार गलतियों से छुटकारा पाने का बेहतरीन तरीका है सत्य को बढ़ावा दें। सत्य को सामान्य, साधारण, और स्पष्ट करें, और सभी त्रुटियां खत्म हो जायेगी।

पासवान और परमेश्वर के वचन के सेवक होने के नाते, हमें सौंपे गये लोगों की सैद्धांतिक त्रुटियों, कल्पित कथाओं और सत्य से लोगों को बहकाने वाली बातों से सुरक्षा करने का उत्तरदायित्व हमारा है। समय-असमय वचन का प्रचार करना लोगों को सत्य में स्थिर रखने और गलतियों में भटक जाने से रोकने का सर्वोत्तम तरीका है। सत्य का प्रचार करें। सत्य को बढ़ावा दें। लोगों को सत्य का निश्चय करायें। निन्दा बदनामी करने का अक्षरशः अर्थ "सत्य का निश्चय कराने के लिये वादविवादों को प्रस्तुत करना" है [अल्बर्ट बार्न्स के नोट्स बाइबिल, अल्बर्ट बार्न्स (1798-1870)]। लोगों को सत्य का पीछा करने के लिये उत्साहित करें अथवा प्रोत्साहित करें। गलतियों का स्पष्टीकरण देने में समय को व्यतीत न करें। उसके बजाय सत्य को समझायें। सत्य गलतियों को दूर करेगा।

मिथ्या, प्रशंसा, खुशामद नहीं, जबरदस्ती नहीं, खुद की तरक्की नहीं

1 थिस्सलुनीकियों 2:3-6

3 क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से, और न छल के साथ है;

4 पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं; और इसमें मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जांचता है, प्रसन्न करते हैं।
5 क्योंकि तुम जानते हो कि हम न तो कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिए बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है।
6 और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुमसे, न और किसी से।

2 कुरिन्थियों 10:18
क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है वह नहीं, परन्तु जिसकी बड़ाई प्रभु करता है, वही ग्रहण किया जाता है।

सर्वाधिक दुखदायी बात यह है कि प्रचारक को पुलपिट का उपयोग मिथ्या-प्रशंसा, जबरन वसूली, आत्म-बढ़ौतरी आदि के लिये करते हुये देखना। पौलुस अपने प्रचार के विषय में एकदम स्पष्ट था। उसके प्रचार में गलतियां नहीं थी, कोई त्रुटि नहीं, न अशुद्धता, न मनुष्यों को प्रसन्न करना, न चापलुसी, न लालच अथवा न जबरन वसूली, और न ही स्वयं के लिये महिमा खोजना था।

मिथ्या-प्रशंसा/चापलुसी: जब एक प्रचारक पुलपिट पर खड़ा होता है और सभा में बैठी किसी "बड़ी हस्ती" शायद कोई कीर्तिमान व्यक्ति, राजनेता अथवा खिलाड़ी के विषय में वे कैसे अद्‌भुत हैं बताते हुये उनके आत्मसम्मान को संतुष्ट करता है, तो उसका सब करना चापलुसी में खो जाना है! यह न करें। यदि सभा में कुछ महान लोग बैठे हैं, तो उन्हें बैठने दीजिये। आपको उनके नाम पुकारने की आवश्यकता नहीं और उन्हें घमण्ड से फुलाने की आवश्यकता नहीं। यदि वे प्रामाणिकतापूर्वक परमेश्वर की आराधना करने आये हैं, तो जब आप पुलपिट से उनका नाम नहीं पुकारेंगे, तो वे नाराज़ नहीं होंगे। वे ध्यान आकर्षित करने नहीं आये हैं। वे आराधना और प्रार्थना करने आये हैं।

जबरन वसूली: जब एक प्रचारक पुलपिट पर खड़ा होकर यह घोषणा करते हुये लोगों से पैसा खींचने लगता है, "परमेश्वर मुझसे कहता है कि यहां से 10 लोगों ने एक लाख रूपये देने हैं" या "अपने बटुवे से सबसे बड़ी

नोट निकालिये" या "अपने बटुवे से सारा पैसा निकालिये और उसे भेंट में डालें," तो वह वसूली कर रहा है! भेंट में पैसा देने के लिये लोगों को जबरदस्ती मत कीजिये। लोगों को मात्र परमेश्वर को जो भी वे अपने हृदय की इच्छा से देना चाहते हैं, उसे देने के लिये आमंत्रित करें। और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये परमेश्वर पर विश्वास करें! परमेश्वर के लोगों से आपको पैसा निकालने की ज़रूरत नहीं!

आत्म-बढ़ोतरी: जब एक प्रचारक पुलपिट पर खड़ा होकर अपने कई जगह यात्रा करने, बड़ी भीड़ को संबोधित करने आदि के विषय में आत्मप्रशंसा करने लगता है, तो वह अपने श्रोताओं को प्रभावित करने और न ही परमेश्वर को सच्चाई से महिमा देने के लिये सब करता है। इस प्रकार वह आत्म-बढ़ोतरी में व्यस्त हो रहा है! ऐसा न करें। मात्र छोटा सा ब्योरा दें और परमेश्वर के वचन के प्रचार और शिक्षा में आगे बढ़ें और परमेश्वर को महिमा दें। आपको आपका प्रतिफल स्वर्ग में मिलेगा। यह मनुष्यों से मिलने वाली प्रशंसा से ज्यादा अच्छा है! जब आप कोई गवाही देते या किसी घटना को बताते हैं, तो स्वयं से पूछिये आप ऐसा "क्यों" कर रहे है? "मैं," "मेरा" और "मैं स्वयं" जैसे व्यक्तिगत सर्वनामों का प्रयोग आप कैसे कर रहे हैं, इसकी जांच करें। यदि आपकी प्रवृत्ति लोगों की दृष्टि में अच्छा दिखने की है—और परमेश्वर आपके हृदय को जानता है—तो आप आत्म-प्रशंसा में व्यस्त हैं। यदि आपकी गवाही का मुख्य व्यक्ति "मैं" है, तो आप आत्म-प्रशंसा में लगे हैं। अपने आप को सचेत करें। किसी गवाही या घटना को बताते समय ऐसा परमेश्वर को महिमा देने के लिये शुद्ध हृदय से, परमेश्वर जो कर रहा है उसका उत्सव मनाने के लिये, लोगों को सिखाने के लिये, उत्साहित करने के लिये करें और वास्तविक जीवन की कहानियां लोगों को बतायें।

शैतान को पुलपिट पर समय न दें

नहेम्याह 8:4-6

[4] एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिए बना था,खडा हो गया; और उसकी दाहिनी मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह, हिल्किय्याह और मासेयाह; और बाई अलंग, पदायाह, मीशाएल, मल्कियाह, हाशूम, हश्बद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए।

5 तब एज्रा ने जो सब लोगो से ऊंचे पर था, सभों के देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उसने उसको खोला, तब सब लोग उठ खड़े हुए।
6 तब एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमेन, आमेन,कहा; और सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को दंण्डवत किया।

व्यवस्था की पुस्तक के पढ़ने को लोगों के द्वारा दिये गये आदर के विषय में विचार कीजिये। जब एज्रा ने पुस्तक खोली, सब लोग खड़े हो गये। उन्होंने अपने हाथों को उठाया, अपने सिरों को झुकाया और यहां तक कि ज़मीन की ओर अपने चेहरे करके दण्डवत किया।

पुलपिट या मंच एक पवित्र स्थान है जहां से परमेश्वर के वचन की घोषणा की जानी है। हमें पुलपिट की पवित्रता को बनाये रखना है। शैतान को पुलपिट का कोई समय न दें! यदि कोई प्रचारक किसी अन्य प्रचारक के विरोध में अथवा उसके विषय में भला-बुरा कहने के लिये पुलपिट का उपयोग करता है, तो वह उस स्थान की पवित्रता को भष्ट कर रहा है। यदि कोई प्रचारक किसी राजनेता या राजनैतिक कार्यक्रम को प्रोत्साहित करने के लिये पुलपिट का प्रयोग करता है, तो वह उस स्थान की पवित्रता को भष्ट कर रहा है। यदि प्रचारक किसी व्यावसायिक योजना को (अपनी स्वयं की अथवा किसी और की जिसमें वह भी सहभागी है) प्रोत्साहित करने के लिये पुलपिट का प्रयोग करता है, तो वह उस स्थान की पवित्रता को भष्ट कर रहा है। और इस प्रकार पुलपिट के, वह स्थान जहां आत्मा की सामर्थ से परमेश्वर के पवित्र वचन का प्रचार किया जाना है, बहुत अनुचित उपयोग अथवा दुरूपयोग हो सकते हैं। परमेश्वर के सेवक के तौर पर हमें पुलपिट के इस प्रकार के सब दुरूपयोग से दूर रहना चाहिये, और मूलभूत कार्य पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिये।

लोगों को अपनी ओर न खींचें

प्रेरितों के काम 20:28-31

28 इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है।

29 मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुममें आएंगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे।
30 तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।
31 इसलिए जागते रहो, और स्मरण करो कि मैंने तीन वर्ष तक रात दिन आसूं बहा-बहाकर हर एक को चेतावनी देना न छोड़ा।

यूहन्ना 7:18
जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं।

परमेश्वर के वचन के सेवक होना लोकप्रियता को स्थापित करने का अभ्यास करना नहीं है। वह आपके "चाहनेवाले" कितने हैं, आपकी प्रचार करने की शैली किसको अच्छी लगती आदि के विषय में भी नहीं है। यह उसके विषय में भी नहीं है कि आप कितने दिलों का चुरा सकते हैं, ताकि वे आपकी सहायता करनेवाले हो सकें और आपके साथ खड़े हो सकें। जब आप परमेश्वर के वचन का प्रचार करते और सिखाते हैं, तो अपने आपको चित्र से बाहर रखें। हां, आप अपने जीवन के उदाहरणों को और अनुभवों को परमेश्वर के वचन को आपने कैसे लागू किया यह बताने के लिये प्रयोग कर सकते हैं, लेकिन उसे इस तरह कीजिये कि लोग आपकी ओर खीचें न जायें, किन्तु परमेश्वर और उसके वचन के पीछे जाने के लिये विवश हो जायेंगे। आपके प्रचार और शिक्षा के माध्यम से लोगों को आपको नहीं, यीशु को देखने दीजिये।

परमेश्वर के सच्चे सेवक बने रहिये—जो यह इच्छा रखता है कि अकेले परमेश्वर की महिमा हो और स्वयं के विषय में कुछ भी प्रोत्साहित न किया जाये।

कलीसिया में विभाजन और दोषारोपण मत कीजिए

रोमियों 16:17,18
17 अब हे भाइयो, मैं तुमसे बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट डालने, और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो।

18 क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे-सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।

1 कुरिन्थियों 10:32,33
32 तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिए ठोकर के कारण बनो।
33 जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूं, और अपना नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूंढ़ता हूं, कि वे उद्धार पाएं।

परमेश्वर के वचन के सेवक होने के नाते, जो हम प्रचार करते हैं, वह कलीसिया की उन्नति कर सकता है और उसे बना सकता है या दोषारोपण कर सकता है और परमेश्वर के लोगों के बीच विभाजन करा सकता है। जब हम अन्य मसीही संगठनों की शिक्षा और परंपराओं से सहमत न हो, अन्य संगठनों के बारे में तिरस्कारपूर्ण टिप्पणियां करना हमेशा भलाई से अधिक हानि पहुंचा सकता है। मैंने स्वयं ये गलतियां की हैं और मुझे अन्य मसीही संगठनों के विषय में नीच शब्द न बोलने के लिये, मज़ाक में भी, खुद पर लगातार नज़र रखनी होती है। मुझे स्वयं को परमेश्वर के वचन के प्रचार और शिक्षा के साथ स्थिर रहने के लिये स्मरण दिलाना होता है।

अभिषेक

और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिसने हमारा अभिषेक किया वही परमेश्वर है,

(2 कुरिन्थियों 1:21)

अध्याय 6

6
अभिषेक

लोग उद्धार पाते हैं, चंगाई पाते हैं, छुटकारा पाते हैं और पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे जीवनों के माध्यम से आश्चर्यकर्म होते हैं। आत्मा का कार्य इतना अनमोल है। वरदानों का प्रगटीकरण और विश्वासियों की उन्नति होते हुए देखने के परिणाम अद्‌भुत है। और फिर भी इस क्षेत्र में, परमेश्वर के लोगों द्वारा कई बातों का दुर्व्यवहार हो सकता है जिससे यीशु मसीह के नाम की निंदा हो।

यह अध्याय हमें ऐसे स्थान में बुलाता है जहां पर हम पवित्र आत्मा के हाथों में आदर के पात्र बने रहें।

अभिषेक और वरदान लोगों की सेवा के लिए दिए जाते हैं

1 कुरिन्थियों 12:7
किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।

1 कुरिन्थियों 14:12
इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।

2 कुरिन्थियों 4:5
क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।

आत्मा के वरदान आम भलाई के लिए और विश्वासियों की मंडली की उन्नति के लिए दिए गए हैं वरदान और अभिषेक इसलिए नहीं हैं कि एक व्यक्ति को दूसरे से अधिक ऊंचा किया जाए, बल्कि एक माध्यम के रूप में दिए गए हैं। जिसके माध्यम से परमेश्वर के लोगों की सेवा की जाती

है। जैसे जैसे हम वरदानों में और अभिषेक में आगे बढ़कर काम करते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे जीवनों में रखा है, इस बात को स्पष्ट समझना महत्वपूर्ण है और इसे अपना मकसद बनाना है—परमेश्वर के लोगों की सेवा करना। परमेश्वर के लोगों की उन्नति के लिए और उसके राज्य के विस्तार के लिए हमें दिए गए वरदानों का हमें उपयोग करना है।

हममें से अधिकतर लोग जो गलती करते हैं, वह यह है कि जब हम परमेश्वर के अभिषेक और वरदान में कार्य करना आरंभ करते हैं, तब हमें महसूस होता है कि अब हम विशेष हैं और लोगों को अब हमारी "सेवा" करनी चाहिए—ताकि हमारी सेवकाई का विस्तार हो सकें। जिसने सबसे अधिक अभिषेक पाया था और सबसे अधिक वरदान पाए थे उस प्रभु यीशु ने कहा कि *"वह सेवा करवाने नहीं, परंतु सेवा करने के लिए आया है"* (मत्ती 20:28)। क्या हमें उसका उदाहरण नहीं अपनाना चाहिए? जितने अधिक हम वरदान प्राप्त और अभिषिक्त होंगे, उतने अधिक हमें सेवक बनना होगा।

आपके अभिषेक और वरदान के बाहर जो आप हैं, वही वास्तविक आप हैं

जब हम अभिषेक के अधीन होते हैं, तब हम लोगों की दृष्टि में "अद्‌भुत" नज़र आते हैं। जब सामर्थ के साथ वचन प्रगट होता है, वरदान बहने लगते हैं, आश्चर्यकर्म होते हैं और यह सब कुछ बड़ा अच्छा होता है। जब हम मंच पर थे तब हमारे द्वारा जो कुछ हुआ उसकी वजह से, लोग हमारे विषय में ऊंचा सोचने लगते हैं। परंतु यह सब कुछ परमेश्वर के अभिषेक के कारण हुआ। यह हम नहीं थे! लोगों ने जो कुछ होते हुए देखा उस कारण वे हमारे साथ जुड़ जाना चाहते हैं। वे हमारे वरदान और अभिषेक के द्वारा परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमारी पहचान रखते हैं। वे गलत हैं। यह हम नहीं हैं। वह परमेश्वर काम कर रहा था।

"सच्चे हम" तब होते हैं जब मंच पर उतरकर समतल भूमि पर चलने लगते हैं। हमें खुद को इस प्रकार देखना सीखना है कि हम वास्तव में किसके लिए हैं, मिट्‌टी के बर्तन, जब हम सेवकाई करते हैं तब लोग हमें

जिस प्रकार देखते हैं, वह हमारी बनावटी पहचान होती है। सच्चा "मैं" हूं जब मैं वहां मंच पर प्रचार और सेवा नहीं करता। मुझे यह समझना है कि परमेश्वर मेरे द्वारा चाहे जिस तरह से कार्य करें, मैं एक मिट्‌टी का बर्तन हूं। मुझे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में और परमेश्वर और मनुष्य के सामने विनम्रता में चलने की ज़रूरत है। मुझे अपने शरीर को नियंत्रण में रखना है, मेरे मन की रक्षा करना है और मेरे शब्दों का ध्यान रखना है। मुझे अन्य किसी भी विश्वासी की तरह जीवन में आगे चलते रहना है।

आप मसीह में कौन हैं, इसी से आपकी सच्ची आत्मिक पहचान है

इफिसियों 2:10

क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।

अक्सर, परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हम अपनी पहचान अपनी आत्मिक बुलाहट, वरदान, अभिषेक, और जिन भले कामों को हमने किया है उन पर आधारित करते हैं। हमारे पास जो सेवकाई है उसके कारण जो "प्रतिमा" तैयार हुई है उसका हम आनंद उठाते हैं। परंतु, यह कमजोर जमीन है, क्योंकि यह सबकुछ एक रात में बदल सकता है। हमारे विषय में, हमारे अभिषेक के विषय में और हमारी सेवकाई के विषय में लोगों की समझ बदल सकती है। इसलिए, हमें अपनी पहचान हम यीशु मसीह में कौन है इसकी पहचान पर होना चाहिए। हम उसकी हस्तकृति हैं। हम परमेश्वर के हाथों का काम है, मसीह में सृजे गए हैं। हम मसीह में कौन हैं–लोहू से खरीदे हुए, लोहू से धुले हुए परमेश्वर के पवित्र जन–यह पहचान कभी नहीं बदलेगी। यह हमारी सच्ची पहचान है। आप खुद ही देखिए, आप अपने वरदान, बुलाहट या अभिषेक में कौन है इस दृष्टि से नहीं, परंतु आप यीशु मसीह में कौन हैं इस दृष्टि में। आप मसीह में कौन हैं इसके अनुसार जीवन बिताएं। आप मसीह में जो हैं उसके रूप में चुनौतियों का सामना करें और रुकावटों पर विजय पाएं।

असल की अभिलाषा करें, नकल को सहन न करें

निर्गमन 30:31,32

[31] और इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना, यह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल होगा।

[32] यह किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाए, और मिलावट में उसके समान और कुछ न बनाना; यह तो पवित्र होगा, वह तुम्हारे लिये भी पवित्र होगा।

पुराने नियम में पवित्र अभिषेक का तेल एक तरह से नए नियम में आत्मा का अभिषेक था। पवित्र अभिषेक के तेल का उपयोग सामान्य दैहिक उद्देश्यों के लिए नहीं किया जा सकता और उसकी नकल न की जाए। उसके साथ आदरपूर्वक व्यवहार किया जाए। वह पवित्र था। इसी प्रकार नए नियम में पवित्र आत्मा का अभिषेक है।

अभिषेक निर्मल होता है, परंतु ऐसे मानवीय पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है जो निर्मल नहीं हैं। अभिषेक सिद्ध है, परंतु बर्तन नहीं। अतः यह संभव है कि हमारे द्वारा, मानवीय पात्रों के द्वारा परमेश्वर के अभिषेक की अभिव्यक्ति में, हम अपने शरीर के कामों से उसे दुषित करें। या कभी-कभी शरीर में अभिषेक की नकल करने का प्रयास करें, उस समय भी जब उसके आत्मा का प्रगटीकरण न हो। यहीं पर हमें आत्म संयम बरतना हैं, असफलता के भय से नहीं, परंतु प्रभु के प्रति आदरयुक्त भय से। हमें भय को त्यागना है और हमारे अन्दर परमेश्वर के जो वरदान हैं उन्हें चमकाना है, जैसे पौलुस ने तीमुथियुस को प्रोत्साहित किया (2 तीमुथियुस 1:6,7)। दूसरी ओर, हमें अपने शरीर को अधीन रखने के लिए और शारीरिक आवेश को दूर रखने के लिए आत्म संयम बरतना है जो कुछ हमारे द्वारा प्रगट होता है वह आत्मा का निर्मल कार्य हो और उसकी इच्छा के अनुसार हो। इसके लिए हृदय की भावना ज़रूरी होती है जो केवल परमेश्वर की महिमा करना चाहती है और सारी खराई के साथ परमेश्वर के लोगों की सेवा करना चाहती है। उसके लिए केवल वह करने की इच्छा चाहिए जो हम परमेश्वर को करते हुए देखते हैं, जब वह आगे बढ़ता है, तब उसके साथ आगे बढें और केवल उन बातों की घोषणा करें, जो वह बोलता है। फल यहीं से आता है। *"आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं;"* (यूहन्ना 6:63अ)।

मसीहत में आए "सनक" के पीछे न भागें

यूहन्ना 6:63

आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।

किसी कारणवश, हम मसीही सेवकाई में हर प्रकार की "सनक" या कार्य करने के नए नए तरीके देखते हैं जो बार बार आते हैं और जाते हैं। इनमें से कुछ को "उत्तम विज्ञापन," मीडिया द्वारा बढ़ावा आदि के द्वारा समस्त मसीही विश्व में पुनरावेदन प्राप्त होता है, और फिर वे मिट जाते हैं। अभिषेक के उपयोग में भी, हम सेवा करने के सब तरह के "नए नए" तरीके देखते हैं—अपना कोट फेंकने से लेकर, माइक में फूंकने, लोगों को जमीन पर धकेलने आदि तक। यदि परमेश्वर का आत्मा सचमुच वहां पर कुछ अभिव्यक्त कर रहा है और आपको निश्चित तौर पर कुछ करने की अगुवाई कर रहा है, तब सब कुछ ठीक है। परंतु, यदि यह कुछ "नया" कार्य है, जिसे परमेश्वर के अभिषेक से उत्पन्न माना जाता है, तब उसे न करें। किसी और की नकल न करें। सच्ची परीक्षा उसके द्वारा उत्पन्न फल में है। जो कुछ शरीर का है—मनुष्य द्वारा खोजा गया है—वह वास्तविक और स्थायी परिवर्तन नहीं लाएगा। जो कुछ सचमुच परमेश्वर के आत्मा की ओर से है, वह वास्तव में फल लाएगा—ऐसा फल जिसका परिणाम जीवन परिवर्तन में होता है, फल जो यीशु को महिमा देता है और फल जो बना रहता है।

कोई भी चीज आपको तब तक नहीं मिल सकती, जब तक कि वह आपको परमेश्वर की ओर से न मिले

यूहन्ना 3:27

यूहन्ना ने उत्तर दिया, "जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।

यह सच्चाई कि अभिषेक एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को दिया जा सकता है और हाथों के रखने के द्वारा वरदान प्राप्त होते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। परंतु, यह मनमाने ढंग से नहीं होता। परमेश्वर के जन से अभिषेक का "दुगना भाग" पाना या उस अभिषेक का "समान भाग" दिया

जाना छोटी बात नहीं है। यह परमेश्वर के निर्देश में और व्यक्ति के जीवन पर परमेश्वर की बुलाहट के अनुरूप होता है। आप पर वरदान प्रदान करने हेतु कई लोग हाथ रख सकते हैं। परंतु यदि आपको परमेश्वर के द्वारा विशिष्ट सेवकाई करने हेतु बुलाया नहीं गया है और वरदान नहीं दिया गया है, तो उस सेवकाई के लिए आपको अभिषेक नहीं मिलेगा। अभिषेक आपके जीवन पर जो बुलाहट और वरदान है उनके अनुरूप होगा। जो कुछ भी कहा और किया गया है उसके सारांश के रूप में हम यह कह सकते हैं कि, जब तक आप परमेश्वर की ओर से उसे प्राप्त न करें, तब तक आप कुछ भी नहीं पा सकते। इसलिए अंत में, यह परमेश्वर के साथ हमारी निकटता और उसके साथ चलने पर निर्भर है। इसलिए, वरदान पाने हेतु परमेश्वर के जन द्वारा हम पर हाथ रखवाते समय, हमारा ध्यान परमेश्वर के साथ निकटता की अधिक गहराई में बढ़ना चाहिए। वहीं अभिषेक का स्थान है।

दूसरों को आपको परखने की अनुमति दें

1 कुरिन्थियों 14:29

भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उनके वचन को परखें।"

1 थिरस्सलुनीकियों 5:20,21

20 भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।

21 सब बातों को परखो; जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।

परमेश्वर का आत्मा सिद्ध है, फिर भी जिन साधनों के माध्यम से वह कार्य करता है, उसे परखा जाना चाहिए। हम परमेश्वर को नहीं परख रहे हैं, परंतु मानवीय पात्र के द्वारा प्रगटीकरण को परख रहे हैं। विश्वासियों के लिए आत्मिक प्रगटीकरणों को परखना बाइबल के अनुसार है। परंतु हम में से कुछ लोग, दुखी हो जाते हैं जब लोग हमसे कहते हैं कि जो कुछ भी हमें अभिषेक के अंतर्गत सौंपा गया है, क्योंकि हम सोचते हैं कि हमारी भविष्यद्वाणियां हमेशा सही होती है। और हम अपने वरदानों की अभिव्यक्ति में हमेशा सही होते हैं। इसके विपरीत, हमें ऐसे विश्वासियों के विषय में प्रसन्न होना चाहिए कि वे अब भविष्यद्वाणी के वचन के विषय में या आत्मिक प्रकाशन के विषय में जो उन्हें सौंपा गया है, परमेश्वर की इच्छा जान लेने

की ज़िम्मेदारी स्वीकार कर रहे हैं। वस्तुतः, परमेश्वर के परिपक्व सेवक का चिन्ह यह है कि वह विश्वासियों को प्रोत्साहन देता है कि वे उन्हें सौंपे गए भविष्यद्वाणी को और अन्य आत्मिक प्रगटीकरणों को परखें। यह परमेश्वर में उच्च आत्मिक ऊंचाई का प्रतीक है।

सनसनी और अतिभावुकता से बचें

मैं मानता हूं कि हम में से हर एक के पास भिन्न स्वभाव, सेवकाई में कार्य करने की भिन्न शैलियां और पद्धतियां हैं। हम सब समान नहीं हैं। हममें से कुछ लोगों के पास अधिक गंभीरता के साथ कार्य करने की शांत शैली है, परंतु दूसरी ओर कुछ लोग ऊंची आवाज़, भव्य शैली, नाट्यपूर्ण ढंग रखते हैं और उत्साह से परिपूर्ण होते हैं। परमेश्वर ने हम सब को भिन्न बनाया है और वह हम सभों के द्वारा कार्य करता है।

परंतु, जब प्रचारक सतही होता है और केवल लोगों की भावनाओं को और उत्तेजना को जागृत करता है, तब उसे पहचानना आसान हो जाता है। हम पहचान सकते हैं कि वह अपने शब्दों को बढ़ाचढ़ाकर बोल रहा है, नाटक कर रहा है और सनसनी फैला रहा है। उसके अंत में इससे लोगों की क्या भलाई होगी? क्या इससे लोगों को सहायता मिलेगी कि वे वास्तव में परमेश्वर को अनुभव करें और अपने जीवनों को बदलते हुए देखें? जिस संदेश का आप प्रचार कर रहे हैं उसके लिए भावनात्मक तौर पर उत्तेजित होना अच्छा है—परंतु खुद को कुछ बड़ा महसूस कराने हेतु लोगों की भावनाओं को उत्तेजित करना किसी के लिए भी अच्छा नहीं है। हमें पवित्र आत्मा के लिए उसका कार्य करने की ज़रूरत नहीं है। लोगों के हृदयों को कैसे प्रोत्साहित करना चाहिए वह जानता है, उसे जानना ज़रूरी नहीं है!

दूसरी ओर, हमें अतिबुद्धिवाद के माध्यम से सनसनी फैलाने से बचना चाहिए जहां पर कोई यह नहीं समझ पाता कि हम क्या कह रहे हैं या हमारा प्रचार किस दिशा में बढ़ रहा है, और लोग उलझन में पड़ जाते हैं। हमें सीधे, सरल और प्रेम के साथ बोलने की ज़रूरत है। हमारा लक्ष्य लोगों को यीशु का अनुभव कराना और विश्वास में बढ़ाना है।

कोई सीमा नहीं है, नीचे न गिर पड़ें

यशायाह 64:3

जब तू ने ऐसे भयानक काम किए जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे, तब तू उतर आया, पहाड़ तेरे प्रताप से कांप उठे।

परमेश्वर की सामर्थ की कोई सीमाएं नहीं है, जिस तरह से वह काम करता है, सृजनात्मक नए मार्ग जिसमें वह खुद को प्रगट करता है, उसमें उसकी कोई सीमा नहीं है। परमेश्वर निश्चित रूप से नए कार्य करेगा। पवित्र आत्मा का अभिषेक निश्चित रूप से नई रीति से प्रगट होगा। जिन बातों को हमने पहले कभी नहीं देखा, वे होंगी। जिन बातों की हमने अपेक्षा भी नहीं की वे प्रगट होंगी जब पवित्र आत्मा हमारे मध्य में असामान्य रीति से कार्य करेगा। ऐसा कोई प्रवचन नहीं है, ऐसा कोई मानव हृदय नहीं है जिसमें उन सारे मार्गो को समझा गया है जिसमें परमेश्वर अपनी उपस्थिति को प्रगट करता है। वह अनंत है और उसके अभिषेक को हमारे मध्य में प्रगट करने के उसके मार्ग भी अनंत है। कुंजी यह है कि हम उसका अनुसरण करें, और इन अद्भुत बातों को जिनकी हमने खोज नहीं कि, उसकी इच्छा के अनुसार जब वह हमारे मध्य में कार्य करता है, होने दें। हम उसका अनुसरण करें और उसकी उपस्थिति के प्रगट होने की इच्छा रखें। परंतु उसे उसकी इच्छा के अनुसार हमारे मध्य में प्रगट होने दें!

फल

मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। इसलिए न तो लगानेवाला कुछ है और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है।

(1 कुरिन्थियों 3:6,7)

अध्याय 7

7

फल

परमेश्वर ने हमें बुलाया है और हमें ठहराया है ताकि हम ऐसा फल लाएं जो स्थाई रहता है (यूहन्ना 15:16)। इसलिए फलों की परिणामों की खोज करना उचित है। जब हम बहुत फल लाते हैं, तब पिता की महिमा होती है (यूहन्ना 15:8)। इस अध्याय में, हम फल लाने के विषय में और मसीही सेवक होने के नाते जो कार्य हम करते हैं उसके द्वारा लाए हुए फल का समाचार सुनाने के विषय में कुछ अंतर्दृष्टियां प्रस्तुत करेंगे।

छांटा गया या काटा गया

यूहन्ना 15:1,2

1 "सच्ची दाखलता मैं हूं, और मेरा पिता किसान है।

2 जो डाली मुझ में है और नहीं फलती है, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले।

परमेश्वर ने हमें फल लाने के लिए बनाया है। फलवंत होना सामान्य है। स्वयं परमेश्वर देखता है कि क्या हम फल ला रहे हैं। हमारे मसीही जीवन में हम कैसे फल लाते हैं यह परमेश्वर हमें सिखाता है (2 पतरस 1:5-8)। प्रभु यीशु ने एक गंभीर वाक्य कहा कि जब हम छांटे जाएंगे, तब हममें फल दिखाई देंगे। फलवंत होने का प्रतिफल यह है कि वह हमें छांटता है। वह सारी अनावश्यक बातों को—जो कुछ भी मृत, जीवनरहित और फल लाने में रुकावट लाने वाली बातों को हटाता है। वह हमें छांटता है, ताकि हम और फल ला सकें। इस प्रकार परमेश्वर हममें कार्य करता है ताकि हमारी फलदायकता का स्तर बढता रहे। वह हमें एक स्तर से लेकर फलदायकता के अगले तीन ऊंचे स्तरों की ओर ले जाता है।

तोड़ों–गुणों को बहुगुणित होना है

मत्ती 25:20,21

[20] जिसको पाँच तोड़े मिले थे, उसने पाँच तोड़े और लाकर कहा, 'हे स्वामी,तू ने मुझे पाँच तोड़े सौंपे थे, देख, मैं ने पाँच तोड़े और कमाए हैं।'

[21] उसके स्वामी ने उससे कहा, 'धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'

इस दृष्टांत में, प्रभु यीशु हमें उदाहरण देता है कि परमेश्वर ने हमें कुछ "प्रतिभा" दिए हैं, जो वरदान, संसाधन और बुलाहटें हो सकती हैं, वह हमसे अपेक्षा करता है कि हम इन्हें बढ़ते हुए और बहुगुणित होते हुए देखें। परमेश्वर ने जो कुछ भी हमें दिया है उसमें विश्वासयोग्यता केवल उन बातों को बनाए रखना नहीं है, परंतु उन्हें बढ़ते हुए और बहुगुणित होते हुए देखने का यह प्रयास हमें करना है। जो कुछ भी हमें परमेश्वर ने दिया है उसे बढ़ाने और बहुगुणित करने के लिए जब हम कार्य करते हैं, तब हम "भले और विश्वासयोग्य" सेवक होते हैं।

फल उसकी ॠतु में आता है, इंतज़ार करें

भजन संहिता 1:3

वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ॠतु में फलता हैं, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।

अलग अलग बीज बढ़ने और फलवंत होने के लिए समय लगता है। कोई भी निर्धारित समय नहीं है जो सब प्रकार के फलों के लिए सार्वत्रिक हो। मसीह सेवकाई में, जो कुछ प्रभु ने हमें करने के लिए बुलाया है उसे करने हेतु जब हम परिश्रम करते हैं, तब हमें ऐसा पूरे धीरज के साथ करना चाहिए। फल अपनी ॠतु में आएगा और हमें विश्वासयोग्यता के साथ और धीरज के साथ उसके लिए कार्य करना है।

यदि हम फल नहीं देख रहे हैं, तो हमें यह जांचने की ज़रूरत है कि क्या हम सही काम कर रहे हैं—क्या हम सही समय में सही स्थान में हैं।

जहां परमेश्वर चाहता है कि हम हो। क्या हम उस तरह से काम कर रहे हैं जिस तरह से परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है या हम उन बातों को खो रहे हैं जिन्हें हमें करना चाहिए, या तो ज्ञान के अभाव में या लापरवाही के अभाव में? हम किस ऋतु में हैं—जमीन तैयार करने का समय, बीज बोने का समय, जो बोया गया है उसे सिंचने का समय, या जो फल आया है उसकी कटनी काटने का समय? क्या हम सही स्थानों में फल खोज रहें हैं? क्या हम सही समय में फल खोज रहे हैं? क्या अन्य बातें हैं जो हमें फलवंत होने से रोक रही है? ये कठिन प्रश्न है, परंतु उन्हें पूछना ज़रूरी है। क्योंकि हमें प्रभु के लिए अपने कार्य में फल लाने के लिए तैयार किया गया है। फल उसकी ऋतु में आएगा। परंतु हमें यत्नशीलता और धीरज के साथ उस फल की ओर बढ़ने की ज़रूरत है।

गवाहियों को बढ़ा-चढ़ाकर न बताएं, जो हुआ, वही बताएं

यूहन्ना 7:18 (द मैसेज बाइबिल)

जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं।

बढ़ा-चढ़ाकर गवाहियों को सुनना और उन बातों को जो वास्तव में हुई हैं, निराशाजनक होता है। कुछ वर्षों पहले, हमारे शहर में एक अंतर्राष्ट्रीय सेवकाई द्वारा एक बड़ा क्रूसेड हुआ। यह निश्चित रूप से विशाल सभा थी और तीन दिनों की क्रूसेड सभाओं के लिए बड़े पैमाने पर पैसा खर्च हुआ होगा। जब मैंने उस सेवकाई द्वारा समाचार के मुख्य मुद्दों को देखा, तो उसमें भारत का तिरंगा लहराता हुआ दिखाया गया था और वहां लिखा था, "भारत, सदा के लिए बदला हुआ राष्ट्र।" अब यह सच है कि कई बातें हुई होगी जो हमारे आंखों की नज़रों से परे थीं। परंतु जब मैंने इन तीन दिनों की ओर वस्तुपरकता के साथ देखा, तब मैंने इन बातों को पाया। इस क्रूसेड में आने वाले बहुसंख्य लोग पहले से विश्वासी थे। प्रतिज्ञा पत्रों (डिसीजन कार्ड) का क्या हुआ जिन्हें क्रूसेड के बाद इकट्ठा करना था, और नया निर्णय लेने वालों में से स्थानीय कलीसिया में कितने लोग शामिल हुए, यह कोई नहीं जानता। उस क्रूसेड के लिए जो भारी रकम खर्च की गई, उसकी तुलना में, मूल्यांकित परिणाम काफी निराशाजनक था। मैं जानता

हूं कि क्रूसेड के अगले ही दिन, उसी मैदान में पड़ोस के गांव / देहात से गैरमसीहियों की दूसरी सार्वजनिक सभा हुई। इस प्रकार उस क्षेत्र के आसपास के गांव पर भी सभा को कोई असर नहीं हुआ, जहां क्रूसेड हुआ था, उस शहर में और भी कम, और निश्चित रूप से राष्ट्र पर तो इसका बिल्कुल प्रभाव नहीं पड़ा! अतः उस सेवकाई द्वारा अपने प्रायोजकों को यह रिपोर्ट देना कि तीन दिनों के क्रूसेड के अंत में भारत देश एक राष्ट्र के रूप में हमेशा के लिए बदल गया, बातों को बढ़ा-चढ़ाकर बोलना था! मैं जानता हूं कि परमेश्वर इन बातों को नज़रअंदाज करता है, इसलिए हमें भी करना चाहिए, परंतु हम कम से कम जिन बातों की रिपोर्ट देते हैं, उसमें यथार्थ रहने और सबकुछ जिस तरह से हुआ, उस विषय में तथ्य को निवेदन करने के सम्बंध में खुद को उत्तरदायी समझें?

इसी तरह, अतिशयोक्ति और बढ़ा-चढ़ाकर बातों को बताने की कई कहानियां हो सकती हैं, जहां पर प्रभु द्वारा किए गए अच्छे कार्य का गलत प्रतिनिधित्व किया जाता है। किस उद्देश्य से? क्या लोगों को प्रभावित करने हेतु परमेश्वर हमारी सहायता चाहता है? मुझे ऐसा नहीं लगता। हम संकल्प करें कि जिस तरह से घटनाएं होती हैं और जिस तरह से प्रभु को सच्ची महिमा मिलती है, उसी तरह हम परिणामों की रिपोर्ट दें। ईमानदार समाचारदाता बनें, परमेश्वर के सामने और मनुष्यों के सामने भी।

यथार्थ या अनुमानित स्पष्ट रूप से बताएं

2 कुरिन्थियों 6:3,4

3 हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।

4 परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्‌गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से।

जब प्रचारक उत्तेजित होता है, तब भले ही 50 लोग प्रार्थना के लिए आगे आए हो, वह यह समाचार देता है कि “बेदारी आई है,” “कई लोग आगे आए,” “उस स्थान में परमेश्वर की सामर्थ बहुतायत से प्रगट हुई और लोग वेदी पर रो रहे थे और पुकार रहे थे,” आदि। और लोग विचार करने

लगते हैं कि वास्तव में क्या हुआ। इससे बुरी परिस्थिति में, प्रचारक यह रिपोर्ट देता है कि, "सैंकड़ों लोग आगे आए," जबकि वास्तव में करीब 50 लोग आगे आए और बाकी सहायक, स्वयंसेवक और प्रार्थना टीम में से थे जो सामने आनेवालों के साथ आए, ताकि भीड़ बड़ी दिख सके। यदि हम निश्चित रूप से जानते हैं कि कितने लोगों ने प्रभु के लिए निर्णय लिया, तो हम निश्चित संख्या दे सकते हैं। यदि नहीं, तो हम कहें, "हमारा अंदाज है कि करीब इतने लोग आगे आए," और सच्चाई के जितने करीब रह सकें, रहें। परिणामों की रिपोर्ट देते समय, हम अपनी बातचीत में यथार्थ बने रहने के अनुशासन का पालन करें।

दूसरे व्यक्ति के परिश्रम को कबूल करें

2 कुरिन्थियों 10:15

हम सीमा से बाहर दूसरों के परिश्रम पर घमण्ड नहीं करते; परन्तु हमें आशा है कि ज्यों-ज्यों तुम्हारा विश्वास बढ़ते जाएगा, त्यों-त्यों हम अपनी सीमा के अनुसार तुम्हारे कारण और भी बढ़ते जाएंगे,

गलातियों 6:4

हर एक अपने ही काम को जांच ले, और तब दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा।

1 कुरिन्थियों 3:5,8

5 अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुमने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया।
8 लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मज़दूरी पाएगा।

ऐसा शायद ही होता है कि कोई सारी बातों को अकेले करे। सामान्य तौर पर, हम टीम में काम करते हैं और हमारे साथ कई लोग होते हैं, जो हमसे पहले परिश्रम करते हैं, कुछ हमारे साथ परिश्रम करते हैं, और कुछ मंच के पीछे रहकर परिश्रम करते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हम जो आदर देने योग्य है, उसे आदर दें। यह महत्वपूर्ण है कि हम उन लोगों को मान्यता दें, उनकी प्रशंसा करें, जिन्होंने उस फल के लिए योगदान दिया जिसे हम

अनुभव कर रहे हैं, और ऐसा दिखावा न करें कि जो कुछ हो रहा है, वह केवल हमारी वजह से है। किसी और के योग्य आदर को हम न चुराएं। जहां तक हमारी जानकारी है, हम उन लोगों की प्रशंसा करें और उन्हें आदर दें जिन्होंने कटनी इकट्ठा करने में हमें योगदान दिया है!

सारी महिमा परमेश्वर को दें–सबकुछ उसकी वजह से हुआ

भजन संहिता 115:1

हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन् अपने ही नाम की महिमा, अपनी करूणा और सच्चाई के निमित्त कर।

हम कैसे गवाहियां देते हैं और परिणामों का समाचार देते हैं, यह महत्वपूर्ण है। यह बड़ा मज़ेदार लगता है जब हम लोगों को खड़े होकर अपने प्रारम्भिक शब्दों में यह कहते हुए सुनते हैं, "सारी महिमा परमेश्वर को मिले, सबकुछ उसकी वजह से हुआ!" और उसके बाद 30 मिनिट खुद के विषय में, उन्होंने क्या किया, उन्होंने कैसे कार्य किया आदि के विषय में बताने में बिताते हैं। गवाही के अंत में, आप उन लोगों से बहुत प्रभावित हो जाते हैं और आपने परमेश्वर के विषय में बहुत कम सुना! गवाही देते समय और सेवकाई की रिपोर्ट प्रस्तुत करते समय हमारा मकसद शुद्ध होना चाहिए। यदि यह हमें बढ़ावा देने के लिए किया गया हो, मानो हम "कोई विशेष" हैं, "अति अभिषिक्त" हैं, तब हमारा मकसद या इरादे सही नहीं हैं। मिनिस्ट्री रिपोर्ट और उद्धार पाए हुए, चंगाई पाए हुए, और छुटकारा पाए हुए लोगों की गवाहियां परमेश्वर की महिमा के लिए, और परमेश्वर के लोगों में प्रोत्साहन और बढ़ावा देने के लिए दी जाएं।

तुलना न करें, प्रतिस्पर्धा न करें

2 कुरिन्थियों 10:12

क्योंकि हमें यह साहस नहीं कि हम अपने आप को उनमें से ऐसे कुछ के साथ गिनें या उनसे अपने को मिलाएं, जो अपनी प्रंशसा आप करते हैं, और अपने आप को आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से मिलान करके मूर्ख ठहरते हैं।

जब हम अपनी सेवकाई के फलों, आकार, बढ़ौत्तरी और प्रमाण को देखते हैं, तो दूसरों के साथ खुद की तुलना न करें। आप कितने लोगों को

सुसमाचार सुना रहे हैं या आपकी स्थानीय कलीसिया कितनी बड़ी है, इस विषय में दूसरों के साथ होड़ न लगाएं। ये बातें प्रभु की दृष्टि में मायने नहीं रखतीं। प्रभु ने हमें जो कुछ करने के लिए बुलाया है उसमें प्रभु हमसे विश्वासयोग्यता चाहता है। क्या हम परमेश्वर को अपना उत्तम भाग दे रहे हैं? परमेश्वर ने हमारे जीवनों के लिए जो ठहराया है, क्या उसमें हम बढ़ रहे हैं? क्या हम उसकी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य हैं? ये बातें वास्तव में महत्व रखती हैं। उस फल पर ध्यान लगाएं जिसे परमेश्वर चाहता है कि आप लाएं। परमेश्वर आपके जीवन और सेवकाई के द्वारा जिन फलों की खोज में है, उस पर अपना ध्यान लगाएं।

मत्ती 20:1-16

1 "स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है, जो सवेरे निकला कि अपने दाख की बारी में मज़दूरों को लगाए।

2 और उसने मज़दूरों से एक दीनार रोज पर ठहराकर, उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा।

3 फिर पहर एक दिन चढ़े वह बाहर निकला, और औरों को बाजार में बेकार खड़े देखकर

4 उनसे कहा, 'तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, वह मैं तुम्हें दूंगा।' तब वे भी गए।

5 फिर उसने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया।

6 और एक घंटा दिन रहे फिर निकलकर औरों को खड़े पाया, और उनसे कहा, 'तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े हो?' "उन्होंने उससे कहा, 'इसलिए कि किसी ने हमें मज़दूरी पर नहीं लगाया।"

7 उसने उनसे कहा, 'तुम भी दाख की बारी में जाओ।'

8 "साँझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, 'मजदूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहलों तक उन्हें मजदूरी दे दे।'

9 जब वे आए जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उन्हें एक एक दीनार मिला।

10 जो पहले आए उन्होंने यह समझा कि हमें अधिक मिलेगा, परन्तु उन्हें भी एक एक दीनार ही मिला।

11 जब मिला तो वे गृहस्वामी पर कुड़कुड़ा के कहने लगे,

12 'इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्होंने दिन भर का भार उठाया और धूप सही?'

13 उसने उनमें से एक को उत्तर दिया, 'हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता। क्या तूने ही मुझसे एक दीनार न ठहराया था?

[14] जो तेरा है, उठा ले और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे दूँ उतना ही इस पिछले को भी दूँ।
[15] क्या यह उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूँ सो करूँ? क्या मेरे भले होने के कारण तू बुरी दृष्टि से देखता है?'
[16] इसी रीति से जो पिछले हैं, वे पहले होंगे; और जो पहले हैं, वे पिछले होंगे।"

परमेश्वर निर्णय लेता है कि वह किसे बुलाता है, किस कार्य के लिए बुलाता है, और जिन्हें वह बुलाता है उन्हें वह किस प्रकार आशीषित करता है।

रोमियों 14:4
तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बंध रखता है; वरन् वह स्थिर ही कर दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।

संगति

देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें! यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया। यह हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन को आशीष ठहराई है।

(भजन संहिता 133:1-3)

अध्याय 8

8
संगति

प्रभु यीशु मसीह के सेवक होने के नाते, भले हमारे पास अद्वितीय वरदान और बुलाहट हों, और हमारी अपनी सेवकाइयां हैं जिनमें हम व्यस्त हैं, फिर भी हम एक ही देह के–प्रभु यीशु मसीह के अंग हैं। हम उसी लोहू से धुले हैं, हमने परमेश्वर के उसी अनुग्रह से उद्धार पाया है, उसी पवित्र आत्मा के द्वारा हमारा अभिषेक हुआ, हम उसी परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हैं, और उसी परमेश्वर के राज्य के अंग हैं और सभी मसीह की उसी देह को बनाने के लिए काम कर रहे हैं। इस दृष्टिकोण से, हमें एक साथ जुड़ना, संगति करना, सम्बंध बनाना और एक साथ काम करना सीखना है। मैं मानता हूं कि हम भिन्न मसीही फिरकों से आते हों जिनके दृष्टिकोण में थोड़ा फर्क है, परंतु हम सभी परमेश्वर के वचन की बुनियादी सच्चाइयों से सहमत हैं और इसलिए हम जिन बातों के विषय में सहमत हैं, उसमें एक दूसरे के साथ संगति कर सकते हैं। मैं यह भी मानता हूं कि हम सभी व्यस्त हैं, प्रभु के कार्यों को करने में लगे हैं जो परमेश्वर ने हमें सौंपा है। अतः अपने अन्य साथी सेवकों के साथ उत्तम रिश्तों का उद्देश्यपूर्ण ढंग से निर्माण करने हेतु समय निकालना आसान बात नहीं है। और फिर भी मेरा विश्वास है कि, हमें ऐसा करना चाहिए। हमें एक दूसरे की ज़रूरत है। और जब शहरव्यापी कलीसिया एकजुट और मज़बूत होगी, केवल तभी शहर में बदलाव आ सकता है। शहरव्यापी कलीसिया ही शहर में सुसमाचार ला सकती है।

राज्य के बनाने वाले बनें

मरकुस 3:24
यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है।

सेवकाई में, हम जो कुछ करते हैं उस पर हम इतना ध्यान लगा देते हैं कि हम इस बात को भूल जाते हैं कि अंततः हम परमेश्वर के राज्य को आते हुए देखना चाहते हैं, जैसे स्वर्ग में है, वैसे इस पृथ्वी पर उसकी इच्छा को पूरी होते हुए देखना चाहते हैं। परमेश्वर का राज्य हमारी व्यक्तिगत् सेवकाइयों के क्षेत्र से बहुत बड़ा है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि राज्य के निर्माण के सम्बंध में जो कुछ हम करते हैं, उसका हम मूल्यांकन करना सीखें।

जो सेवकाई मैं कर रहा हूं, क्या उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य की बढ़ौतरी हो रही है या मेरे नाम और काम को बढ़ावा मिल रहा है? क्या प्रभु का राज्य और प्रभुता लोगों के हृदयों और जीवनों में, उस समाज और शहर में जहां मैं सेवा कर रहा हूं, स्थापित हो रही है? जो कुछ मैं कर रहा हूं, उसके द्वारा क्या परमेश्वर के लोगों के मध्य एकता निर्माण हो रही है ताकि परमेश्वर का राज्य सशक्त हो या मैं एकांत में अपना कार्य कर रहा हूं जिससे जो मैं कर रहा हूं, उसके द्वारा अन्य कलीसियाओं और सेवकाइयों को बल नहीं मिलता?

राज्य का निर्माण करने वाला अपने व्यक्तिगत् दर्शन, कलीसिया और सेवकाई से परे देखता है और अन्य दर्शनों, सेवकों, कलीसियाओं और सेवकाइयों को आशीष देने का प्रयास करता है, ताकि परमेश्वर का राज्य और प्रभुता लोगों के जीवनों में संस्थापित हो।

राज्य का निर्माण करने वाला दूसरे के साथ भागी होने के लिए, अन्य लोगों के दर्शनों में कदम बढ़ाने और बिना प्रशंसा और खुद को बढ़ावा देने के अवसरों की खोज करने का प्रयास न करते हुए, सेवा करता है। राज्य का निर्माण करने वाले के लिए, "मुझे इससे क्या मिलेगा?" या "उसमें मेरे लिए क्या है?" इस प्रकार के प्रश्न पूछे नहीं जाते और महत्व नहीं रखते, वह केवल यीशु की महिमा करना चाहता है।

परमेश्वर का सेवक होने के नाते, हमें "राज्य की मानसिकता" बनाए रखना है, जहां पर "हमें इससे क्या लाभ होगा?" इस दृष्टि से हम नहीं देखते, परंतु हम "इससे परमेश्वर के राज्य को क्या लाभ होगा?" इस

संदर्भ में सोचते हैं। यदि परमेश्वर का राज्य आगे बढ़ेगा, तो मैं आनन्द के साथ सेवा करूंगा। यही परमेश्वर के राज्य का सही निर्माण करने वाला है।

अन्य सेवकों के साथ सम्बंध बनाएं

यूहन्ना 4:35-38

35 क्या तुम नहीं कहते, 'कटनी होने में अब भी चार महिने पड़े हैं?' देखो, मैं तुम से कहता हूं, अपनी आंखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं।
36 काटनेवाला मजदूरी पाता और अनन्त जीवन के लिए फल बटोरता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें।
37 क्योकि यहाँ पर यह कहावत ठीक बैठती है, 'बोनेवाला और है और काटनेवाला कोई और।'
38 मैंने तुम्हें वह खेत काटने के लिए भेजा जिसमें तुमने परिश्रम नहीं कियाः दूसरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए।"

सेवकाई में ऐसा शायद ही होता है कि हम सबकुछ अकेले करें और सबकुछ अकेले ही हो। मानक यह है कि हमसे आगे किसी और ने जाकर बीज बोया है। परमेश्वर ने हमें उनके परिश्रम में प्रवेश करने के लिए भेजा है। जब हम शहर में परिश्रम करते हैं, तब सम्भव होता है कि उस शहर में पहले ही कलीसिया और सेवकाइयां होती हैं जो कार्य कर रही हों। हमें उनके साथ जुड़ना, व्यवहार करना, सम्बंध बनाना और उस शहर के परमेश्वर के अन्य जनों के साथ कार्य करना सीखना है। आदर्श तौर पर, हम यदि शहर में एक दूसरे के कार्य के लिए पूरक बनना सीखेंगे, और सम्भवतः हर एक सहभागी शहर में समान लक्ष्य की ओर बढ़ेगा तो उत्तम होगा।

परमेश्वर के अन्य सेवकों के साथ मित्रता बनाने और सम्बंध स्थापित करने हेतु समय और प्रयास लगता हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हम केवल सेवकाई से सम्बंधित कार्यों के लिए ही नहीं, परंतु आपस में सम्बंध बढ़ाने के लिए इकट्ठा हों। जब हम अपने हृदयों को, अपनी सफलताओं, संघर्षों और अपनी चुनौतियों को बांटेंगे और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करेंगे, तब अद्‌भुत बातें होंगी। यदि कोई गलतफहमियां हों, तो हम उन्हें दूर कर सकते हैं, टूटे हुए रिश्तों को चंगाई प्रदान कर सकते हैं और एक दूसरे को

आशीष दे सकते हैं। *"इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओः ..."* (याकूब 5:16)। उसके बाद, रिश्तों की मज़बूती से हम अपनी सेवकाई में कार्यरत् हो सकते हैं। यदि हम वास्तव में ऐसा कर सकें, तो मुझे विश्वास है कि हमारे गांव और शहरों पर परमेश्वर की और सामर्थ और अभिषेक को हम उतरते हुए देखेंगे।

विभिन्न फिरकों के मध्य सेतु बनाएं

1 कुरिन्थियों 10:16,17

16 वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं; क्या मसीह की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?
17 इसलिए कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।

राज्य के निर्माण में हम एक और चुनौती का सामना करते हैं, फिरकों की दीवारें और फिरकों की मानसिकता। अधिकतर समय, हम उन लोगों के साथ व्यवहार करने में सहज महसूस करते हैं जो हमारे फिरकों के होते हैं या उन फिरकों से निकट सम्बंध रखते हैं। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, स्वतंत्र कलीसियाएं एक दूसरे के साथ सहज महसूस करती हैं। मेनलाईन सुसमाचारीय फिरकों के पासबान एक दूसरे के साथ सहज महसूस करते हैं। हम शायद ही पासबानों और मसीही सेवकों को इन रेखाओं को लांघते हुए देखते हैं, और संगति और रिश्तों को बनाने के लिए सांप्रदायिक रेखाओं को पार करते हुए देखते हैं।

मैं मानता हूं कि फिरकों के मध्य सैद्धांतिक मतभेद होते हैं। परंतु, मेरा विश्वास है कि हमें एक दूसरे के साथ संगति करने और एक दूसरे के साथ व्यवहार करने हेतु हम समान विचार और कारणों को खोज निकाल सकते हैं। नया जन्म पाए हुए विश्वासी होने के नाते, हम एक ही क्रूस से होकर गुज़रे हैं, उसी लोहू से धोए गए हैं और उसी देह के अंग हैं। एक दूसरे से भयभीत होने के बजाए, हम सेतुओं को बनाएं और एक दूसरे से सम्बंध जोड़ें।

साथी सेवकों से सीखें

नीतिवचन 27:17
जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

अन्य सेवकों के साथ रिश्ता बनाने के एक भाग के रूप में, हमें एक दूसरे से सीखना चाहिए। हमें हर समय बोलने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए, परंतु सुनने के लिए भी तैयार होना चाहिए। प्रश्न पूछें। उनकी कल्पनाओं, विचारों, सुझावों, और अनुभवों को सुनें। उन्हें उनके हृदय की बातों को बताने का अवसर प्रदान करें। इस प्रक्रिया में हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। जिस प्रकार लोहा लोहे का चमकाता है, हमारे जीवन भी एक दूसरे को चमकाते हैं। ऐसी बातचीत में जिन बातों को हम सीखते हैं, वे अनमोल होती हैं और शायद कई प्रकार की हानि और दुखों से हमारे जीवनों और सेवकाइयों को बचा सकती हैं। परमेश्वर इस प्रकार के साधारण वार्तालाप का उपयोग करके हमें मार्गदर्शन कर सकता है और नये क्षेत्रों में हमें अभिदिशा प्रदान कर सकता है।

परमेश्वर के अन्य दासों के साथ जो रिश्ता हम बनाते हैं उसके द्वारा, कुछ लोग हमारे मित्र बन जाएंगे, कुछ आदर्श का अनुसरण करने हेतु अगुवे और कुछ गुरु जो व्यक्तिगत् स्तर पर हमारे जीवनों में योगदान दे सकेंगे। बदले में, हमें दूसरों के मित्र बनने का अवसर प्राप्त होगा।

हम ऐसे अगुवे बन सकते हैं जिन्हें अन्य लोग रोल मॉडल (आदर्श) के रूप में देखें। हमें दूसरों को सिखाने और परमेश्वर के राज्य और उनकी सेवकाई में बढ़ते हुए देखने का अवसर प्राप्त होगा।

अनुयायी बनने से सहज महसूस करें–निर्देशों का पालन करें

मत्ती 20:26,27
26 परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने;
27 और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने;

हम में से अधिकतर लोगों में अगुवाई करने, ज़िम्मेदारी स्वीकार करने, आगे रहने और दूसरों को उनके पीछे चलने हेतु निर्देश देने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। परंतु, जब हम अपने संगी पासबानों के साथ होते हैं, जहां पर सभी अपने अपने स्थान में अगुवे होते हैं, वहां पर हमें किसी का अनुसरण करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

अक्सर यह देखना अत्यंत निराशाजनक होता है कि कुछ "महान" अगुवे दूसरों के पीछे चलना पसंद नहीं करते। हम उनमें सहयोग देने और निर्देशों का पालन करने में हठीलापन और अनिच्छा देखते हैं इसलिए कि उन्हें प्रभुता नहीं सौंपी गई, और अन्य कोई अगुवे के पद में हैं। महानता का सच्चा चिन्ह अगुवाई करने की हमारी योग्यता में ही नहीं, बल्कि जब दूसरा अगुवाई करता है, तब उसका अनुसरण करने में है।

हम अपनी सेवकाइयों में अगुवे हो सकते हैं, परंतु जब हम अगुवों के समूहों में होते हैं, तब हमें जो कोई अगुवाई करता है उसके पीछे सम्पूर्ण हृदय से चलना है। जब वे हमें खड़े रहने के लिए कहते हैं, तब हम खड़े रहें। जब हमें बैठने के लिए कहा जाता है, तब बैठें। ऐसा ही करना है। हम उनके पीछे चलते हैं। जब हमें दस मिनिट बोलने के लिए कहा जाता है, तब दस मिनिट ही बोलें और फिर चुप हो जाएं। हम दूसरों को अपना "प्रभाव" दिखाते हुए 15, 20 या 30 मिनिट तक बोलते न रहें।

मान्यता न मिलने पर भी खुश रहें

2 कुरिन्थियों 3:1

क्या हम फिर अपनी बड़ाई करने लगे? या हमें अन्य लोगों के समान सिफारिश की पत्रियां तुम्हारे पास लानी या तुमसे लेनी हैं?

हमें हमेशा हमारी सेवकाई के पदों से सम्बोधित किया जाता है या पहचाना जाता है, हमेशा "पास्टर," "भाई," "प्रेरित," "रेव्हरेन्ड," या अन्य उपाधियों से सम्बोधित किया जाता है—परंतु जब अचानक हमें इन उपाधियों से पहचाना नहीं जाता, तो हम भ्रमित, खोया हुआ, और अजीब महसूस करने लगते हैं। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि सबसे पहले, हम परमेश्वर की

दृष्टि में सामान्य विश्वासी हैं। जब हम सभा में भाग लेते हैं, तब हमें भीड़ के साथ बैठने, परमेश्वर की आराधना करने और वचन सुनने और अन्य विश्वासियों के समान करने में सहजता महसूस होनी चाहिए। समस्या यह है कि हम में से अधिकतर सेवकों को मंच पर बुलाए जाने की, या आगे की कतार में बैठने के लिए बुलाए जाने की, परमेश्वर के सेवकों के रूप में पहचाने जाने की इतनी आदत हो चुकी है कि हम सामान्य विश्वासियों के साथ, "भीड़ में" नहीं रह पाते। यदि ऐसा हुआ तो हम क्रोधित हो जाते हैं! जब हमें मान्यता या पहचान नहीं मिलती तब यदि हम बेचैन हो जाते हैं, तब हमारी पहचान की समझ में कुछ तो गलत है।

दूसरों के वरदानों, अभिषेक, सेवकाई का आदर करें

1 कुरिन्थियों 12:4-6

4 वरदान तो कोई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है;

5 और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है;

6 और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।

परमेश्वर हम में से हर सेवक के द्वारा विभिन्न तरह से कार्य करता है। हम सभी एक समान प्रचार नहीं करते, प्रार्थना नहीं करते, भविष्यद्वाणी नहीं करते और गाते नहीं। यह महत्वपूर्ण है कि हम एक दूसरे का आदर करें भले ही सेवकाई करने का हमारा तरीका भिन्न हो। परमेश्वर के विभिन्न कार्य करने के तरीके हैं, परंतु एक ही परमेश्वर हर एक के द्वारा कार्य करता है। सेवकाई का कोई भी एक तरीका दूसरे तरीके से श्रेष्ठ नहीं है। जी हां, सेवकाई के कुछ स्वरूप अधिक नाट्यपूर्ण, अधिक ऊंची आवाज में बोलने वाले, दूसरों का अधिक ध्यान आकर्षित करनेवाले हो सकते हैं। परंतु इसका अर्थ और सामर्थ या अधिक फल नहीं है। हम सेवकाई में सब प्रकार की विविधता और भिन्नता का उत्सव बनाएं जो परमेश्वर ने अपनी देह में रखी है। हम आनन्द के साथ एक दूसरे में परमेश्वर को कार्य करते हुए उत्सव मनाएं।

दूसरे व्यक्ति के सेवक का न्याय न करें

मत्ती 7:1-5

1 "दोष मत लगाओ ताकि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।
2 क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।
3 "तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं दिखाई देता?
4 जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से यह कैसे कह सकता है, कि ला, 'मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं?
5 हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा।"

यूहन्ना 7:24

मुंह देखा न्याय न करो, परन्तु ठीक ठीक न्याय करो।

रोमियों 14:4,10-12

4 तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बंध रखता है वरन् वह स्थिर ही कर दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।
10 तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे।
11 क्योंकि लिखा है, "प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगी।"
12 इसलिए हममें से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।

हमें सावधान रहना है कि हम अपने साथी सेवक या पासबान को उनकी गलतियों और असफलताओं के लिए दोष न दें और उनका न्याय न करें। क्या गलत है और क्या सही है, यह पहचानते हुए और दूसरों की गलतियों से सबक सीखते हुए—हमें दूसरे व्यक्ति का न्याय नहीं करना है। जब हम अपने साथी सेवक को भूल या किसी प्रकार की गलती करते हुए देखते हैं, तो हम उसे दोष न दें, उसकी आलोचना न करें और उसे दण्डित न करें। हम सार्वजनिक तौर पर आलोचनात्मक दृष्टि से उनके विषय में बोलने से बचें। वे हमारे उत्तरदायी नहीं हैं, परंतु उस प्रभु के उत्तरदायी हैं जो उनका

स्वामी है। हम गलती को पहचानते हैं। हम उनकी गलतियों से सीखते हैं ताकि हम स्वयं वैसी गलती न करें। उस विषय में पूछने पर, हम यह कबूल करते हैं कि वह गलत है और फिर भी उनके जीवनों पर अनुग्रह और दया की बात बोलते हैं, इस इच्छा के साथ कि हम पुनर्स्थापन और धार्मिकता को स्थापित होते हुए देख सकें। हमें उन्हें परमेश्वर के सेवकों के रूप में देखते रहना है और उस अभिषेक का आदर करना है जो उनके जीवनों पर है।

कभी-कभी, हम किसी पासबान के जीवन में स्पष्ट दोष देखते हैं और सोचते हैं कि परमेश्वर फिर भी उन्हें क्यों उपयोग कर रहा है। इसका उत्तर सरल है। परमेश्वर उन्हें आज भी उपयोग करता है, इसी कारण से परमेश्वर हमें भी उपयोग करता है। यह उसका अनुग्रह है।

निंदा न करें, अपने भाई का रखवाला बनें

नीतिवचन 11:13
जो लुतराई करता फिरता वह भेद प्रगट करता है, परन्तु विश्वासयोग्य मनुष्य बात को छिपा रखता है।

नीतिवचन 17:9
जो दूसरे के अपराध को ढांप देता, वह प्रेम का खोजी ठहरता है, परन्तु जो बात की चर्चा बार बार करता है, वह परम मित्रों में भी फूट करा देता है।

1 कुरिन्थियों 10:24
कोई अपनी ही भलाई को नहीं, वरन् दूसरों की भलाई को ढूँढ़े।

संगी सेवक होने के नाते, हमें एक दूसरे का ध्यान रखना है, जब हम एक दूसरे के साथ होते हैं तब और जब हम एक दूसरे से दूर होते हैं तब भी। सहभागिता के बंधन में जिसका हम निर्माण करते हैं, परस्पर भरोसे की समझ होती है। जब हम सेवक होने के नाते एक दूसरे के साथ अपने संघर्षों को बांटते हैं तो हम अपेक्षा करते हैं कि उसमें गोपनीयता बरती जाए। हम यह उम्मीद नहीं करते कि अन्य सेवक उसे अपने गपशप का विषय बनाए और पूरे शहर भर उसकी चर्चा करें। यदि भरोसा खो गया, तो खुले हृदय से संगति करना मुश्किल है।

परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हमें यह सीखना है कि हम एक दूसरे की कमज़ोरियों और कमियों की चर्चा न करें। दूसरे व्यक्ति की सेवकाई के द्वारा परमेश्वर ने जो अच्छे काम किए हैं उनके विषय में बोलें। उसका उत्सव मनाएं। परंतु, उनकी असफलताओं के विषय में चुप रहें। यदि आप किसी को उस विषय में सिखाना या निर्देश देना चाहते हैं, तो उस व्यक्ति की पहचान छिपाकर ऐसा करें। ऐसा करने के द्वारा, हम अपनी मित्रता को बचा रहे हैं और दूसरे व्यक्ति की भलाई खोज रहे हैं।

ये पूर्णतया सम्भव है कि कभी-कभी हमारे किसी संगी पासबान या सेवक में नैतिक कमी होती है और उसे पुनर्स्थापन की आवश्यकता होती है। यदि उस व्यक्ति के साथ मित्रता और रिश्ते का बंधन मज़बूत है, तो हम आगे बढ़कर उस संगी सेवक को वापस उसके पैरों पर खड़ा कर सकते हैं। ऐसा हम प्रेम और सौम्यता के साथ करें। *"हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो। तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो"* (गलातियों 6:1,2)।

फूट न डालें

नीतिवचन 6:16-19

16 छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिनसे उसको घृणा है:
17 अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लोहू बहानेवाले हाथ,
18 अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पांव,
19 झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।

भाइयों के बीच मतभेद बोना परमेश्वर की दृष्टि में घृणित बात है—पूर्ण रूप से तिरस्कृत बात। वह इससे घृणा करता है। जब हम अन्य सेवकों की बुराई करते हैं, जब हम ऐसी बातें कहते और करते हैं जिनके द्वारा परमेश्वर के सेवकों के बीच शत्रुता बढ़े तो अंत में हम उनके बीच फूट डालते हैं। यदि मैं परमेश्वर के एक सेवक के पास जाकर उससे यह कहूं कि दूसरे

परमेश्वर के जन ने उसके विषय में इस प्रकार नकारात्मक बातें कही हैं तो मैं उनके बीच मतभेद और कलह बो रहा हूं। यदि किसी भाई के साथ मेरा मनमुटाव है, और मैं सीधे उसके पास जाकर इस मामले को सुलझाने के बजाए, दूसरे व्यक्ति के पास जाकर उसकी बुराई करता हूं तो मैं मतभेद के बीज बोता हूं। उस भाई के विषय में दूसरे व्यक्ति की राय जो कुछ मैंने कहा उस कारण अपने आप बदल जाती है। जो कुछ होता है, उसका प्रभु गवाह है। वह हर एक वार्तालाप को खामोशी से सुनता है। और एक बात निश्चित है, जब हम ऐसे काम करते हैं, तो वह उससे घृणा करता है!

संगति जीवन परिवर्तन के लिए होती है

कई "पासबानों की संगतियों" या मसीही सेवकों की सभा में हम जीवन का आदान प्रदान करने के बजाए अन्य कारणों से जाते हैं। मैंने यह देखा है कि अधिकतर बार, लोग ऐसी संगतियों में आने वाले भविष्य में उनकी सेवकाई द्वारा आयोजित की जाने वाली सभा या कॉन्फ्रन्स को बढ़ावा देने के लिए सहभागी होते हैं। वे पर्चे बांटने और इन सभाओं सहभागी होने के लिए लोगों को बिनती करने आते हैं। अन्य सेवकों के साथ सहभागिता जनसम्पर्क का कार्य नहीं है। अन्य पासबानों के साथ संगति करने का उद्देश्य यह है कि हम एक दूसरे की दृष्टि में "अच्छे बने रहें," दूसरों की मर्ज़ी हासिल करें, इस रिश्ते का उपयोग खुद को बढ़ावा देने के लिए या अन्य राजनैतिक कार्यक्रमों के प्रचार के लिए करते हैं, तो हमने इकट्ठा होने के पूरे उद्देश्य को खो दिया है। वास्तविक संगति "सहभागिता है," आपस में बांटना है, जो जीवनों में परिवर्तन लाता है। हम परमेश्वर के अन्य सेवकों के साथ सच्ची संगति रखना सीखें। हमारे अपने जीवन बदल जाएंगे!

कोई सुपर हीरो नहीं

रोमियों 12:16

आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।

परमेश्वर हमारी सेवकाई के आकार से, हमारी उपलब्धियों के महत्व से, हमारी ख्याति या हमारे पीछे कितने लोग आते हैं इससे प्रभावित नहीं

होता। परमेश्वर हमारी उपाधियों, पदवियों, और प्रशंसा पत्रों से प्रभावित नहीं होता। इनमें से कोई भी बात हमारे प्रभु को प्रभावित नहीं करती। सबसे छोटे से लेकर सबसे अधिक ख्याति प्राप्त हम सभी मसीह की देह के अंग हैं। हम सभी उसकी देह में समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। जब हम एक दूसरे के साथ संगति करने के लिए आते हैं—तब हम समान भूमि पर रहते हैं। हम उसके अनुग्रह से खड़े हैं और हम यहां पर एक दूसरे के जीवनों को बांटने, देने और समृद्ध करने के लिए आए हैं। सच्ची संगति ऐसे वातावरण में बढ़ती है, जहां पर लोग समान समतल भूमि पर खड़े रहते हैं। जब हम संगति में समय बिताने हेतु परमेश्वर के अन्य सेवकों के साथ इकट्ठा होते हैं, तब हम अपनी "सेवकाई का नकाब" हटाकर रखें। हम अपनी पदवियों और उपाधियों को हटाकर रखें। हम अपने अंहकार और सेवकाई के दर्जे को हटाकर रखें। हम पारदर्शी बनें। कोई भी सुपर हिरो नहीं है। हम सभी मिट्टी के बर्तन हैं जिनके द्वारा उसका अनुग्रह और सामर्थ प्रवाहित होते हैं।

पैसा

क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुःखों से छलनी बना लिया है। पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग, और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर।

(1 तीमुथियुस 6:10,11)

अध्याय 9

9
पैसा

पैसा मसीही सेवकाई का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

हमें पैसा इकट्ठा करना पड़ता है, और हमें सीखना है कि अपने पैसों का बुद्धिमानी के साथ कैसे उपयोग करें। कभी-कभी मसीही सेवक होने के नाते, हम "पैसों पर मन" लगाते हैं और निरंतर पैसों के विषय में सोचते रहते हैं। जब हमारे पास अधिक नहीं होता, तब हम सोचते रहते हैं कि अपने काम को आगे बढ़ाते रखने के लिए हम छोटी रकम कैसे इकट्ठा कर सकते हैं। जब हमारी सेवकाइयां बड़ी होती है और सब कुछ ठीक चलता रहता है, फिर भी—हमारा "ध्यान पैसों पर" होता है और हम और पैसा इकट्ठा करने के तरीके खोजते रहते हैं। अपने ध्यान को प्रभु पर और उसकी बुलाहट पर लगाए रखना, और पैसों पर से अपने ध्यान को हटाना एक चुनौती है। यह अध्याय कुछ संघर्षों की चर्चा करता है जिनका सामना हम पैसों के संबंध में मसीही सेवकाई में करते हैं।

पैसों के प्रेम के कारण

1 तीमुथियुस 6:10,11

10 क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुःखों से छलनी बना लिया है।

11 पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग, और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर।

जब हमारे विचारों में पैसा इतना अधिक स्थान ले लेता है—चाहे इसलिए क्योंकि हमारे पास पैसों का अभाव है और हम सोचते हैं कि जिसकी हमें ज़रूरत है, वह हमें कैसे मिलेगा या हमारे पास इतना है, परंतु हम और चाहते हैं—तो ऐसे स्थान में आ पहुंचना आसान होता है जहां पर हम वास्तव

में पैसों से "प्रेम" करते हैं। मुझे पैसों का "मोह" है और मैं उससे नियंत्रित हूं, यह मैं कैसे बता सकता हूं?

- यदि मैं हमेशा सोचता रहता हूं कि पैसा कहां से प्राप्त करूं, तब मैं पैसों से नियंत्रित हूं।
- मैं कहां सेवकाई करूंगा इस विषय में मेरा निर्णय यदि इस बात पर आधारित है कि मुझे कितनी भेंट मिलेगी, तब मैं पैसों से नियंत्रित हूं।
- जो भेंट मुझे मिलती है, उसके अनुपात में यदि मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूं और उत्सव मनाता हूं, तब मैं पैसों से नियंत्रित हूं।
- यदि मैं उन लोगों को महत्व देता हूं जो ज्यादा भेंट देते हैं, जो नहीं देते उन्हें मैं उतना महत्व नहीं देता, तब मैं पैसों से नियंत्रित हूं।
- यदि मैं खराई के साथ थोड़ा समझौता करने के लिए तैयार हूं और सेवकाई के लिए पैसा इकट्ठा करने हेतु मैं अनैतिक काम भी कर सकता हूं, तब मैं पैसों से नियंत्रित हूं।
- यदि मै ख्याति प्राप्त लोगों के साथ, धनवान, व्यवसायिकों के साथ और बड़ी हस्तियों के साथ धूमना-फिरना पसंद करता हूं, तब मैं पैसों से नियंत्रित हूं।

पैसों के लिए सेवकाई में न रहें

1 पतरस 5:1-4

1 तुममें जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुःखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं
2 कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिए नहीं, पर मन लगा कर।
3 जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिए आदर्श बनो।
4 और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं।

प्रेरितों के काम 20:33
मैंने किसी की चान्दी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया।

यह अजीब वक्तव्य लगता होगा, परंतु कुछ लोग मसीही सेवकाई को पैसा बनाने का आसान रास्ता मानते हैं। वे सोचते हैं कि आपको केवल सप्ताह में एक दो संदेश देना है और लोगों के घरों को भेंट देना है और खुद के लिए आसान कमाई पाना है। यह विचार गलत है। हम यह सोचकर मसीही सेवकाई में नहीं रह सकते कि यह पैसा बनाने का आसान तरीका है। यह प्रेरणा गलत है। कुछ लोग विदेशी सेवकाइयों से आर्थिक सहायता पाने हेतु कलीसियाएं आरंभ करते हैं।

कुछ लोग विदेशी वक्ताओं को न्योता देते हैं और यदि वे उन्हें प्रायोजक के तौर पर सहायता करेंगे, तो उनकी सभाओं या क्रूसेड्स को आयोजन करने की पेशकश करते हैं। इस प्रक्रिया में वे बेईमानी से बहुत सारा धन इकट्ठा कर लेते हैं जिसके विषय में विदेशी सेवक बेखबर रहते हैं। कुछ लोग पैसा इकट्ठा करने के लिए और उसमें से अधिकतर खुद पर खर्च करने के लिए धर्मार्थ मसीही संस्थाओं की स्थापना करते हैं और वे बहुत कम पैसा धर्मार्थ पर खर्च करते हैं। ये सारे तरीके पैसा बनाने के लिए "मसीही सेवकाई" के नाम का उपयोग करना है। ये बेईमानी है! हम यहां पर बेईमानी से लाभ पाने के लिए नहीं हैं।

आत्मिक रीति से बीज बोएं, लोगों को भौतिक रूप में देने दें

गलातियों 6:6
जो वचन की शिक्षा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को भागी करे।

1 कुरिन्थियों 9:11,14
11 इसलिए जबकि हमने तुम्हारे लिए आत्मिक वस्तुएं बोईं, तो क्या यह कोई बड़ी बात है कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें।
14 इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया है कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो।

परमेश्वर ने यह ठहराया है कि जब हम लोगों के जीवनों में आत्मिक रीति से धन संयोजन करते हैं, तब वे उसके बदले में हमें आर्थिक रीति से सहायता करने के लिए वापस हमारे जीवन में लौटाते हैं, ताकि हम हमारी आत्मिक ज़रूरतों का ध्यान रख सकें। इस संदर्भ में, हमें पहले आत्मिक रीति से बोना सीखना है, फिर लोगों को परमेश्वर की अगुवाई में आर्थिक रूप से हमें देने दें। विश्वासयोग्यता के साथ बोएं। निरंतर बोएं। लोगों को आत्मिक रीति से ग्रहण करने के लिए कुछ समय दें। उन्हें परमेश्वर के राज्य के लिए देना सिखाएं। जिन लोगों ने आत्मिक रीति से सेवा की है, वे परमेश्वर के राज्य के लिए दूसरों तक पहुंचने में हमारी सहायता करते हैं (2 कुरिन्थियों 10:15,16)।

मैं मानता हूं कि सभी बातों में यह सम्भव नहीं होगा, विशेष तौर पर गरीब लोगों के मध्य सेवा करते समय और अन्य परिस्थितियों में, जहां जिनकी सेवा की जा रही है और आत्मिक रीति से जिन्हें सेवकाई प्राप्त हो रही है, उन लोगों को आर्थिक रूप से वापस नहीं लौटा सकते जो उनकी सेवा करते हैं। इस मामले में, हमें अन्य विश्वासियों की सहायता की ज़रूरत होगी, स्थानीय कलीसिया या सेवकाई ताकि जब हम दूसरों में आर्थिक रूप से बोते हैं, तब वे आर्थिक रूप से हमारा ध्यान रखें। यह पवित्र शास्त्र के अनुसार है (फिलिप्पियों 4:14-16; 2 कुरिन्थियों 11:8)।

आपका धन इकट्ठा करने का तरीका साफसुथरा, पारदर्शी और आदरपूर्ण हो

2 कुरिन्थियों 8:21

क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उनकी चिन्ता करते हैं।

आपका धन इकट्ठा करने का तरीका साफसुथरा, पारदर्शी और आदरपूर्ण हो। जिस दर्शन को पूरा करने के लिए आपको बुलाया गया है उसे बताएं और लोगों को देने के लिए निमंत्रित करें। प्रभु पर भरोसा रखें कि वह देने के लिए लोगों के हृदयों को कायल करे। प्रभु पर भरोसा रखें कि वह उस दर्शन के लिए जिसे उसने आपके हृदय में रखा है, पर्याप्त प्रयोजन से अधिक

आशीष प्रदान करे। आपको जो धन दिया गया है और इस पैसे का कैसे उपयोग किया गया, उसका सही हिसाब रखें। यदि आप इसका अभ्यास करना आरम्भ करेंगे, जबकि आपकी कलीसिया / सेवकाई छोटी ही है, तब ऐसा बाद में जारी रखना आसान होगा जब आपकी उन्नति हो रही हो।

आरम्भ ही से, जब हमारे पास दस लोग थे, तब से हमने कलीसिया में दिए जाने वाले दशमांश और भेंटों का और उसे किस प्रकार उपयोग किया जा रहा है उसका हिसाब रखा। आज, एक विशाल कलीसिया के नाते, हम कलीसिया में आने वाले और बाहर जाने वाले हर एक पैसे का सही हिसाब रखने की प्रथा जारी रखते हैं। हमारे पास योग्यता प्राप्त अकाऊंटेंट हैं जो हमारा हिसाब किताब जांचते हैं और पैसों से क्या किया सकता है और क्या नहीं किया जा सकता है इस विषय में हमें सलाह देते हैं। हमारे सारे खाते वार्षिक तौर पर लेखापाल द्वारा जांचे जाते हैं। हमने सबकुछ खुला रखा है ताकि कलीसिया का कोई भी सदस्य अपनी इच्छानुसार हमारा हिसाब किताब देख सकता है:

यहां पर कुछ बातें बताई गई हैं जिन्हें आपको नहीं करना है:

- "विश्वास में जीने" का दावा करके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से यहां वहां जाकर लोगों को पैसों के लिए संकेत न दें या उन्हें देने के लिए विवश न करें।
- लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से यह बताने के लिए आपको इतनी रकम की आवश्यकता है, "प्रार्थना निवेदन" का उपयोग न करें।
- बड़े बड़े कारोबारी, राजनीतिज्ञ आदि के पास जाकर बड़ी रकम न मांगें।
- लोगों को पैसा देने के लिए मज़बूर न करें।
- पैसा देने के लिए लोगों के साथ भावनात्मक हथकण्डे न अपनाएं।

पैसा इकट्ठा करने के लिए और भी कुछ बातें हैं जिन्हें हमें नहीं करना चाहिए। जिनके विषय में नीचे दिया गया है।

विदेशी सहायता पर निर्भर न रहें

2 कुरिन्थियों 9:8

परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिससे हर बात में और हर समय सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे; और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।

कई दशकों तक, सम्भवतः सदियों तक, भारत देश की कलीसिया विदेशी मिशन और विदेशी सहायता पर सेवकाई करने हेतु निर्भर रही है। अब समय बदल गया है। मुझे विश्वास है कि राष्ट्रों को सुसमाचार सुनाने का कार्य पूरा करने हेतु हमारे देश में ही आवश्यकता से अधिक धन है। आपको केवल सही हृदय और मानसिकता रखने की ज़रूरत है ताकि काम को पूरा करने हेतु सही लोगों तक धन के प्रवाह को लाया जा सके। शहर सामर्थ के केंद्र और धन का स्थान है। इसका मतलब यह नहीं है कि छोटे गांव या नगरों में धन नहीं है। वहां भी है। परंतु मुझे ऐसा लगता है कि शहर की कलीसियाएं जो बहुतायत से आर्थिक योगदान पाती हैं, उन्हें मिशन स्टेशन बनकर छोटे गांव और देहातों में कार्य करने वालों को सहायता प्रदान करनी चाहिए, जब तक ये छोटी कलीसियाएं खुद की मदद करने लायक नहीं हो जाती। छोटे गांव और नगरों में, हमें मसीही सेवकों की सहायता करना है ताकि वे अपनी मण्डलियों को स्थानिक तौर पर धन पैदा करने हेतु कई विकल्पों पर विचार करें ताकि स्थानीय कलीसिया आत्म-निर्भर बन सके। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर ने हर स्थान में संसाधनों और अवसरों को रखा है, और यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम बुद्धिमानी से और आदरपूर्वक ढंग से धन को प्राप्त करें, ताकि हम हर भले कार्य के लिए उसका प्रयोजन प्राप्त कर सकें।

विदेशी धन पाना गलत नहीं है, फिर मैं सोचता हूं कि हमें उस पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। यदि विदेश में आपके मित्र या रिश्तेदार हैं जो आपकी सेवकाई में योगदान देना चाहते हैं और आप कानूनी तौर पर उस धन को पा सकते हैं तो ऐसा करें। इसमें कुछ गलत नहीं है। परंतु अपने सेवकाई को इस तरह तैयार करें कि यदि किसी कारणवश इस प्रकार का योगदान बंद हो जाए, तो आपकी सेवकाई चलती रहे।

जब से हमने यहां बैंगलोर में ऑल पीपल्स चर्च शुरू किया, तब से हमने अपने हृदयों में यह संकल्प कर लिया कि हम आर्थिक रूप से सहायता पाने हेतु विदेश पर निर्भर नहीं रहेंगे। हमारे शहर में स्थानीय कलीसिया के रूप में और सम्पूर्ण भारत देश में आज जो कुछ हम कर रहे हैं, उसका 99 प्रतिशत भारत के अंतर्गत हम दशमांश और भेंटों के द्वारा प्राप्त करते हैं। बहुत कम पैसा विदेशों में रहने वाले भारतीयों से प्राप्त होता है।

आपके प्रोजेक्ट का "बिल दुगुना" करके न बताएं

एक वास्तविक गंभीर समस्या जो आज मसीही सेवकाई में चल रही है वह यह है कि कुछ मसीही सेवकों के पास अनेक संलग्नताएं हैं, वे विभिन्न संस्थाओं से सहायता पा रहे हैं, और अपने प्रोजेक्ट का बिल दुगुना बता रहे हैं और यह सबकुछ अत्यंत छलपूर्ण ढंग से कर रहे हैं। कई स्थानों में संलग्नता होना गलत नहीं है या आपकी सेवकाई में दान देने वाले कई दानदाता भी गलत नहीं है। समस्या तब होती है जब ऐसा छलपूर्ण ढंग से किया जाता है और दानदाताओं के अनजाने में। इसलिए, उदाहरण के तौर पर, प्रचारक एक संस्था से सम्पर्क करता है और उसे यह बताता है कि वह उनके साथ अपनी सेवकाई को संलग्न करना चाहता है, और उनसे आर्थिक सहायता और आत्मिक सहायता पाना चाहता है। हो सकता है कि वह उन्हें यह न बताए कि वह पहले से ही दूसरी संस्था के साथ संलग्न है। और जो काम वह कर रहा है, उसके लिए वह उनसे आर्थिक और आत्मिक सहायता पा रहा है। इसलिए, वह दो भिन्न संस्थाओं के मन में यह छाप छोड़ जाता है कि वे उसको पूर्ण रूप से "आर्थिक सहायता" कर रहे हैं और वह उनकी संस्था का एक भाग है, जबकि वास्तव में, वह दो संस्थाओं के साथ खिलवाड़ कर रहा है। उसी तरह, यदि प्रचारक एक संस्था से सहायता इकट्ठा करता है, और उसी तरह अतिरिक्त आमदनी कमाने के लिए कोई कारोबार कर रहा है, परंतु अपने दानदाताओं को यह नहीं बताता है कि वह वास्तव में क्या कर रहा है। यहां पर कुंजी यह है कि हम उन लोगों के साथ ईमानदार, पारदर्शी और खरे बने रहें जो हमें आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं।

दानदाताओं की अनुमति के बगैर एक प्रोजेक्ट का पैसा दूसरे प्रोजेक्ट में खर्च न करें

मसीही सेवकाई में पैसों के उपयोग की जब बात आती है, तब एक और गलती की जाती है, एक “प्रोजेक्ट” या कारण से पैसा इकट्ठा किया जाता है और उसका उपयोग वास्तव में किसी दूसरे काम के लिए किया जाता है। उदाहरण के तौर पर, प्रचारक अनाथ बच्चों के लिए पैसा इकट्ठा करता है, परंतु उसमें से कुछ पैसा सुसमाचार क्रूसेड के लिए खर्च कर लेता है। अब हम यह कहकर अलग अलग तरह से इस कार्य का समर्थन कर सकते हैं, “प्रभु ने उन्हें ऐसा करने के लिए कहा,” “हमारे बच्चों के क्वायर ने क्रूसेड में गीत गाया और यह हमारे बच्चों की सेवकाई का एक भाग है,” आदि। यह गलत है। यदि प्रचारक सुसमाचारीय क्रूसेड के लिए उसमें से कुछ पैसों का उपयोग करना चाहता था, तब उसे सबसे पहले अपने दानदाताओं को यह जानकारी देना चाहिए कि उनकी धनराशि का कुछ भाग ऐसे उद्देश्य के लिए खर्च किया जाएगा, और दूसरी बात कानूनी तौर पर इस बात की अनुमति होनी चाहिए कि एक प्रोजेक्ट का पैसा लेकर किसी दूसरे कार्य में लगाया जाए (जो कि उस संस्था के और देश के नियम और कानून पर निर्भर होगा)।

विदेशी सेवकाइयों को मत लूटिये

नीतिवचन 20:17

चोरी-छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है, परंतु पीछे उसका मुंह कंकड़ से भर जाता है।

एक और आम समस्या जो हमने देखी है, वह यह है कि कुछ स्थानीय मसीही सेवक भारत में सेवा करने की इच्छा रखने वाले सीधे साधे विदेशी सेवकों को ”लूटते” हैं। अन्य देशों से भारत में आने वाले प्रचारक और सेवक कई कामों के लिए वास्तविक कितना खर्च आता है यह नहीं जानते। इसलिए स्थानीय आयोजक वास्तविक मूल्य के तीन या चार गुना अधिक पैसा इकट्ठा कर सकते हैं और बेईमानी से इन पैसों का उपयोग खुद के लिए करते हैं। स्थानीय आयोजक मसीही सेवक होने के भेष में झूठ बोलने वाला और

चोर बन जाता है! प्रेरित पौलुस चेतावनी देता है: *"क्योंकि बहुतेरे ऐसी चाल चलते हैं, जिनकी चर्चा मैंने तुमसे बार बार की है, और अब भी रो रोकर कहता हूं कि वे अपनी चाल-चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उनका अन्त विनाश है, उनका ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं"* (फिलिप्पियों 3:18,19)।

सेवकाई और व्यवसाय दोनों को आपस में न मिलाएं

2 कुरिन्थियों 6:3

हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।

मि. जेम्स नैगल जिनके विषय में मैंने तीसरे अध्याय के अंत में आपको बताया, उन्होंने यू.एस.ए. के एक विशाल मसीही संस्था के लेखा विभाग में 17 वर्षों तक काम किया। जब मैंने उन्हें बताया कि मैं भारत देश वापस जाकर बैंगलोर में एक कलीसिया स्थापित करना चाहता हूं, और व्यवसाय भी आरम्भ करना चाहता हूं, तब उन्होंने तुरंत मुझे यह सलाह दी। उन्होंने कहा, "आशीष, सेवकाई का पैसा और व्यवसाय का पैसा कभी एक साथ मत रखना। हमेशा उन्हें अलग रखना।" फिर उन्होंने पैसों की गड़बड़ी के कई उदाहरण दिए जो उन्होंने देखे थे, जहां स्थानीय कलीसियाओं और मसीही सेवकाइयों ने सेवकाई का पैसा कारोबार के लिए और विभिन्न रीति से धन संयोजन करने के लिए लगाया ताकि यह पैसा "बढ़ सके।" इनमें से कई लोगों को भारी नुकसान सहना पड़ा, और न केवल सेवकाई का पैसा बर्बाद हो गया जो कि कई लोगों ने त्याग करके दिया था, परंतु कई अपना भरोसा और विश्वास भी खो बैठे।

पासबान और मसीही सेवक होने के नाते, आपको सावधान रहना है कि आप सेवकाई के पैसों का उपयोग अपने कारोबार के लिए, निजी व्यवसायों को आरम्भ करने के लिए, धन संयोजन में न लगाएं जिसकी अनुमति आपकी संस्था के संविधान में नहीं है। यदि आपका जीवनसाथी या परिवार का कोई सदस्य किसी प्रकार का कारोबार आरम्भ करना चाहता है, तो उसका "मसीहीकरण" करके सेवकाई के पैसे को "बीज" करके उपयोग कर उनके लिए सूद न कमाएं।

एक और क्षेत्र में हमें सावधान रहने की ज़रूरत है—कलीसिया के सदस्यों के साथ कारोबार में उतरना। मैं यह नहीं कहता कि यह गलत है, परंतु मैं निश्चित रूप से कहूंगा कि इसमें खतरा है। यदि कुछ बिगड़ जाता है तो आप न केवल व्यवसाय में अपना पैसा खो बैठेंगे, बल्कि यह भी सम्भवना है कि कलीसिया के उन सदस्यों के साथ आपका सम्बंध बिगड़ जाए और परिणामस्वरूप आपकी सेवकाई / चर्च पर इसका असर पड़ेगा। अतः उत्तम बात यह है कि आप सावधान रहें, और यदि संदेह हो, तो उससे दूर रहें।

यदि मसीही सेवक होने के नाते, आपको लगता है कि परमेश्वर आपको कारोबार आरम्भ करने की अगुवाई देता है, जिसमें आप दानदाताओं का पैसा उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, स्कूल, कॉलेज / विश्वविद्यालय, कोई व्यवसायिक प्रशिक्षण संस्था जो सेवकाई से सम्बंधित नहीं है, तो उसे इसी रूप में पहचान दी जाए और, प्रबंधन और पैसों का व्यवहार कलीसिया या सेवकाई से अलग करें।

मेरे अपने व्यक्तिगत् अनुभव में, मैंने जनवरी 2001 में एक सॉफ्टवेयर कम्पनी शुरू की, और जनवरी 2001 में हमने ऑल पीपल्स चर्च शुरू किया, दोनों बैंगलोर में हैं। आरम्भ ही से, इन दो संस्थाओं का पैसा अलग रखा गया। कारोबार कलीसिया में आर्थिक योगदान दे सकता है, परंतु कलीसिया का कोई भी पैसा कारोबार में नहीं लगाया जा सकता।

परमेश्वर का भवन "व्यापार" के लिए नहीं है—"मंदिर के चोर" न बनें

मत्ती 21:12-14

12 यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर उन सबको, जो मन्दिर में लेन-देन कर रहे थे, निकाल दिया, और सर्राफों के पीढ़े और कबूतर बेचनेवालों की चौकियां उलट दी;
13 और उनसे कहा, "लिखा है, 'कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा'; परन्तु तुम उसे डाकुअकों की खोह बनाते हो।"
14 अन्धे और लंगड़े, मन्दिर में उसके पास आए, और उसने उन्हें चंगा किया।

मैं समझता हूं कि कलीसिया या सेवकाई एक संस्था है और उसके संचालन के लिए पैसों की ज़रूरत होती है। अतः, हम सबकुछ विनामूल्य नहीं दे सकते और इसलिए अधिकतर सेवकाइयां उनके डी.वी.डी., पुस्तकें,

उपदेश के रिकार्डिंग और अन्य संसाधनों को बेचते हैं। यह सबकुछ ठीक है, परंतु इन संसाधनों के निर्माण के लिए धन की आवश्यकता होती है। इसलिए इस कीमत को पूरा करने के लिए और कार्य के संचालन के लिए अतिरिक्त पैसा कमाना पूर्ण रूप से उचित है। परंतु, जब बातें इससे आगे बढ़ जाती हैं और संस्थाएं "धार्मिक कारोबार" और सब प्रकार की वस्तुओं को बेचकर "मसीही रिटेलिंग" के रूप में बड़ी धनराशि इकट्ठा करने लगते हैं और "दान सूची" का नाम देकर वस्तु के मूल्य से कई गुना अधिक पैसा कमाने लगते हैं, तब इसे गलत करार दिया जा सकता है! यह उन लोगों के समान है जो मंदिर में खरीदी कर रहे थे और बेच रहे थे। वे जो कुछ कर रहे थे, वह वैध था, उसमें चलन की लेनदेन हो रही थी, वे शहर के बाहर से आने वाले लोगों के लिए बलिदान के पक्षी और पशुओं को बेच रहे थे। यह सुविधाजनक था, ताकि जो लोग दूर की यात्रा करके आ रहे थे उन्हें अपने साथ अपनी भेंटें और बलिदानों को लेकर आने की ज़रूरत नहीं थी। परंतु मंदिर के इन कारोबारियों ने अपनी वस्तुओं को और सेवाओं को बड़े मुनाफे में बेचा, और आराधना करने वालों का गलत फायदा उठाया। इसीलिए प्रभु ने उन्हें चोर कहा! मैं सोचता हूं कि आज परमेश्वर के कुछ सेवकों द्वारा जो "व्यापार" किया जा रहा है, उसके प्रति प्रभु यीशु मसीह की क्या प्रतिक्रिया होगी! हम प्रभु के सच्चे सेवक बनें, "मंदिर के चोर" नहीं!

लालच से बचें, आप धीरे धीरे उसमें प्रवेश करते हैं

नीतिवचन 1:19
सब लालचियों की चाल ऐसी ही होती है, उनका प्राण लालच ही के कारण नाश हो जाता है।

गिनती 22:18
बिलाम ने बालाक के कर्मचारियों को उत्तर दिया, "चाहे बालाक अपने घर को सोने–चांदी से भरकर मुझे दे, तौभी मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर वा बढ़ाकर मानूं।

यहूदा 1:11
उन पर हाय! क्योंकि वे कैन की सी चाल चले, और मज़दूरी के लिए बिलाम के समान भष्ट हो गए हैं, और कोरह के समान विरोध करके नष्ट हुए हैं।

सामान्य तौर हम सभी अपने दिल में लालच रखकर शुरूवात नहीं करते। मसीही सेवकाई की प्रारम्भिक अवस्थाओं में हम में से अधिकतर लोग पूरी ईमानदारी के साथ, अपने इरादों की रक्षा करते हुए शुरूवात करते हैं, और जो भी छोटी भेंट हमें दी जाती है उसमें संतुष्ट रहते हैं, पैसों के मोह से अपने हृदयों की रक्षा करते हैं। परंतु जैसे जैसे समय बीतता जाता है, और सेवकाई बढ़ने लगती है, चारों ओर से दबाव बढ़ने लगता है और धीरे धीरे परमेश्वर के सेवकों के रूप में, हम अपनी "मासूमियत" खो बैठते हैं। जो कुछ हमें भेंट में दिया जाता है, उससे संतुष्ट न रहकर, हम बड़ी भेंट मांगने लगते हैं और उसकी अपेक्षा करने लगते हैं। पहले तो हम पैसों के विषय में चिंता नहीं करते थे, परंतु अब हम निरंतर यह विचार करते रहते हैं कि और पैसा कहां से आएगा। जो कुछ हमारे पास है उसमें हम पहले प्रसन्न थे, परंतु अब खर्चीली और मंहगी वस्तुएं पाना चाहते हैं। पहले तो बिलाम के समान यह संकल्प करते हैं कि सोना और चांदी हम पर असर नहीं करेगा, परंतु बाद में भूल में पड़कर मुनाफा कमाने के लिए लालच में पड़ जाते हैं। यह मन का परिवर्तन धीरे धीरे बड़ी सूक्ष्मता से होता है, हमें पता भी नहीं लगता कि हमने कब इसमें प्रवेश किया। इससे बचने का एकमात्र तरीका है, प्रतिदिन अपने हृदय को जांचना। लोभ से बचाने वाली सरल बातों को करें।

बीच बीच में, जब लोग मुझे भेंट देते हैं, विशेष करके जब मैं जानता हूं कि वह बहुत बड़ी रकम है, तो मैं सारा पैसा किसी परमेश्वर के जन को दे देता हूं जिससे उसे आशीष प्राप्त हो। कभी-कभी, जब लोग मेरे लिए भेंट ले आते हैं, तब मैं उसे लेने से इन्कार करता हूं और उनसे बिनती करता हूं कि वे सारा पैसा चर्च की भेंट में डालें। ऐसा नहीं है कि मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है। परंतु समय समय पर मैं ऐसा अपनी ही भलाई के लिए करता हूं, अपने हृदय की रक्षा करने हेतु। यदि मैं अपने हृदय में कोई गलत प्रवृत्ति, उद्देश्य, रवैय्या, या लगाव उत्पन्न होते हुए देखता हूं—चाहे पैसों के प्रति हो या किसी और बात के प्रति, तो मैं तुरंत परमेश्वर के सामने उसे कबूल करता हूं, मैं शुद्धता पाता हूं और खुद को स्मरण दिलाता हूं कि परमेश्वर का वचन क्या कहता है, और आवश्यकता हो तो मैं ऐसा कुछ करता हूं जो उस प्रवृत्ति के विपरीत है।

अपने ह्दय की रक्षा करें! *"अपने ह्दय की रक्षा करने के विषय में जागृत रह जीवन वहीं से आरम्भ होता है"* (नीतिवचन 4:23, द मैसेज बाइबिल।

अन्य सेवकाइयों को आर्थिक रूप से दान दें

2 कुरिन्थियों 9:6
परन्तु बात तो यह हैः जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।

सभोपदेशक 11:1
अपनी रोटी जल के ऊपर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर पाएग।

अपने ह्दय को शुद्ध और पैसों के मोह से मुक्त और उसके द्वारा नियंत्रित रखने का उत्तम तरीका है, अन्य लोगों को और अन्य स्थानीय कलीसियाओं और सेवकाइयों को उसे दान स्वरूप दें। अधिकतर समय, मसीही सेवकों और स्थानीय कलीसियाओं के रूप में, हम हमेशा "लेना" पसंद करते हैं, लोगों को देने के लिए निमंत्रण देने में व्यस्त रहते हैं। परंतु यदि पैसा केवल हमारी ओर बहता रहा, और हम झील बन जाएं, तो जल्द ही हम दूषित होने का खतरा मोल लेंगे और वह हर प्रकार की बुराइयों के उत्पन्न होने का स्थान बन जाएगा। इसलिए बेहतर तरीका है झील न बनते हुए नदी बनें। जिस प्रकार हमारी ओर धन का बहाव आता है, उसी तरह इस बहाव को बाहर निकलने दें। परमेश्वर के अन्य सेवकों को दें। आरम्भ ही से, हमने इस पर अमल करने की कोशिश की है। आज तक, हमारे पास अपनी ज़मीन या इमारत नहीं है, परंतु हमने कई कलीसियाओं में और सेवकाइयों में बीज बोकर उन्हें अपनी ज़मीन और जायदाद खरीदने में सहायता की है। हमने दूसरों को नई कलीसियाएं आरम्भ करने में मदद की है, कभी-कभी उसी स्थान में जहां पर हम भी सेवा कर रहे थे! हमने दूसरे लोगों के दर्शनों में सहायता की, या तो उनकी सेवकाइयों को आरम्भ करने में या जब वे अपनी यात्रा में आगे बढ़ रहे थे, तब उनकी सहायता करने के द्वारा। अर्थात्, हम ऐसा हर एक के लिए नहीं कर सकते, परंतु जहां तक परमेश्वर ने हमें आशीष दी है, हम देने की अपनी भूमिका निभाते हैं। और व्यक्तिगत् तौर पर, मैं अपने निजी पैसों में से बोता हूं। चर्च की

धनराशि से अन्य सेवकाई के लिए चेक लिखकर देना आसान होता है, क्योंकि वह मुझे व्यक्तिगत् रीति से प्रभावित नहीं करता। परंतु मैं व्यक्तिगत् तौर पर उदारता के साथ देना चाहता हूं और इसलिए मैं अपने व्यक्तिगत् पैसों में से लोगों के जीवनों में देता हूं।

स्त्रियां

क्योंकि बहुत लोग उस के द्वारा मारे पड़े हैं; उसके घात किए हुओं की एक बड़ी संख्या होगी।

(नीतिवचन 7:26)

अध्याय 10

10
स्त्रियां

यह अध्याय सेवकाई में कार्यरत् मसीही पुरुषों को सम्बोधित किया गया है। पैसों के साथ ही साथ, "स्त्रियां" भी हम मसीही सेवकों के लिए मुख्य चुनौती बनी हैं। हम अक्सर इस क्षेत्र में होने वाली दुर्घटनाओं के विषय में सुनते हैं और निश्चित तौर पर ऐसी कई दुर्घटनाएं हैं जिनके विषय में हमारे सुनने में नहीं आता। स्त्रियों के प्रति आकर्षण सबके साथ होता है चाहे वह बड़े शहर की बड़ी कलीसिया का पासबान हो या देहात का सीधा-सादा प्रचारक हो, हम सभी इस क्षेत्र में परीक्षा में पड़ जाते हैं। मैं अत्यंत साधारण पृष्ठभूमि के पासबानों से मिला हूं, जिनके पास जीवन में बहुत कुछ नहीं था, और कोई भी यह मानकर चलेगा कि उनके संघर्ष का प्रधान क्षेत्र पैसा और जैसे तैसे अपनी ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश करना होगा। मुझे यह देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ, कि जिन समस्याओं को लेकर वे आए और जिन समस्याओं के विषय में उन्होंने बताया, उसका सम्बंध स्त्रियों से और उनकी नैतिक असफलताओं और गलतियों से था जो उन्होंने स्त्रियों के मध्य सेवा करते समय की थी। इसलिए, संघर्ष के इस क्षेत्र और परीक्षा से कोई भी पुरुष नहीं बच सकता—धनी हो या निर्धन, शहरी हो या देहाती, अत्यंत प्रार्थनाशील हो, अभिषिक्त, सेवकाई में उसकी बुलाहट चाहे जो हो, मठवासी या ओसारे में रहनेवाला, इस क्षेत्र में हम में से कुछ लोगों ने असफलताओं का सामना किया है। हमें उठकर पुनर्स्थापन पाने की, आगे बढ़ते रहने की ज़रूरत है, और साथ ही साथ हमें दुगुने तौर पर सुरक्षित रहने की आवश्यकता है। यह अध्याय बताता है कि मसीही सेवकों के नाते हम इस क्षेत्र में कैसे विजयी हो सकते हैं।

दलीला की गोद में सिर रखकर मत सोईये

न्यायियों 16:19,20 (द मैसेज बाइबिल)

19 तब उसने उसको अपने घुटनों पर सुला रखा; और एक मनुष्य बुलवाकर उसके सिर की सातों लटें मुण्डवा डाली। और वह उसको दबाने लगी, और वह निर्बल हो गया।

[20] तब उसने कहा, “हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात में हैं!” तब वह चौंककर सोचने लगा, “मैं पहले की नाई बाहर जाकर झटकूंगा।” वह तो न जानता था कि यहोवा उसके पास से चला गया है।

शिमशोन को परमेश्वर द्वारा परमेश्वर के लोगों का अगुवा और छुड़ानेवाला बनने वाला बुलाया और अभिषेक किया गया था। परमेश्वर ने उसे इस तरह जीवन बिताना सिखाया था जिससे वह अपनी बुलाहट, अभिषेक, और परमेश्वर के वरदानों में चल सकता था। वह नासरी था। फिर भी स्त्रियों के लिए प्रेम उसके पतन का मुख्य कारण बना। अपनी इस कमज़ोरी में लिप्त रहने के कारण उसने समझौता किया और उसी बात को त्याग दिया जिसने उसे परमेश्वर की बुलाहट में चलने हेतु सामर्थ प्रदान की थी। जब वह दलीला की गोद में सिर रखकर सो रहा था, तब उसका बल निकलता चला गया। यह एक रात में नहीं हुआ। इसके लिए कुछ समय लगा, और धीरे धीरे, थोड़ा थोड़ा करके वह अपना बल खोता गया। शिमशोन जो कुछ था उसके रहस्य को जान लेने में दलीला सफल हो गई और उसने उसके बल के स्त्रोत को ही काट डाला। फिलिश्तियों द्वारा वास्तव में अंधा बनाए जाने से पहले ही, शिमशोन अंधा हो चुका था। स्त्रियों के प्रति उसकी आसक्ति ने उसे अंधा कर दिया था। उसने सोचा कि उसका बल हमेशा के लिए टिका रहेगा, वह जानता था कि जो उसे नहीं करना चाहिए, उसके साथ वह खिलवाड़ करता रहा और एक दिन, परमेश्वर उससे दूर हो गया।

अधिकतर नैतिक असफलताएं समय के साथ बढ़ती हुई कमज़ोरी के कारण आती हैं, कई मामलों में, इस ज्ञान के बिना कि ऐसा हो रहा है। यह धीरे धीरे उस फंदे में घसरते जाना है जो घातक हो सकता है। इसका आरम्भ छल या धोखे से होता है। शत्रु ऐसे विचारों को बो देता है जो बाहरी तौर पर हानिरहित दिखाई देते हैं, परंतु हम उन्हें अपनाने लगते हैं और उन पर कार्य करते हैं। स्त्रियों पर नज़र डालना, अश्लील चित्रों आदि को देखना, “बहनों” के साथ थोड़ी सी रंगरेलियां आदि। जल्द ही विचार और शत्रु के सुझाव मज़बूत होते जाते हैं और हम अपने मन में ऐसे विवाद या तर्क से हार जाते हैं जो हमें अत्यंत उचित लगने लगता है। हम “दलीला

की गोद में सिर रखकर सोने" लगते हैं। धीरे धीरे हमारे विचार, कल्पना और तर्कबुद्धि कैद कर लिए जाते हैं। हम इस सच्चाई के प्रति अंधे हो जाते हैं जिसे हम जानते थे और, शायद जिस सच्चाई का पक्ष हमने लिया और उसके विषय में प्रचार भी किया। और फिर एक जानलेवा हमला होता है और हम गिर जाते हैं।

सभोपदेशक 7:26
मैंने मृत्यु से भी अधिक दुःखदाई एक वस्तु पाई, अर्थात् वह स्त्री जिसका मन फन्दा और जाल है और जिसके हाथ हथकड़ियां हैं (जिस पुरुष से परमेश्वर प्रसन्न है वही उससे बचेगा, परंतु पापी उसका शिकार होगा)।

भजन संहिता 90:8
तू ने हमारे अधर्म के कामों को अपने सम्मुख, और हमारे छिपे हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रखा है।

सावधान छोटी आंखें कैसे देखती हैं

मत्ती 5:27-30
27 "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'व्यभिचार न करना।'
28 परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।
29 यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
30 यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।

नीतिवचन 6:25
उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर; वह तुझे अपने कटाक्ष से फंसाने न पाए;

सुंदर स्त्री की ओर देखना पाप नहीं है। हम स्त्री की ओर कैसे देखते हैं यह महत्वपूर्ण है। यदि हम अपनी आंखों में वासना के साथ उसकी ओर देखते हैं—उसे पाने की कामना करते हैं—तो हम पाप करते हैं। अक्सर "जो" हम देखते हैं, उसे हम रोक नहीं सकते। रास्ते से जाते हुए, हो सकता

है कि कोई सुंदर स्त्री वहां से जाए। या हमारी आंखें अकस्मात एक बड़े विज्ञापन बोर्ड पर पड़ती हैं जिसमें कम वस्त्र पहने हुई स्त्री का चित्र हो। हमने यह जानबूझकर नहीं देखा। परंतु, अगले पल हम क्या करते हैं, यह हमारे हाथ में है। हम फौरन अपनी आंखें उस बिल बोर्ड से हटाने का चुनाव करते हैं या हम उसकी ओर देखते रहते हैं और हमारे मन को वासनामय विचारों में भटकने देते हैं। यह सच है कि सुंदरता की प्रशंसा करना और सराहना करना पाप नहीं है। परंतु, सुंदरता की सराहना और प्रशंसा करने के बहाने, अधिकतर लोग वासना में पड़ जाते हैं—पाने की अभिलाषा—फिर पाप में पड़ जाते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि जिस क्षण हमारी भावनाएं उत्तेजित होती प्रतीत होती हैं या हमारे विचार गलत दिशा में जाने लगते हैं, उसी क्षण हमें अपनी भावनाओं और विचारों पर काबू करना चाहिए।

खुद को परमेश्वर के वचन का स्मरण दिलाएं। अपने हृदय से उस विचार को डांटकर भगाएं। उसी क्षण अपनी भावनाओं से बातें करें और हृदय से उन पर काबू करें।

यहां पर कुछ वचन दिए गए हैं जिनसे हमें शस्त्रबद्ध होना हैः

अय्यूब 31:1
"मैंने अपनी आंखों के साथ विषय वाचा बान्धी है, फिर मैं किसी कुँवारी पर कैसे आंखें लगाऊं?

भजन संहिता 101:3
मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊंगा। मैं कुंमार्ग पर चलनेवालों के काम से घिन रखता हूं; ऐसे काम में मैं न लगूंगा।

1 थिस्सलुनीकियों 5:22
सब प्रकार की बुराई से बचे रहो।

जवान स्त्रियों के साथ पूर्ण पवित्रता से बहनों के समान व्यवहार करें

1 तीमुथियुस 5:1,2
[1] किसी बूढ़े को न डांट, पर उसे पिता जानकर समझा दे, और जवानों को भाई जानकर; [2] बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर; और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहन जानकर समझा दे।

तीमुथियुस इफिसुस की कलीसिया का बिशप और अगुवा है, और पौलुस तीमुथियुस को लिखी गई अपनी पत्रियों में स्थानीय कलीसिया के पासबान के नाते कार्य करते समय ध्यान रखने योग्य कई महत्वपूर्ण बातों को सम्बोधित करता है। पौलुस तीमुथियुस को एक महत्वपूर्ण आज्ञा देता है, बूढ़ी महिलाओं के साथ मां के रूप में और युवा स्त्रियों के साथ पूर्ण शुद्धता से बहनों के रूप में व्यवहार करें। यह अटल है कि पासबान या परमेश्वर के सेवक के रूप में, आपको मण्डली की युवा स्त्रियों से वार्तालाप करना होगा। आपको उनकी ज़रूरतों के लिए प्रार्थना करना होगा, उनकी समस्याओं को सुनें, उन्हें प्रोत्साहन दें, उन्हें परामर्श आदि दें। परंतु, हमें अपने हृदयों की रक्षा करने की और अपने इरादों, विचारों, और भावनाओं को इस प्रक्रिया में शुद्ध बनाए रखने की ज़रूरत है।

खुद के साथ ईमानदार रहें। यदि आपको महसूस होता है कि आपके पास आने वाली जवान स्त्री किसी गलत उद्देश्यों से या आपके प्रति लगाव के कारण ऐसा कर रही है—तो एक कदम पीछे ले लें। यदि आपको महसूस होता है कि आपके पास सहायता के लिए आनेवाली युवा स्त्री के लिए आपकी अपनी भावनाएं उत्तेजित हो रही हैं, तो पीछे हट जाएं। हमेशा खुद की और उनकी रक्षा करना और सम्भालना बेहतर है। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में कहा है, खुद के बचाव की रणनीति अपनाएं। अपने नैतिक बाड़ों को सम्भालकर रखें और उन्हें लांघने से इन्कार करें, ताकि आप अपनी रक्षा कर सकें। गलत विचारों और भावनाओं में पड़ने से अपने हृदय और मन की रक्षा करें।

दूर से योगदान (इम्पार्ट) दें, शिक्षा का काम स्त्रियां स्त्रियों के लिए करें

तीतुस 2:3-5

3 इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चाल-चलन पवित्र लोगों-सा हो; दोष लगानेवाली और पियक्कड़ नहीं, पर अच्छी बातें सिखानेवाली हों

4 ताकि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें;

5 और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली और अपने-अपने पति के आधीन रहनेवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए।

कई पासबान और परमेश्वर के जन भावनात्मक रूप से स्त्रियों से जुड़ जाते हैं उनमें से एक कारण है, यह विचार कि उन्हें "मण्डली" या सेवकाई की स्त्रियों को शिक्षा देना है—उपदेशक। सेवकाई की जवान स्त्रियों को शिक्षा देना और उनकी आत्मिक रीति से परवरिश करना एक उत्तम कार्य प्रतीत होता है, और यह मकसद शुद्ध जान पड़ता है। परंतु, यदि इस क्षेत्र में "बुद्धिमानी" से कार्य न किया जाए, तो यह अत्यंत हानिकारक साबित होता है। पुरुष होने के नाते, सलाह प्रक्रिया में जब आप युवा स्त्रियों के साथ बहुत अधिक समय बिताने लगते हैं, तब बड़ी सम्भावना होती है कि आपका भावनात्मक लगाव बढ़ने लगे। ये भावनाएं जल्द ही आपके तर्क को कमज़ोर कर देती हैं, इच्छाशक्ति को निर्बल बनाती हैं और मन को अंधा कर देती है। परिणामस्वरूप, दो व्यक्ति यौन पाप में गिर जाते हैं।

पौलुस ने तीतुस को यह कहते हुए लिखा कि, "बूढ़ी स्त्रियों को" अच्छी बातों के सिखाने वाले बनना चाहिए और उन्हें जवान स्त्रियों को सिखाना चाहिए। इस प्रकार हमें आज्ञा दी गई है कि जवान स्त्रियों को शिक्षा देने का कार्य बुजुर्ग महिलाओं के हाथ में छोड़ दिया जाए। पुरुष होने के नाते, हम दूर से योगदान दे सकते हैं। मार्गदर्शन करें, सिखाएं, प्रोत्साहन दें, और अवसर तैयार करें, परंतु एक स्वस्थ अंतर बनाए रखें। स्त्रियों को शिक्षा देने का काम स्त्रियों पर छोड़ दें।

महिला सेवकों की सही रीति से अगुवाई करें

अपनी स्थानीय कलीसिया या सेवकाई के पासबान या अगुवे होने के नाते, परमेश्वर स्त्रियों को खड़ा करेगा जो आपकी अगुवाई में, सेवकाई के विभिन्न पहलूओं में सेवा करेगी और अगुवाई प्रदान करेगी। उदाहरण के तौर पर, आपकी बच्चों की कलीसिया का पासबान स्त्री हो सकती है। आपका आराधना पासबान स्त्री हो सकती है। स्त्री आपकी सेवकाई आदि के लिए प्रार्थना और मध्यस्थी की अगुवाई करती हो। परमेश्वर ने आपकी अधीनता में इन स्त्रियों का परिपोषण किया है, और उन्हें तैयार किया है। जब वे अपने वरदानों, बुलाहट, और अभिषेक के साथ अगुवों के रूप में उदय होंगे, तब आपको उन्हें मान्यता देने, आदर देने, उसी तरह सही रीति से उनकी अगुवाई करने की ज़रूरत होगी।

यदि महिला सेवक विवाहित है, तो स्मरण रखें कि उसका पति उसका सिर है, और आप उसके सिर नहीं हैं। अतः पासबान होने के नाते, अपनी सीमाओं को जानें और उन क्षेत्रों में प्रवेश करने का प्रयास न करें जो उसके पति के कार्यक्षेत्र में आते हैं। उसकी सेवकाई के क्षेत्र की जहां बात आती है, तब आप उसे निर्देश और मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं, परंतु अन्य सभी क्षेत्रों में उसका पति उसके लिए ज़िम्मेदार है। जब पासबान इस क्षेत्र में सावधान नहीं रहते और ऐसे कामों को करने लगते हैं, और उन बातों में दखलअंदाजी देने लगते हैं जहां पर पति को मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए, वहां स्त्रियां उलझन में पड़ जाती हैं कि वह किसकी सुने—अपने पति की या पासबान की। बाइबल अत्यंत स्पष्ट रूप से कहती है: *"हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो जैसे प्रभु के"* (इफिसियों 5:22)।

यदि महिला पासबान या आपकी सेवकाई में कार्यरत् महिला अगुवा विवाहित नहीं है, तब जैसा कि पहले कहा गया है, एक अंतर रखते हुए अगुवाई और मार्गदर्शन प्रदान करें। अपनी भावनाओं की रक्षा करें। भावनात्मक सहायता और संगति के लिए अन्य स्त्रियों को उसके साथ खड़े रहने दें।

उनके साथ बराबरी का व्यवहार करें, परंतु सौम्यता बरतें

गलातियों 3:28

अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

हमें स्मरण रखना है कि परमेश्वर के वरदान, अनुग्रह, आशीषें और सशक्तिकरण की सेवा पुरुष और स्त्रियों दोनों को समान रूप से दी गई हैं। परमेश्वर अपने अभिषेक, वरदानों और अनुग्रह को देते समय स्त्रियों से अधिक पुरुषों को पसंद नहीं करता। पुरुष और स्त्रियां दोनों एक साथ जीवन के अनुग्रह के वारिस हैं (1 पतरस 3:7)। इसलिए सेवा करने, अगुवाई करने, ज़िम्मेदारी का वहन करने आदि में अवसर प्रदान करते समय हमें स्थानीय कलीसिया और सेवकाई में पुरुषों और स्त्रियों दोनों के साथ समान बर्ताव करने की ज़रूरत है। हम उनसे अपेक्षा करते हैं कि वे आचरण और उत्तरदायित्व के समान मानकों का पालन करें। परंतु, यह सब करते हुए,

हम यह भी समझते हैं कि स्त्रियों के साथ व्यवहार करते समय, उनके बल और निर्बलताओं को समझते हुए उनके साथ हमें सौम्यता का बर्ताव करने की ज़रूरत है।

उनकी कमज़ोरी आपका पतन है—दूर रहें

स्त्री और पुरुष दोनों की भावनात्मक ज़रूरतें होती हैं। उदाहरण के तौर पर, यहां पर कुछ आम भावनात्मक ज़रूरतें हैंः स्नेह, सराहना, प्रशंसा, वार्तालाप, साथ या संगत, और भरोसा। प्रत्येक व्यक्ति इनमें से कुछ को दूसरी बातों से अधिक महत्वपूर्ण समझता है। जब ये भावनात्मक ज़रूरतें पूरी नहीं होती, तब अक्सर वे हमारी कमज़ोरी के क्षेत्र बन जाती हैं। तब हम किसी की ओर "आकर्षित" हो जाते हैं, जो किसी तरह से इनमें से एक या अधिक ज़रूरतों को "पूरा" करता हुआ नज़र आता है।

विवाहित पुरुष होने के नाते, जो पासबान या मसीही अगुवा है, यहां पर कुछ बातें हैं जो आपको अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ अन्य स्त्रियों के लिए नहीं करना चाहिए। इन बातों को उस स्त्री के पति या अन्य स्त्रियों के लिए छोड़ दें।

- स्त्री के रंगरूप के लिए उसकी प्रशंसा न करें। उसके पति या अन्य स्त्रियों को ऐसा करने दें।
- स्त्री की उसके वस्त्र आभूषणों के लिए प्रशंसा न करें। उसके पति या अन्य स्त्रियों को ऐसा करने दें।
- किसी भी स्त्री के साथ ज्यादा बातचीत में न लगें। उसके पति या अन्य स्त्रियों को ऐसा करने दें।
- किसी भी महिला का निकट साथी या भावनात्मक सहारा न बनें। उसके पति या अन्य स्त्रियों को ऐसा करने दें।

बात यहां पर यह है कि ऐसी भूमिका में कभी कदम न रखें जहां पर आप दूसरे स्त्री की भावनात्मक ज़रूरतों को पूरा करने का प्रयास करें। उसके पति या अन्य स्त्रियों को ऐसा करने दें। पिछले वर्षों में मैंने जानबूझकर स्त्रियों से एक स्वस्थ दूरी बनाई है, यद्यपि कभी-कभी लोग शिकायत करते हैं कि मैं "अमित्र" या मैंने अपने बीच में एक अदृश्य दीवार खड़ी की है।

ऐसा नहीं है कि मेरे मन में सच्चा प्रेम या तरस नहीं है। परंतु मैं अपने जीवन की बुलाहट के विषय में जानता हूं और परवाह करता हूं और इस बात का ध्यान रखता हूं कि मुझे कहां पर रेखा खींचनी चाहिए।

व्यक्तिगत् आत्म-सुरक्षा की योजना बनाएं

नीतिवचन 2:10,11

10 क्योंकि बुध्दि तो तेरे हृदय में प्रवेश करेगी, और ज्ञान तुझे सुख देनेवाला लगेगा;
11 विवेक तुझे सुरक्षित रखेगा; और समझ तेरी रक्षक होगी;

आप स्त्रियों के बीच कैसी सेवकाई करेंगे इस विषय में आपको खुद के लिए कुछ निर्देश स्थापित करने की ज़रूरत है, ताकि आप खुद को और उनको बचा सकें। मैं स्वयं निम्नलिखित बातों को करता हूं:

- किसी महिला के लिए प्रार्थना करते समय, यदि मुझे सिर पर हाथ रखने की ज़रूरत महसूस होती है, तो मैं केवल उनके सिर पर हाथ रखता हूं। यदि शरीर के और किसी भाग पर रखने की ज़रूरत होती है, तो मैं उनसे कहता हूं कि वे स्वयं अपना हाथ रखें या अन्य महिला से ऐसा करने के लिए कहता हूं।
- यदि मुझे किसी महिला को सलाह देने की ज़रूरत होती है, तो मैं उससे एक या दो बार मिलता हूं और यदि और परामर्श की ज़रूरत होगी, तो मैं उसे अन्य स्त्री के पास भेजता हूं जो उसकी सेवा करने में सक्षम हो।
- यदि मुझे चर्चा के लिए व्यक्तिगत् रीति से किसी स्त्री से मिलने की ज़रूरत होती है, तो मैं हमेशा ऐसे परिवेश में करता हूं, जहां पर नज़दीक ही अन्य लोग भी उपस्थित होते हैं और उन्हें देखा जा सकता है।
- मैं एक स्वस्थ अंतर बनाए रखता हूं और किसी महिला के साथ "सहज" और "मित्रतापूर्ण" वार्तालाप में ज्यादा हिस्सा नहीं लेता।
- मैं युवा महिलाओं को आलिंगन नहीं देता और केवल एक औपचारिक हस्तांदोलन करता हूं। मैं केवल परिवार की स्त्रियों को और बुजुर्ग स्त्रियों को जिन्हें मैं मां के समान स्नेह करता हूं, आलिंगन देता हूं।

- मैं दूसरी स्त्री (परिवार के सदस्य को छोड़) के साथ, अकेले कार में यथासंभव यात्रा नहीं करता। यदि कोई वास्तविक ज़रूरत या आपातकालीन स्थिति रही हो तो ही मैं ऐसा करता हूं।

मैं यह दावा नहीं करता हूं कि मेरी आत्म-सुरक्षा की योजना पूर्ण रूप से "बुलेट प्रूफ" (प्रतिरोधक) है। मैं मानता हूं कि मैंने सूचिबद्ध की हुई कुछ बातों से कुछ लोग सहमत नहीं होंगे। मैं इन्हें हर एक के लिए स्वर्णनियम के रूप में प्रस्तुत नहीं कर रहा हूं। मेरी सुरक्षा के लिए जिन बातों की मुझे ज़रूरत है, उन्हें मैं करता हूं, और जितनी उत्तम रीति से मैं करता हूं, और केवल इन बातों को आपके सामने रखना चाहता हूं ताकि अपने जीवन और सेवकाई में आप जिन बातों को उपयोगी समझते हैं, उन्हें अपना सकते हैं।

विदाई पवित्र चुम्बन!

रोमियों 16:16
आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। तुमको मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।

1 कुरिन्थियों 16:20
सब भाइयों का तुमको नमस्कार। पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो।

2 कुरिन्थियों 13:12
एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो।

1 थिस्सलुनीकियों 5:26
सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो।

"उन प्रारम्भिक दिनों में चुम्बन शांति, मित्रता, भाईचारे के प्रेम का प्रतीक था, और सभी लोगों में प्रचलित था, और मसीही लोग अपने लोगों की मण्डलियों में, उसी तरह बीच बीच में होने वाली उनकी सभाओं में उसका उपयोग करते थे। अंत में, इसे हटाकर रख दिया गया, इसलिए नहीं कि उसका दुरूपयोग हुआ, परंतु कलीसिया की संख्या बढ़ रही थी, और ऐसा करना सम्भव नहीं था। कुछ देशों में, मित्रता का चुम्बन आज भी आम है; और ऐसे देशों में उसका शायद ही गलत उपयोग होता है, न ही

यह बुराई के लिए प्रलोभन है, क्योंकि उसका प्रचलन है और आम बात है। प्रायः सभी मसीही मण्डलियों में उसका स्थान हस्तांदोलन ने ले लिया है" (ॲडम क्लार्क्स कॉमेन्ट्री ऑन द बाइबल, ॲडम क्लार्क्स, एल.ए.डी.एफ., एस.ए., 1715-1832)।

मैं मानता हूं कि कुछ कलीसियाओं में एक दूसरे का चुम्बन लेकर अभिवादन करने की प्रथा को जारी रखने के लिए पवित्र शास्त्र के वचनों का उपयोग किया जाता है। मैं अभिवादन करने के लिए दूसरों की प्रथा या पसंदगी की आलोचना न करते हुए यह बताना चाहता हूं कि हम अपनी कलीसियाओं में ऐसा नहीं करते, क्योंकि इसमें दुर्व्यवहार और भावनात्मक सम्बंधों की सम्भावना है। मेरा व्यक्तिगत् दृढ़ विश्वास यह है कि आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियों का अभिवादन करने का उत्तम तरीका है हाथ मिलाना। हम "पवित्र चुम्बन" की प्रथा का पालन नहीं करते।

बड़ी विजय या विपत्ति के क्षणों में दुगुनी सुरक्षा में रहें

1 कुरिन्थियों 10:12
इसलिए जो समझता है, "मै स्थिर हूं," वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।

1 पतरस 5:8
सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए।

पुरुष होने के नाते, हमें अपनी कमज़ोरी के क्षणों के विषय में सावधान रहने की ज़रूरत है। पुरुषों के नाते, हम अपनी भारी विजय और भयानक विपत्ति के समय अत्यंत कमज़ोर पड़ जाते हैं। एक बड़ी महासभा के पूरे होने के बाद या सामर्थपूर्ण आराधना या फलवंत सेवकाई के बाद, हम थोड़े समय के लिए अपने सुरक्षा कवच हटाकर रख देते हैं। हम थोड़ा "विश्राम" करना चाहते हैं। हम राहत पाना चाहते हैं। हमारे पास आनन्द, उत्सव और सफलता का एहसास होता है। इन क्षणों में हम अत्यंत कमज़ोर रहते हैं क्योंकि हम अपने सुरक्षा हथियार नीचे डाल देते हैं। उसी तरह, जब हम संकटमय समयों से "गुज़रते" हैं जहां पर हमारी भावनाएं थक जाती हैं, जब हम तनावग्रस्त, भावनात्मक रूप से घायल, जख्मी और त्रस्त होते हैं,

तब हम अत्यंत निर्बल होते हैं। ऐसे समय में हमें समझदारी, प्रेम, प्रोत्साहन, और सहारे की ज़रूरत होती है और हम हर कहीं जा सकते हैं। हमारी तर्क और निर्णय शक्ति काम नहीं देती। हम गलत चुनाव करते हैं और गलत निर्णय लेते हैं।

जब शत्रु हमारे कमज़ोर क्षणों को पहचान लेता है, जब हम अत्यंत निर्बल अवस्था में रहते हैं, तब शत्रु आक्रमण करता है, अपनी चाल चलता है। भारी सफलता के क्षणों में, आप खुद से कहते हैं, "मैंने परमेश्वर के राज्य के लिए बहुत परिश्रम किया है, इसलिए थोड़ा बहुत चैनविलास में खो जाना उचित ही है।" "इसलिए यदि शत्रु ऐसी जवान स्त्री को लाता है, जो आपकी सफलता से "विस्मित" होती है, आपकी सफलता की प्रशंसा करती है, आपके अहंकार को पुचकारती है, तो आप आसानी से गिर जाते हैं। इसी तरह, जब आप बड़ी विपत्ति और पीड़ा से होकर गुज़रते हैं, और शत्रु आपके सामने ऐसी युवा स्त्री को लाकर खड़ा करता है, जो आपके साथ सहानुभूति रखती है, आपकी बातों को सुनती है, सांत्वना के और प्रोत्साहन के शब्दों को कहती है, तब उस क्षण भावनात्मक जाल में फंस जाना बहुत आसान होता है। अतः, भारी विजय या संकट के समय में, यह पहचानें कि ये ऐसे क्षण हो सकते हैं जब आप अत्यंत कमज़ोर पड़ जाएं। दुगुनी सुरक्षा अपनाएं। उन क्षणों में अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय लेने से बचें। सबकुछ "शांत होने" तक रुक जाएं। विश्राम कर लेने तक रुक जाएं। ऐसे लोगों के आसपास रहें जो आपको अच्छी तरह से जानते हैं और आप पर भरोसा कर सकते हैं।

अपने स्नेह की रक्षा करें

नीतिवचन 4:23
सब से अधिक अपने मन की रक्षा (बचाव) **कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।**

फिलिप्पियों 3:3
क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते।

आप अत्यंत धर्मी, वरदान प्राप्त, और अति अभिषिक्त व्यक्ति हो सकते हैं। परंतु आप चाहे जो हैं या जैसे हैं, आपका शरीर अत्यंत निर्बल और

कमज़ोर है। आप अपने शरीर में भरोसा नहीं रख सकते। इसलिए कभी अपने शरीर पर भरोसा न करें। शरीर शैतान के कामों के लिए विश्वासयोग्य रहता है, शैतान के आसपास न रहते हुए भी। याकूब हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि *"प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खींचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है"* (याकूब 1:14)। हमारी शारीरिक अभिलाषाएं ही हमें खींच लेती हैं, हमारी इच्छाशक्ति को निर्बल कर देती हैं और हमें परीक्षा में डालती है। शैतान का काम मात्र हमारी शारीरिक अभिलाषाओं को उत्तेजित करना होता है।

परमेश्वर स्त्रियों के द्वारा और उनके जीवनों में जो कुछ कर रहा है उसे पसंद करते हुए उसका आदर और सराहना करते हुए, पुरुष होने के नाते हमें अपनी कमज़ोरियों को स्मरण रखना है। इस क्षेत्र में हम खुद पर भरोसा नहीं कर सकते। हमारा एकमात्र विकल्प हमारे स्नेह के विषय में जागृत रहना और खुद के विषय में जागृत रहना है। परीक्षाएं आएंगी, परंतु हमें निरंतर जागते रहना है और प्रार्थना करते रहना है कि हम इस क्षेत्र में परीक्षा में न पड़ जाएं।

"प्राणिक" सेतुओं को पहचानें और उन्हें नष्ट करें

2 कुरिन्थियों 2:11

कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।

2 कुरिन्थियों 10:4-6

4 क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।

5 इसलिए हम कल्पनाओं का और हर एक ऊंची बात का जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह की आज्ञाकारी बना देते हैं।

6 और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञापालन पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार के आज्ञा-उल्लंघन को दण्डित करें।

शत्रु के आक्रमण का मुख्य क्षेत्र है मन। वह ऐसे विचारों, कल्पनाओं और परिकल्पनाओं को बोता है, जो अनैतिक और परमेश्वर के ज्ञान के विरूद्ध होते हैं। यदि हम शरीर की अभिलाषाओं और अनैतिक विचारों के वश में हो

जाते हैं, तो हम अपने जीवन में परमेश्वर की आशीषों को विफल कर देते हैं। शत्रु जानता है कि स्त्रियां हम पुरुषों के लिए निर्बलता का स्थान हैं। शत्रु कोशिश करेगा और आपके मन में स्त्रियों के प्रति "प्राणिक" (भावनात्मक) आकर्षण, लगाव और सम्बंधों (सेतुओं) को लाएगा। शत्रु की युक्तियां क्या है, इसके विषय में सचेत रहें, मूर्खता के साथ आगे न बढ़ें। गंभीर रहें। जागृत रहें। यदि आप शत्रु को कुछ करने का प्रयास करते हुए देखते हैं, तो परमेश्वर द्वारा दिए गए हथियारों का उपयोग कर इन बातों को पहचानें और नष्ट करें। अपने हृदय से उसका सामना करें। परमेश्वर के वचन के साथ अपने हृदय और मन की रक्षा करें। इस क्षेत्र में आपके विरोध में आने वाले शत्रु के किसी भी कार्य को डांटें और गिरा दें। विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ें। अनंत जीवन को थाम लें और उसे जाने न दें। इसमें बहुत बड़ा खतरा है। विश्वास की लड़ाई लड़ना उचित है। जीतने के लिए लड़ें!

ख्याति

तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?

(यूहन्ना 5:44)

अध्याय 11

11
ख्याति

इस अध्याय में, हम बड़ा नाम, ख्याति और लोकप्रियता के विषय में चर्चा करेंगे—यह एक और बड़ा क्षेत्र है जिसमें हममें से अधिकतर मसीही सेवक संघर्ष करते हैं। जब हमें मान्यता, प्रशंसा मिलती है, जब हमारी सराहना की जाती है और हमें न्यौता मिलता है, तब हमें "अच्छा लगता है।" हममें से कुछ लोगों को जब मनुष्यों की प्रशंसा और मान्यता नहीं मिलती जो हम सोचते हैं कि हमें मिलनी चाहिए, तब हम "निराश" महसूस करते हैं या हमें लगता है कि परमेश्वर का अनुग्रह हम पर नहीं है। हमारे प्रभु ने लोग उसके विषय में क्या सोचते हैं और क्या कहते हैं इसके परे जीवन बिताया। उसने कहा, *"मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता"* (यूहन्ना 5:41)।

हम कहीं पर मार्ग में यीशु पर ध्यान देने से भटक गए हैं और मसीहत में आज सस्ते व्यापार, तरक्की और विज्ञापन अभियान से नज़दीकी बना ली है। हम अपने स्वामी और प्रेरितों के इतने विपरीत बन गए हैं जिन्होंने बड़े नाम या बदनामी की परवाह नहीं की। आज, हमारे पास ऐसे प्रचारक हैं जो अपनी सेवकाई को बढ़ावा देने के लिए राजनीतिज्ञों या मंच पर विख्यात लोगों के सामने "मित्रता" का प्रदर्शन कर रहे हैं। सेवकाई के वेब-साइट, समाचार पत्र, मासिक, "परमेश्वर के जन" के चित्रों के साथ निर्लज्जतापूर्ण ढ़ंग से प्रकाशित किए जाते हैं। सब कुछ उसके विषय में, उसके अभिषेक, उसके बड़े नाम, उसके विश्वव्यापी सेवकाई के विषय में है। परमेश्वर के जन के बड़े बड़े पोस्टर और कट-आउट क्रूसेड के मैदानों पर, स्थानों और गिरजाघर की इमारतों पर भी लगाए जाते हैं। सोच-विचार न करने वाले विश्वासी ऐसे परमेश्वर के जन का अनुसरण करते हैं और एक छोटे देवता के रूप में, मसीही विश्वास के "अभिनेता" के रूप में उसकी आराधना करते हैं। आप सोचेंगे कि इन सारी बातों में यीशु कहां है। प्रेरित पौलुस ने कहा, *"क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह*

प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं" (2 कुरिन्थियों 4:5)। अपने स्वामी का उदाहरण अपनाने के मार्ग पर लौट आएं। उसका और प्रेरितों का अनुसरण करें।

अच्छा नाम महत्वपूर्ण है, प्रसिद्धि नहीं

नीतिवचन 22:1
बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चान्दी से दुसरों की प्रसन्नता उत्तम है।

सभोपदेशक 7:1
अच्छा नाम अनमोल इत्र से और मृत्यु का दिन जन्म के दिन से उत्तम है।

अच्छा नाम होना महत्वपूर्ण है। अच्छा नाम उस जीवन के कारण आता है जो व्यक्ति जीता है। बड़ी ख्याति सस्ते व्यापार और मुफ्त सामाजिक संचार तकनीकों से हासिल की जा सकती है। अच्छा नाम केवल सुसंगत चरित्र से आता है। अच्छा नाम आपको दिया जाता है। ख्याति का पीछा आप खुद के लिए करते हैं। ख्याति अदृश्य हो जाती है। अच्छा नाम बना रहता है *"धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं"* (नीतिवचन 10:7)।

हमारा लक्ष्य मसीह की समानता का अनुसरण करना और यीशु के समान जीवन बिताना होना चाहिए। इस प्रक्रिया में, हमें उपहास, झूठे आरोपों और सताव का सामना करना पड़ सकता है। हमें बदनामी, अपमान और उपहास से नहीं डरना है। यीशु ने हमें चेतावनी दी है, *"जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को और क्या न कहेंगे"* (मत्ती 10:25बी)। समय के साथ, जो लोग हमारे जीवन को देखेंगे वे हम में यीशु को देखेंगे। अच्छा नाम अपने समय में आएगा।

चमकता हुआ सितारा बनें, उल्का नहीं—आज यहां है, और कल मिट गए और भूला दिए गए।

मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले न बनें

गलातियों 1:10
यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता।

हमें हमारे अन्दर एक बात को तय करना है, और यह तब करना उत्तम है जब हम अपनी सेवकाई आरंभ करते हैं, कि हमारी एक मात्र इच्छा परमेश्वर को प्रसन्न करना हो। हम स्वर्ग से प्रशंसा पाने के लिए जीते हैं, न कि मनुष्यों की स्तुति। यदि इस बात को हम अपने मनों में समझ लेंगे, तो हम ऐसे सन्देशों का प्रचार करने हेतु संघर्ष नहीं करेंगे जो लोगों के कानों की खुजली मिटाते हैं। हम दूसरों को प्रभावित करने हेतु प्रचार नहीं करेंगे परंतु प्रतिदान देने हेतु करेंगे। हम ऐसे संदेश नहीं देंगे जो लोगों को हमारा अनुसरण करने हेतु विवश करते हैं, परंतु ऐसे संदेश जो लोगों को यीशु का अनुसरण करने हेतु लोगों को प्रेरित करेंगे। यदि लोग हमें छोड़ कर जाते हैं, हमारी आलोचना करते हैं, हमारी कलीसिया को छोड़ कर जाते हैं या हमारी आर्थिक सहायता करना बंद कर देते हैं, तो हम आसानी से आहत नहीं होंगे। यदि कोई हमारी सराहना नहीं करता, हमारी आर्थिक सहायता नहीं करता या हमारी प्रशंसा नहीं करता, तो हम दुखी नहीं होंगे। इनमें से कोई भी बात हम पर गंभीर रूप से असर नहीं करेगी, क्योंकि हमारा हृदय प्रभु को प्रसन्न करने पर लगा हुआ है, मनुष्यों को प्रसन्न करने पर नहीं।

मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले न होने का अर्थ यह नहीं है कि हम लोगों की नहीं सुनेंगे, विशेष तौर पर उन लोगों की जो हमारी परवाह करते हैं, जब वे हमें सुधारते हैं या हमारी गलतियां दिखाते हैं। हम निश्चित रूप से उनके फीडबेक पर, सुधार और सच्ची आलोचना पर ध्यान देंगे। और इनके द्वारा खुद में सुधार लाएंगे। हम इसे इस तरह से ग्रहण करेंगे कि प्रभु हममें सुधार रहा है।

खुद की तरक्की में न लगे रहें, परमेश्वर को बढ़ौतरी देने दें

नीतिवचन 25:27

बहुत मधु खाना अच्छा नहीं, परन्तु कठिन बातों की पूछपाछ महिमा का कारण होता है।

1 कुरिन्थियों 3:6,7

6 मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।

7 इसलिए न तो लगानेवाला कुछ है और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है।

भजन संहिता 127:1

यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा। यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे, तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा।

आत्मसंयम का दूसरा उपादान जिसका परमेश्वर के सेवक होने के नाते हमें अभ्यास करना है, वह है खुद की तरक्की पर कभी ध्यान न दें। खुद को बढ़ावा न दें। अपनी सेवकाई बढ़ाने का प्रयास न करें। "और बड़ा नाम" "और बड़ी ख्याति" या "ओर मान्यता" पाने की चाह से प्रेरित होकर कुछ न करें। खुद से पूछे, "मैं ऐसा क्यों कर रहा हूं?" खुद को एक सच्चा उत्तर दें। यदि यह मेरी महिमा के लिए, एक महान अभिषिक्त सेवक के रूप में खुद को बढ़ावा देने आदि के लिए हैं, तो **रुक** जाएं, ऐसा न करें।

अपने ह्रदय में यह उद्देश्य रखें कि आपको केवल वह उन्नति और बढ़ती मिलेगी जो परमेश्वर आपके लिए ले आता है। प्रभु को घर बनाने दें (सेवकाई, कलीसिया)। बढ़ौतरी जो कुछ परमेश्वर आपमें और आपके द्वारा कर रहा है, आप खुद को बढ़ावा न दें। जब आप अपनी सभाओं या कॉन्फ्रन्सेस की घोषणा करते हैं, तो शुद्ध इरादे से करें—केवल लोगों को उस घटना की जानकारी देने के लिए और खुद को बढ़ावा देने के लिए नहीं। जो कुछ आप अपनी सेवकाई में करते हैं, उसमें आपका उद्देश्य शुद्ध हो। जीवनों को आशीषित करने हेतु वह करें और लोकप्रिय बनने हेतु नहीं।

लोकप्रियता फलदायकता का लक्षण नहीं है

प्रकाशितवाक्य 3:1

"सरदीस की कलीसिया के दूत को यह लिखः "जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएं और सात तारे हैं, यह कहता है कि मैं तेरे कामों को जानता हूं: कि तू जीवित तो कहलाता है, परंतु है मरा हुआ।

ट्विटर पर हमारे कितने चाहने वाले या फॉलोअर्स हैं इसका सचमुच कोई महत्व नहीं है। इनमें से कोई भी बात स्वर्ग में हमारी महिमा का दर्शक नहीं है। हमारे संदेशों के लिए हमें पसंद "लाईक" कितने मिले हैं इसका कोई महत्व नहीं है। वास्तविक प्रश्न है क्या हमने सत्य का प्रचार करके यीशु मसीह को महिमा दी? परमेश्वर ने हमारे संदेश को क्या दर्जा

दिया? हमारे विषय में परमेश्वर की राय हमारी मसीही जनप्रियता की दर के बिल्कुल विपरीत हो सकती है। मसीही विश्व में हमारा नाम होगा कि हम जीवित हैं, परंतु हमें "मरा हुआ!" कहा जा सकता है। अतः लोकप्रिय होने का अर्थ यह नहीं है कि हम परमेश्वर के राज्य के लिए उपयोगी या फलदायक हैं। संभावना है कि ऐसे कई होंगे जिन्होंने एक भी पुस्तक नहीं लिखी, वे कभी पुस्तक विक्रेताओं की सूची में नहीं होंगे, कभी मसीही टी. वी. पर नहीं आए हों, अपने शहर से बाहर कभी न गए होंगे—और फिर इन लोगों को स्वर्ग में पुरस्कार मिलेंगे जिससे आज के दिनों के कई ख्यातनाम मसीही लोगों को उनसे बहुत दूर खड़ा रहना होगा।

सच्चाई यह है कि हम अपनी लोकप्रियता की निर्देशिका को परमेश्वर के समक्ष कैसे जीवन बिता रहे हैं इसके दर्शक के रूप में कभी न देखें। हमें निरंतर खुद से यह सवाल पूछते रहना चाहिए, "क्या हम पिता की इच्छा पूरी कर रहे हैं?"

लोग आपके विषय में क्या सोचते हैं इससे खुद को हटाकर रखें।

2 कुरिन्थियों 6:4,8,9

4 परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से,

8 आदर और निरादर से, दुर्नाम और सुनाम से। यद्यपि भरमानेवालों जैसे मालूम होते हैं तौभी सच्चे हैं;

9 अनजानों के सदृश्य हैं, तौभी प्रसिद्ध हैं; मरते हुओं के समान हैं और देखो जीवित हैं; मार खानेवालों के सदृश्य हैं परन्तु प्राण से मारे नहीं जाते;"

परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हमें एक गुण का विकास करना है—लोग हमारे विषय में भला या बुरा जो भी कहते हैं, उसका हम पर असर न पड़ने दें। कुछ लोग हमें आदर देंगे। और कुछ लोग हमारा अनादर करेंगे। कुछ लोग हमारे विषय में अच्छी खबर देंगे। और कुछ लोग होंगे जो हमारे बारे में बुरी खबर देंगे। परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हमें इस बात को ध्यान में रखना है कि हम वास्तव में कौन हैं और व्यक्तिगत तौर पर, हम परमेश्वर के सामने सचमुच कहां खड़े हैं।

जब लोग आपकी प्रशंसा करते हैं, आपको आदर-सम्मान देते हैं, आपके विषय में बड़ी बड़ी बातें बोलते हैं, तो उन बातों के कारण घमंड न होने दें। घमंड से अपने हृदय की रक्षा करें। जब लोग आपको अनादर करते हैं, आपकी बुराई करते हैं, आपके विषय में भला-बुरा कहते हैं—उसे अपने दिल पर न लें। हम न तो घमंड से साथ प्रचार कर सकते हैं और न ही पीड़ा के साथ। लोग आपके विषय में जो कुछ कहते हैं, उससे आपको खुद को दूर करना सीखना है।

परमेश्वर के सामने आपका कद मनुष्यों के सामने आपके कद से अधिक महत्वपूर्ण है

अंत में, आप परमेश्वर के सामने जो हैं, वह आप मनुष्य के सामने जो हैं उससे अधिक महत्वपूर्ण है। परमेश्वर के सामने आपका जो कद है, वह मनुष्य के सामने आपका जो कद है, उससे बड़ा है। लाखों लोग आपसे प्रेम करें, इससे बेहतर "प्रभु की दृष्टि में अत्यंत प्रिय जन" के रूप में आदर पाना है। यहां पृथ्वी पर लाखों लोगों का आदर पाने के बजाय, ऐसा जन बनना बेहतर है जिसके लिए प्रभु उठकर खड़ा हो। लाखों लोगों की प्रशंसा और वाहवाही से बेहतर, "शाबास, भले और विश्वासयोग्य दास" इन शब्दों के साथ स्वर्ग में स्वागत किया जाना बेहतर है।

यदि मनुष्यों के सामने हमारा कद, पृथ्वी पर मनुष्यों द्वारा हमें आदर और मान्यता प्रदान करता है, तो ठीक है। हम इससे प्रभावित नहीं होते, और न ही हम इसके लिए जी रहे हैं। हमारे हृदय हमेशा इस बात पर केन्द्रित रहेंगे कि हम परमेश्वर के सामने कौन हैं। यही महत्व रखता है।

लोगों को सिखाएं कि वे आपकी "प्रतिमा" न बनाएं, आपको "बढ़ावा" न दें

2 कुरिन्थियों 4:7

परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।

जब से हमने अपनी सेवकाई आरंभ की, तब से हमने "सामान्य" बने रहने की कोशिश की और परमेश्वर के सेवक होने के कारण हमने अपने चारों ओर एक "वातावरण" बनाने की कोशिश नहीं की जैसा कई लोग करते हैं। हम लोगों को अपने पास आने देते हैं, हमारी मंडली के लोग भी यह देखते हैं कि हम सामान्य मनुष्य हैं, केवल मिट्टी के बरतन जिनके द्वारा परमेश्वर कार्य कर रहा है। हमारे साथ कुछ भी "अति विशेष" नहीं है। सब कुछ परमेश्वर के वरदान, अनुग्रह और अभिषेक के कारण है, हममें कुछ भी नहीं। हम ऐसे बने रहने के लिए परिश्रम करते हैं। हम जानबूझकर अपनी मीडिया टीम को और सेवकाई में शामिल अन्य लोगों से कहते हैं कि वे विज्ञापन सामग्री पर हमारे चित्र या नाम प्रकाशित न करें। हम जानबूझकर अपनी सेवकाई टीम से कहते हैं कि वे लोगों का ध्यान हमसे दूर रखें, ताकि लोग हमारी ओर आकर्षित न हों।

यदि हम सावधान नहीं रहे, तो हमारे मासिक, टीव्ही. कार्यक्रम, सभाएं, कॉन्फ्रन्सेस, इमारतें "हमसे भर जाएंगी" जिससे लोग यीशु मसीह के पीछे चलने के बजाय, अपने मन में हमारी प्रतिमा बना लें। हमारी कलीसिया/ सेवकाइयों में जो लोग काम करते हैं वे हमारे मासिकों, टीव्ही. कार्यक्रमों को हमारी तस्वीरों से न भर दें जिससे व्यक्तिगत तौर पर हमें बढ़ावा मिले। हमारी विज्ञापन सामग्री इस तरह से बनाई जाए जो लोगों को प्रभु की ओर, उसके वचन, उसके आत्मा की ओर संकेत करती हो और हमारी ओर लोगों को आकर्षित न करने पाए।

आप चाहे कितने ही "बड़े" क्यों न हो जाएं, हमेशा समतल भूमि पर चलें

फिलिप्पियों 2:5-7

5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो;

6 जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।

7 वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

हम मसीही विश्व में प्रसिद्धी और ख्याति की कितनी ही ऊंचाई पर क्यों न चढ़ जाएं, मसीही अगुवों के रूप में हम कितने ही सामर्थी क्यों न बन जाएं, हम कितना ही प्रभाव हासिल क्यों न कर लें, हमें हमेशा "समतल भूमि" पर चलना चाहिए। हमें अपने कदम ज़मीन पर रखना चाहिए। हमारे प्रभु के समान बनें जिसने खुद को शून्य बना दिया, और मनुष्यों में से बनने के लिए नीचे पृथ्वी पर आया। यही मनोवृत्ति हमारे हृदय और मनों में हो।

हमेशा सादगी बरतें। हमेशा ऐसे रहें जिससे लोग आपके पास आ सकें। हमेशा विनम्र बने रहें। हमेशा इस बात को याद रखें कि आप मात्र मिट्टी के बरतन हैं।

जितना अधिक मुझे दिया गया है, उतना अधिक मुझे उत्तरदायी बनना है

लूका 12:47,48

47 वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा।
48 परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा, इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत मांगेंगे।

परमेश्वर के राज्य के विषय में एक सरल, परंतु गहरा सत्य है। परमेश्वर के राज्य में, जितना ज्यादा हमें दिया जाता है, उतना ही ज्यादा हमसे मांगा जाएगा। जब अधिक दिया जाता है, तब उत्तरदायित्व का स्तर बढ़ जाता है। बढ़ते हुए कद के साथ ज़िम्मेदारी भी बढ़ जाती है। बढ़ौत्तरी के साथ उत्तरदायित्व का बड़ा स्तर आ जाता है। इसका अर्थ यह है कि जब परमेश्वर मुझमें और मेरे द्वारा कार्य करता है, तब जिस तत्परता के साथ मैं कार्य करता हूं, उस तत्परता में बढ़ौत्तरी होनी चाहिए। सामान्य तौर पर, जैसे जैसे कार्य बढ़ते जाता है, और उसमें उन्नति होती है, वैसे लोग सुस्त, लापरवाह हो जाते हैं, वे छोटी छोटी बातों पर ध्यान देना छोड़ देते हैं। फिर यह उनके पतन का कारण बना जाता है। हमें कभी यह नहीं भूलना है कि जितना अधिक हमें दिया गया है, उतना अधिक उत्तरदायी हमें बनना चाहिए। परमेश्वर के राज्य में हमसे यही अपेक्षा की जाती है।

जितना ऊंचा वह मुझे ले जाता है, उतना ही नीचे मुझे उतरना है

1 पतरस 5:6

इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

उत्कर्ष या उन्नति तब आती है, जब हम खुद को दीन और नम्र बनाते हैं, इसका अर्थ यह है कि जब कभी परमेश्वर हमें नये स्तर पर बढ़ाता है, तब हमें नम्रता के नये स्तर की ओर आगे बढ़ना चाहिए। तभी वह हमें आगे और ऊंचे स्तर की ओर ले जाएगा। अतः जितनी बार परमेश्वर हमें ऊंचा उठाता है और आदर के नये स्तर की ओर ले जाता है, तब समय आ गया है कि हम थोड़ा नीचे उतर जाएं। हम खुद को परमेश्वर के आगे और मनुष्यों के आगे दीन बनाएं।

जितनी कम मेरी ख्याति हो, उतना ही बेहतर है

ख्याति, मान्यता, प्रशंसा और सराहना की हर अभिलाषा को मार दें। यदि वह प्राप्त होती है, तो ठीक है। यदि नहीं मिलती, तो आप किसी भी रीति से प्रभावित न हों। जब परमेश्वर आपको तरक्की प्रदान करता है, तब खुद को सुरक्षित रखने की यहां एक महत्वपूर्ण कुंजी है। जितनी बार परमेश्वर आपको बढ़ौत्तरी, मान्यता, और उन्नति प्रदान करता है, उतनी बार एक कदम नीचे उतर जाएं और खुद को परमेश्वर और मनुष्य के सामने दीन बनाएं। जितनी बार परमेश्वर आपको एक पायदान ऊपर उठाता है, आप एक पायदान नीचे उतर जाएं। जितना ऊंचा परमेश्वर आपको ले जाता है, उतना ही नीचे चलने का चुनाव आप करें। परमेश्वर आपको जितना दृष्यमान बनाता है, उतने अधिक विवेकी बनने का चुनाव करें। परमेश्वर आपके जीवन में जितनी अधिक मान्यता लाता है, उतना अधिक आप उसमें छिपते जाएं। मैंने यह मकसद बना रखा है कि मैं मनुष्यों से आदर पाने की खोज नहीं करूंगा। मेरी एकमात्र इच्छा उसके हृदय को प्रसन्न करना होगी। परमेश्वर पृथ्वी पर मेरे जीवन में चाहे जो सम्मान भेजे, वह ठीक है। मैं जानूंगा कि यह उसने मेरे लिए किया और मैंने स्वयं प्रसिद्धी या बड़े नाम का पीछा नहीं किया।

"ईश्वर ग्रन्थी" से सावधान रहें

यशायाह 14:12-14

12 "हे भोर के चमकनेवाले तारे, तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है?
13 तू मन में कहता तो था, 'मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर बिराजूंगा,
14 मैं मेघों से भी ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा"

कहीं पर, जैसे जैसे हम परमेश्वर के जन (स्त्री और पुरुष) के रूप में उदय होते हैं और बढ़ने लगते हैं, धीरे धीरे अत्यंत सुक्ष्म रीति से और अनजाने में एक "ईश्वर ग्रंथी" धीरे से प्रवेश करने लगती है, बड़ी सुक्ष्मता से हम खुद को वचन से ऊपर जिसका हम प्रचार करते हैं, उन मानकों के ऊपर जिन्हें परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए निर्धारित किया है, रखने लगते हैं। धीरे से हम परमेश्वर के वचन के व्यक्तिगत उल्लंघन का बहाना बनाने लगते हैं, क्योंकि हम खुद को वचन से अधिक देखने लगते हैं। हम खुद को खुद का "ईश्वर" बनाते हैं। हम केवल परमेश्वर के उत्तरदायी हैं, यह कह कर हम किसी के प्रति जवाबदेही नहीं रहते। जब हम इस अवस्था में पहुंच जाते हैं, तब परमेश्वर हमारे विवेक को छोड़ देता है, और इसलिए अब हम किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं रहते, यद्यपि हम यह सोचते हैं कि हम केवल "परमेश्वर" के प्रति उत्तरदायी हैं! हमने खुद को अपना ईश्वर बना लिया है। हम शैतान के समान उसी दण्ड का सामना करेंगे।

हमारी निरंतर सुरक्षा विनम्रता में चलने में है। *"मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो"* (इफिसियों 5:21)। यदि मैं ऐसे स्थान में हूं, जहां पर मैं दूसरों के अधीन हो सकता हूं, तो मैं जानता हूं कि मैं खुद को "ईश्वर-मनोग्रन्थी" से दूर रख रहा हूं। हमेशा दीनता की आत्मा में, सच्ची विन्रमता की आत्मा में चलें। हमेशा इस तरह चलें जहां पर परमेश्वर उन लोगों को भी आपके जीवन में बोलने के लिए इस्तेमाल कर सकता है जो आपके "नीचे" हैं, जिनकी आप अगुवाई करते हैं।

समापन

परमेश्वर की बुलाहट और मसीही जीवन छोटी बात नहीं है। परमेश्वर ने हमें जो कार्य करने के लिए बुलाया है, उसे पूरा करते समय हमें ईश्वरीय समझ के साथ चलना है। फिर भी, हमारा भरोसा हमारे बल या योग्यता में नहीं है। हमारा भरोसा पूर्ण रूप से परमेश्वर में है:

यहूदा 1:24,25
24 अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है,
25 उस एकमात्र परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा और गौरव और पराक्रम और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानयुग रहे। आमीन

जब हम उसके महिमामय गौरव के सन्मुख खड़े रहेंगे और उससे कहेंगे, "शाबास!" तो हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण ह्रदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने ह्रदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर परिवारिक कलीसिया,** एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौता के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारी वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों	**व्यवहार सम्बंधी विकार**
व्यक्तिगत समायोजन	**व्यक्तित्व विकार**
संबंधपरक चुनौतियां	**मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले	**तनाव / आघात**
कार्य संबंधित मुद्दे	**शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
परिवार /दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक	**आत्मिक समस्याएं**
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी	**ज़िंदगी की सीख**

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिएः

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church

Account Number: 50200068829058

IFSC Code: HDFC0004367

Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

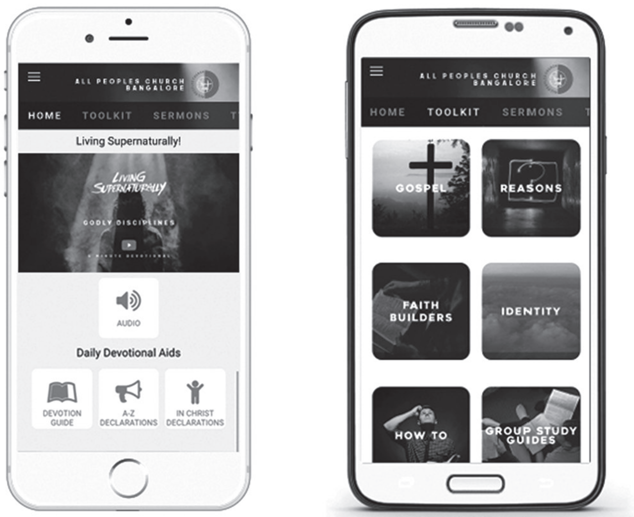

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+5:30) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं कि गति से सीखने के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: **apcbiblecollege.org**

सदाचार का सम्बंध नैतिक नियम, मूल्य और सिद्धांतों से है। आचरण के नियम की चर्चा की जा सकती है, उसके दस्तावेज तैयार किए जा सकते हैं, परंतु सदाचार के मानक अपने आपमें उनके पालन की सामर्थ प्रदान नहीं करते। नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों का पालन करने की सामर्थ प्रत्येक व्यक्ति के अंदर से आती है। नैतिक रूप से सीधे चलने की हमारी सामर्थ स्वयं प्रभु पर हमारी निर्भरता से और उस अनुग्रह से जो वह प्रदान करता है, आती है। कोई भी आचरण का नियम, कोई सदाचार की शिक्षा, कोई बुद्धिमानीपूर्ण सलाह या निर्देश मसीह सेवक की सहायता नहीं कर सकते जो परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत जीवन को गंभीर नहीं समझता।

आज कलीसिया में, जहां पर हम में से कई परमेश्वर की सामर्थ के प्रकाशन, अभिषेक, चिन्ह और चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और चंगाइयों, भविष्यद्वाणी और अलौकिक की ओर बढ़ रहे हैं–वहीं जीवन और आचरण के ईश्वरीय मानदंड़ों की बुलाहट लोकप्रिय नहीं है। प्रचारक और सेवक पुलपिट से हटकर जो जीवन बिताते हैं, उसके बजाय, एक घंटे में पुलपिट के पीछे वे कितना प्रगट कर सकते हैं, इसके आधार पर उन्हें खोजा जाता है।

हम मसीह के सेवकों के लिए अब समय आ गया है कि हम सेवकाई के उन मानकों को स्थापित करें जो भक्ति और भयसहित (हैं)....जिससे परमेश्वर को प्रसन्नता हो (इब्रानियों 12:28)। यह पुस्तक इसी विषय पर चर्चा करती है–मसीही सेवा में कार्यरत स्त्री और पुरुषों के लिए आचार संबंधी मूल्य, ईश्वरीय मानदंड और व्यवहारिक ज्ञान का सरल संकलन। इस पुस्तक को पढ़कर आपका जीवन और सेवकाई समृद्ध होंगे।

यह पुस्तक बाइबल कॉलेज, सेमिनार, बाइबल प्रशिक्षण केन्द्र और मसीही सेवकाई में स्त्री और पुरुषों को प्रशिक्षित करने वाले हर कार्यक्रम के लिए उपयुक्त सामग्री है। यह पुस्तक पास्टर्स कॉन्फ्रेन्स और सेमिनारों में सिखाने के लिए उपयुक्त हस्तपुस्तिका साबित होगी। अपनी सेवा टीमों को सिखाते और प्रशिक्षण देते समय पासबान और अन्य मसीही अगुवों के लिए यह उपयोगी पाएंगे।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org